वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 242

कुण्डलपुर महोत्सव स्मारिका

—: शुभाशीर्वाद :—

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

—: संयोजन :—

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ स्वर्णिम वर्षायोग के अन्तर्गत कुण्डलपुर महोत्सव एवं पूज्य गणिनी माताजी के 70वें जन्मजयंती के अवसर पर प्रकाशित

—: संपादक :—

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर

—प्रकाशक—

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति

—अन्तर्गत—

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

1100 प्रतियाँ	शरदपूर्णिमा 10 अक्टूबर 2003	मूल्य 30/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

विषय-सूची

सम्पादकीय (महावीर जन्मभूमि में प्रथम बार कुण्डलपुर महोत्सव) —5
- ♦ कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा): कल और आज —8
- ♦ अशोक कुमार सिन्हा (योजना अधिकारी)

अहिंसा के अवतार थे भगवान महावीर —10
- ♦ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

मंगल आशीर्वाद —11

श्रीयुत जार्ज फर्नांडीज (रक्षामंत्री-भारत सरकार) का वक्तव्य —15
- ♦ प्रस्तुति-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

श्री नितीश कुमार (रेलमंत्री-भारत सरकार) का वक्तव्य —16
- ♦ प्रस्तुति-ब्र. कु. अलका जैन (संघस्थ)

शुभकामना संदेश —17

लेख—आगम के दर्पण में कुण्डलपुर —28
- ♦ गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती

बजी कुण्डलपुर में बधाई —31
- ♦ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ वंदना —38
- ♦ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तीर्थंकर महावीर स्वामी जीवन परिचय (दिगम्बर एवं श्वेतामबर परम्परानुसार) —39
- ♦ पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

भगवान महावीर के पंचकल्याणकों से पावन है बिहार की धरती —43
- ♦ कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

पावापुरी जलमंदिर ही भगवान महावीर की निर्वाणभूमि है —46
- ♦ प्रस्तुति-गणिनी ज्ञानमती

भगवान महावीर सचित्र जीवनदर्शन —49
- ♦ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

राजगृही तीर्थ का महत्व —65
- ♦ गणिनी ज्ञानमती

महावीर-जन्मभूमि प्रकरण (कुण्डलपुर या वैशालीः एक अनुचिंतन) —66
- ♦ प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद

भगवान महावीर का जीवन और जन्मभूमि कुण्डलपुर —71
- ♦ पं. शिवचरण लाल जैन, मैनपुरी

कुण्डलपुर की पूज्यता स्वतः सिद्ध है —75
- ♦ डॉ. अभयप्रकाश जैन, ग्वालियर

दया के देवता का अवतरण —76
♦ स्व. पं. सुमेरचंद जैन दिवाकर, सिवनी
सदियों से यह जन्मभूमि हमारी श्रद्धा का केन्द्र है —76
♦ उमेश जैन, फिरोजाबाद
तीर्थंकर जन्मभूमियाँ संस्कृति की उद्गम स्थल हैं —78
♦ ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन
वैशाली की राजकुमारी एवं कुण्डलपुर की राजवधू महारानी त्रिशला का परिचय —80
♦ ब्र. कु. बीना जैन(संघस्थ)
नंद्यावर्त महल की पावनता —82
♦ ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)
कुण्डलपुर में फरवरी 2003 में सम्पन्न हुई पंचकल्याणक प्रतिष्ठा (झलकियां) —84
♦ ब्र. कु. स्वाति जैन (संघस्थ)
राष्ट्रपति डा. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम ने प्राप्त किया आशीर्वाद माताजी का —87
♦ ब्र. कु. आस्था जैन (संघस्थ)
कुण्डलपुर का ऐतिहासिक स्वरूप —88
♦ डॉ. ब्रजेश कुमार 'वर्मा' (नालंदा)
श्री हर्मन जैकोबी द्वारा लिखा गया महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर विषयक पत्र —90
पावापुरी जलमंदिर ही भगवान महावीर की निर्वाणभूमि है
♦ प्रस्तुति-गणिनी ज्ञानमती
कुण्डलपुर महोत्सव की प्रासंगिकता —92
♦ ब्र. कु. स्वाति जैन (संघस्थ)
महोत्सव की सम्प्रेरिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय —94
♦ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती
महोत्सव की मार्गदर्शिका प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का परिचय —99
♦ ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)
महोत्सव के निर्देशक पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर महाराज का परिचय —101
♦ ब्र. कु. चन्द्रिका जैन (संघस्थ)
महोत्सव समिति के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन का परिचय —102
♦ श्री राकेश कुमार जैन, मेरठ
महोत्सव की आयोजन संस्था का परिचय —103
♦ श्री कैलाशचंद जैन (कोषाध्यक्ष)
कुण्डपुर के नंद्यावर्त महल परिसर में निर्मित हो रहे मंदिरों का संक्षिप्त परिचय —105
♦ अनिल कुमार जैन (महामंत्री)
महावीर जन्मभूमि से प्रवर्तित भगवान महावीर ज्योति रथ की संक्षिप्त रूपरेखा —108
♦ विजय कुमार जैन (संयोजक) कानपुर
वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों की 16 जन्मभूमियाँ —109
♦ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर —110
प्रयाग-इलाहाबाद —111
मांगीतुंगी (महाराष्ट्र) —112

सम्पादकीय..... महावीर जन्मभूमि में प्रथम बार

कुण्डलपुर महोत्सव

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

प्रिय पाठकों! कुण्डलपुर महोत्सव की इस स्मारिका को प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। वास्तव में महापुरुषों की प्रेरणा से प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है-''कुण्डलपुर महोत्सव''।

भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक वर्ष की प्रमुख विशेषता रही- महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) के जीर्णोद्धार एवं विकास की प्रमुखता। वास्तव में यह बड़े सौभाग्य का विषय है कि तीर्थ विकास सम्प्रेरिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस वर्ष को कुण्डलपुर विकास के रूप में चिरस्थायी बना दिया।

♦ 20 फरवरी 2002 को पूज्य माताजी ने राजधानी दिल्ली-इण्डिया गेट से कुण्डलपुर के लिए संघ सहित मंगल विहार प्रारंभ किया।

♦ प्रयाग में नवनिर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली पर वर्ष 2002 का चातुर्मास सम्पन्न हुआ, जिसके मध्य 15 अगस्त 2002 को कुण्डलपुर (नालंदा) में नवनिर्माण हेतु भूमि का क्रय किया गया।

♦ पूज्य माताजी (ससंघ) 29 दिसम्बर 2002 को कुण्डलपुर पहुँची, जहाँ पर मंगल पदार्पण की इस बेला में क्रय की गयी भूमि पर सर्वप्रथम भगवान महावीर मंदिर का शिलान्यास सम्पन्न किया गया।

♦ 14 जनवरी 2003 को आदिब्रह्मा भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इस भूमि पर विराजमान की गयीं।

♦ निर्माण के प्राथमिक चरण में 72 फुट ऊँचे प्रस्तावित विशाल भगवान महावीर मंदिर का निर्माणकार्य प्रारंभ किया गया, इस अर्धनिर्मित मंदिर में लगभग 25 फुट की ऊँचाई पर 7 फरवरी 2003 को भगवान महावीर की श्वेत पाषाण वाली अतिशयकारी अवगाहना प्रमाण (7 हाथ उत्तुंग) खड्गासन प्रतिमा विराजमान की गयीं।

♦ 7 से 12 फरवरी 2003 तक विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ, जिसमें पूरे देश की श्रद्धालु जनता के साथ-साथ देश के रक्षामंत्री-श्री जार्ज फर्नांडीज, रेलवे मंत्री-श्री नितीश कुमार, बिहार के राज्यपाल-श्री विनोदचंद पाण्डेय, स्थानीय विधायक-श्री श्रवण कुमार इत्यादि सहित अनेक गणमान्य अधिकारीवर्ग, श्रेष्ठीवर्ग एवं विद्वत्वर्ग ने भाग लिया। दिल्ली, कलकत्ता इत्यादि के उच्च कोटि के कलाकारों द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतिदिन प्रस्तुत किये गये। क्षेत्रीय जनता ने भी पूरे उत्साह के साथ प्रतिदिन इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

12 फरवरी को 1008 कलशों से महाकुंभ मस्तकाभिषेक का विशाल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जो कि सदियों के बाद कुण्डलपुर की धरती पर एक विशाल महोत्सव था। इस अवसर पर एक विशाल चित्र प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिसमें भगवान महावीर एवं उनके पूर्ववर्ती तीर्थंकरों के जीवन से संबंधित चित्रों का प्रदर्शन किया गया, साथ ही सदाचार, शाकाहार, व्यसनमुक्ति इत्यादि की शिक्षा प्रदान करने वाले चित्रों के समावेश से आस-पास की तमाम जनता ने जीवन निर्माण की महान शिक्षा प्राप्त की।

भगवान ऋषभदेव, भगवान महावीर, त्रिकाल चौबीसी के 72 तीर्थंकर भगवन्तों एवं अन्य जिनबिंबों की प्राण-प्रतिष्ठा अत्यंत भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुयी।

♦ नवविकसित तीर्थ को ''नंद्यावर्त महल'' का नाम प्रदान किया गया क्योंकि भगवान महावीर ने जिस महल में राजा सिद्धार्थ एवं महारानी त्रिशला से जन्म लिया था उसका नाम 'नंद्यावर्त' था। इसीलिए **प्रमुख दर्शनीय स्थल** के रूप में इस परिसर में **नंद्यावर्त महल** का निर्माण भी किया जा रहा है। **प्रमुख वंदनीय स्थल-भगवान महावीर मंदिर** के साथ-साथ तीर्थ परिसर में भगवान ऋषभदेव मंदिर, नवग्रह शांति मंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर का निर्माण कार्य भी वर्तमान में द्रुतगति से सम्पन्न हो रहा है। इस विकास कार्य के पीछे पूज्य ज्ञानमती माताजी की यही भावना है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि का विकसित रूप संसार के सामने आ सके और दीर्घकाल तक जनमानस को आध्यात्मिकता, पौराणिकता एवं जीवन निर्माण की शिक्षाएं प्राप्त होती रहें।

♦ पंचकल्याणक महोत्सव की सम्पन्नता एवं तीर्थ निर्माण की श्रृंखला के साथ-सथ यहाँ पर पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में पिछले कुछ वर्षों से अवरूद्ध हुई **''जन्मभूमि में महावीर जयंती महोत्सव''** परम्परा का पुनः शुभारंभ हुआ-15 अप्रैल 2003, महावीर जयंती के पावन अवसर पर,जिसमें नालंदा जिले के जिलाधिकारी श्री हुकुमसिंह मीणा सहित अनेकानेक क्षेत्रीय लोगों ने अत्यंत उत्साहपूर्वक भाग लिया।

♦ महावीर जयंती के इस अवसर पर एक अन्य विशेष सौगात प्राप्त हुई-**'महावीर ज्योति रथ'** के रूप में, जिसमें धातु से निर्मित नंद्यावर्त महल का स्वर्णिम मॉडल अवस्थित किया गया है। इस ज्योति का प्रवर्तन जन्मभूमि कुण्डलपुर से महावीर जयंती के दिन किया गया, जिसका वर्तमान में देश के विविध प्रान्तों में धर्मप्रभावना पूर्वक भ्रमण चल रहा है। जहाँ भी यह रथ पहुँचता है वहाँ-वहाँ भगवान महावीर के सर्वोदयसिद्धान्तों से परिचित होने के साथ-साथ जनमानस जन्मभूमि कुण्डलपुर की पवित्रता को भी आत्मसात करलेता है।

♦ देश के प्रथम नागरिक राष्ट्रपति-डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपनी बिहार यात्रा के मध्य 30 मई 2003 को पूज्य माताजी से भगवान महावीर की निर्वाणभूमि-पावापुरी (नालंदा) में मंगल आशीर्वाद प्राप्त करके स्वयं को धन्य माना एवं पूज्य माताजी की प्रभावपूर्ण वाणी से जन्मभूमि कुण्डलपुर की पवित्रता एवं महानता का संक्षिप्त दिग्दर्शन भी प्राप्त किया।

♦ जन्मभूमि समिति के विशेष आग्रह पर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी एवं संघ की चातुर्मास स्थापना इस नवनिर्मित तीर्थ पर 12 जुलाई 2003 को सम्पन्न हुई, जिससे तीर्थ की प्रगति में चार चाँद लगना सुनिश्चित है। समय-समय पर विविध धार्मिक आयोजनों-इन्द्रध्वज विधान, नवग्रह शांति मंदिर के 9 जिनभगवन्तों की लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, रक्षाबंधन पर्व, राजगृही (नालंदा) में श्रावण शुक्ला एकम् को भगवान महावीर की 'प्रथम दिव्यध्वनि दिवस' के उपलक्ष्य में 13 से 15 जुलाई तक त्रिदिवसीय कार्यक्रम एवं 14 जुलाई-वीरशासन जयंती के प्रमुख दिन विपुलाचल पर्वत पर विराजमान भगवन्तों का महामस्तकाभिषेक, राजगृही-पावापुरी-नवोदय विद्यालय राजगृही में तीर्थंकर भगवन्तों की तीन प्रतिमाओं का विराजमान होना, दशलक्षण पर्व में कल्पद्रुम महामण्डल विधान की आयोजना इत्यादि कार्यक्रमों के द्वारा देश के सुदूरवर्ती प्रांतों के श्रद्धालुभक्तों ने एवं स्थानीय जनता ने विशेष धर्मलाभ प्राप्त किया है एवं करेंगे। इन धार्मिक आयोजनों में सहस्रों मंत्रोच्चार से जहाँ पर्यावरण की विशुद्धि होती है वहीं मानसिक शान्ति की प्राप्ति भी अवश्यंभावी है।

जनकल्याण के निमित्त नेत्र शिविर, नैतिक शिक्षा शिविर इत्यादि के आयोजन निकट भविष्य में सम्पन्न होने वाले हैं।

♦ नालंदा जिले में स्थित कुण्डलपुर, राजगृही, पावापुरी रूप तीर्थ त्रिवेणी के संगम में स्नान करके संघ के सभी सदस्य एवं आगन्तुक यात्रीगण स्वयं को सौभाग्यशाली एवं गौरवान्वित तो अनुभव करते ही हैं, साथ ही पूज्य माताजी के महान उपकार को भी स्वीकार करते हैं।

कुण्डलपुर विकास के प्रारम्भिक वर्ष की सबसे बड़ी सौगात के रूप में कुण्डलपुर महोत्सव का आयोजन–

♦ यह समस्त बिहार प्रांत के निवासियों का सौभाग्य है कि वर्तमान जैन समाज की सबसे प्राचीन दीक्षित सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के **स्वर्णिम चातुर्मास** का सुयोग इस धरा को प्राप्त हुआ है क्योंकि यह चातुर्मास सामान्य न होकर पूज्य माताजी के त्यागमयी जीवन का 51वाँ चातुर्मास है। इस स्वर्णिम चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी के 70वें जन्मजयंती समारोह के अवसर पर 8 से 10 अक्टूबर 2003 तक त्रिदिवसीय ''कुण्डलपुर महोत्सव'' के रूप में मनाने का निश्चय किया गया है, ताकि 2600 वर्ष प्राचीन जन्मभूमि से जन-जन परिचित हो सके एवं जिस भूमि से सत्य एवं अहिंसा के शाश्वत सिद्धान्त विश्व को प्राप्त हुए थे, वह पुनः विश्व के मानस पटल पर अंकित हो जाये। साथ ही पूज्य माताजी के त्यागमयी जीवन की स्वर्णिम गाथा को जानने के साथ-साथ जनमानस को शाकाहार, व्यसन मुक्ति, सत्संग जैसे स्वर्णिम कण भी सहज ही प्राप्त हो जायें।

कुण्डलपुर महोत्सव की विशेषता यह भी है कि यह महोत्सव पर्यटन विभाग-बिहार सरकार एवं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हो रहा है। भगवान महावीर की अहिंसा की ओर जन-साधारण को आकृष्ट करने के साधन के रूप में बिहार सरकार के पर्यटन विभाग, पुरातत्व विभाग, संस्कृति विभाग, पर्यटन विकास निगम, ललितकला अकादमी, संगीत नाटक अकादमी, स्थानीय जिला प्रशासन एवं कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति का यह समन्वित प्रयास निश्चित रूप से इस स्वर्णिम चातुर्मास में स्वर्णिम इतिहास के पौधे का पुनः अंकुरारोपण करेगा, जो निकट भविष्य में विशाल वटवृक्ष बनकर आने वाले युगों-युगों तक के लिए महावीर जन्मभूमि की यशगाथा को चिरंजीवी बनायेगा।

कुण्डलपुर महोत्सव में विविध धार्मिक कार्यक्रमों के साथ-साथ दिगम्बर जैन समाज की उच्चस्तरीय संस्थाओं, विद्वत् एवं महिला संगठनों इत्यादि के द्वारा आयोजित संगोष्ठी सत्रों, भगवान महावीर के जीवन एवं सिद्धान्तों से संबंधित चित्र प्रदर्शनी, विविध राष्ट्रीय कलाकारों द्वारा प्रस्तुत आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा जहाँ लोगों को नैतिक उन्नयन का अवसर प्राप्त होगा वहाँ निश्चितरूप से महावीर जन्मभूमि की स्वर्णिम गाथा भी दूर-दूर तक पहुँचेगी। आप सभी इस कुण्डलपुर महोत्सव में सम्मिलित होकर इस महान इतिहास के साक्षी बनते हुए शरदपूर्णिमा-10 अक्टूबर को पूज्य ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में अपनी साक्षात् विनयांजलि अर्पित कर गुरुभक्ति का परिचय प्रदान कर रहे हैं। आप सभी के लिए यह प्रथम कुण्डलपुर महोत्सव मंगलकारी होवे यही हार्दिक शुभेच्छा है।

इस महोत्सव आयोजन की घोषणा होते ही पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने एक स्मारिका प्रकाशन की रूपरेखा बनाई और परिश्रम करके सारी सामग्री संकलित करके प्रेस में दिया अतः स्मारिका छपकर आप लोगों के समक्ष आ सकी है। इन सभी कार्यों की सफलता में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वाद के साथ ही पूज्य चंदनामती माताजी का मार्गदर्शन एवं पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज का निर्देशन अत्यन्त महत्वपूर्ण रहता है अतः मैं इन गुरुओं के प्रति अपनी विनम्रता प्रगट करता हूँ। स्मारिका में प्रकाशित आलेखों के लेखक-लेखिका सदैव धन्यवाद के पात्र हैं तथा महोत्सव के समस्त सहयोगियों के प्रति मैं समिति की ओर से आभार प्रकट करता हूँ।

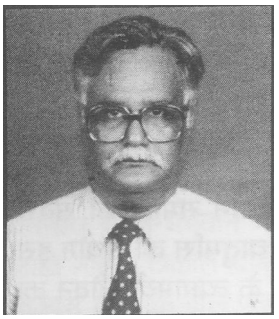

भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा): *कल और आज*

-अशोक कुमार सिन्हा
योजना अधिकारी-पर्यटन विभाग (बिहार सरकार) एवं
प्रबंधक (प्रशासन) बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम, पटना

बिहार प्रान्त के नालंदा जिले में स्थित भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार के प्रमुख पर्यटन गंतव्य स्थल (Foremost Tourist Destination) के रूप में विकसित होने के लिए पूर्णरूप से उपयुक्त स्थल है। यदि इस स्थान के अतीत पर दृष्टिपात किया जाये तो पता चलता है कि दिगम्बर जैन परम्परा के अनुयायी सैकड़ों वर्षों से इसे अपने अंतिम एवं 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की पावन जन्मभूमि के रूप में मानते आये हैं एवं प्रतिवर्ष सैकड़ों-हजारों श्रद्धालु यहाँ पधारते हैं। बिहार पर्यटन विभाग ने अपने 'राजगीर' फोल्डर में कुण्डलपुर (नालंदा) को भगवान महावीर जन्मभूमि के रूप में उल्लिखित किया है।

दिगम्बर जैन परम्परा के प्राचीन ग्रंथों में ''कुण्डलपुर'' को भगवान महावीर की जन्मभूमि बताया गया है और यह सौभाग्य का विषय होगा कि विश्व भर में 'अहिंसा के अवतार' के रूप में विख्यात तीर्थंकर महावीर के इस जन्मस्थान के समुचित विकास के प्रति केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, गैर-सरकारी संस्थाएं एवं स्वैच्छिक संस्थाएं इत्यादि सभी लोग एकजुट होकर क्रियाशील हों।

जहाँ शास्त्रों की प्राचीन मान्यतानुसार पहले ही अनेकानेक श्रद्धालु देश के कोने-कोने से पधारते हों, वहाँ का विकास यदि सरकारी रूप से **'विशिष्ट पर्यटन स्थल'** के रूप में हो जाये तो अंतर्राष्ट्रीय रूप से यह स्थान विश्व के पर्यटन मानचित्र पर एक प्रमुख केन्द्र सिद्ध होगा, इसमें कोई संशय नहीं है। इसका कारण यह है कि विश्वविख्यात पर्यटन स्थल-नालंदा खण्डहर, नालंदा म्यूजियम, ह्वेनसांग स्मृति भवन इत्यादि इस स्थान से मात्र 1.5 किमी. दूर हैं, जहाँ विश्वभर के पर्यटक पहले ही हजारों की संख्या में प्रतिवर्ष आते हैं क्योंकि ये स्थान अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पर्यटक गंतव्य स्थल के रूप में पहले ही मान्यता प्राप्त हैं।

वर्तमान में भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) के विकास में जो नया मोड़ आया है वो जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी-पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा का सुंदर परिणाम है। पूज्य माताजी ने जैन समाज को अपने आर्थिक आधार पर तीर्थंकर महावीर की जन्मभूमि को विकसित करने के लिए प्रबल प्रेरणा प्रदान की और स्वयं अपने संघ सहित पदविहार करके राजधानी दिल्ली से कुण्डलपुर पधारीं, जहाँ पूर्व में एक प्राचीन छोटा मंदिर विद्यमान था। पूज्य माताजी की प्रेरणा पर देश भर की दिगम्बर जैन समाज ने अपना योगदान प्रदान किया और कुछ माह में ही वहाँ नंद्यावर्त महल परिसर के रूप में विशाल निर्माणकार्य दृष्टिगोचर होने लगा है। पूज्य माताजी (ससंघ) के मंगल सानिध्य में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति के

द्वारा नंद्यावर्त महल में मुख्य भगवान महावीर मंदिर इत्यादि 4 मंदिरों एवं भगवान महावीर के जन्ममहल-नंद्यावर्त महल का निर्माणकार्य अत्यंत तीव्रगति से चल रहा है। श्रद्धालुओं के आवास हेतु भी फ्लैट इत्यादि परिसर में बनाये जा रहे हैं। मात्र कुछ माह में ही हुए निर्माणकार्य को देखकर लग रहा है कि यह परिसर शीघ्र ही अत्यंत आकर्षक एवं भव्य रूप को प्राप्त कर लेगा, जो पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र सिद्ध होगा।

वास्तव में तो इस स्थान को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक स्थल बनाने में ज्यादा परिश्रम की आवश्यकता नहीं पड़ेगी क्योंकि नालंदा खण्डहर एवं ह्वेनसांग-फाह्यान जैसे यात्री जिन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण की, किसके लिए अपरिचित हैं और अब पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा जो कुण्डलपुर के विकास की श्रृंखला प्रारंभ की गयी है वह तो सोने पे सुहागा जैसा हो गया है। भौगोलिक रूप में नालंदा खण्डहर एवं महावीर जन्मभूमि में कोई विशेष अंतर नहीं होने से यदि संयुक्त रूप में इसे पर्यटकों के सामने प्रस्तुत किया जाये तो इस स्थान से बढ़कर पर्यटक स्थल और क्या होगा?

आवश्यकता इस बात की है कि इन सब संभावनाओं पर अच्छी प्रकार चिंतन किया जाये। सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाए आगे बढ़कर इसके विकासकार्य को हाथ में लें। बिजली,पानी, आवास, सड़क इत्यादि की सुविधाएं यहाँ उपलब्ध करायी जायें ताकि पर्यटकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। योजनाबद्ध तरीके से यह विकास प्रक्रिया चले और अगले 25-30 वर्षों के लिए विकास की परिकल्पना सुनिश्चित करके उसके अनुसार चला जाये क्योंकि यदि ऐसा नहीं किया गया तो दुष्परिणाम भी सामने आ सकते हैं। सूझ-बूझ के साथ ही सारा कार्य होना चाहिए।

यह खुशी की बात है कि सरकारी स्तर पर भी इस विषय में चिंतन की सकारात्मक प्रक्रिया चल रही है। पर्यटन विभाग ने अपने 'टूर पैकेज' में कुण्डलपुर को नालंदा, राजगीर, पावापुरी इत्यादि स्थलों के साथ जोड़ लिया है तथा अपने साहित्य एवं इंटरनेट पर इस स्थान की जानकारी उपलब्ध करायी है। इंदिरागांधी नेशनल ओपॅन यूनिवर्सिटी (IGNOU) के छात्र-छात्राओं द्वारा इस स्थल के पर्यटकीय विकास के लिए एक विशेष शोध योजना पर भी कार्य किया जा रहा है जिसके सकारात्मक परिणाम भी जल्दी ही प्राप्त होंगें। अब 8 से 10 अक्टूबर 2003 तक प्रथम बार आयोजित हो रहे **''कुण्डलपुर महोत्सव''** में अपनी सहभागिता प्रदान की है। सरकारी रूप से सड़क, बिजली, पानी इत्यादि की मूलभूत सुविधाएं प्राप्त हो जाने पर इस क्षेत्र का आकर्षण पर्यटकों के लिए निश्चित रूप से बढ़ जायेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।स्थानीय लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए भी यह स्थल एक प्रमुख स्रोत के रूप में सिद्ध होगा।

राजगीर-पावापुरी जैसे पर्यटक स्थल भी यहाँ से एकदम निकट हैं, राजधानी पटना की दूरी भी अधिक नहीं है, अतः यात्रीगण इन सभी स्थानों पर एक साथ पर्यटन का भरपूर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। निकट भविष्य में पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा किये जा रहे विकासकार्य एवं सरकारी स्तर पर योजनाबद्ध विकास का संयुक्त रूप **भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर** को विश्वभर में प्रसिद्धि दिलायेगा, ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

अहिंसा के अवतार थे भगवान महावीर

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

आज से लगभग 2602 वर्ष पूर्व बिहार प्रान्त के ''कुण्डलपुर'' नगर में राजा सिद्धार्थ की धर्मपत्नी महारानी त्रिशला के गर्भ से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को एक पुत्ररत्न का जन्म हुआ, जिनका नाम रखा गया-वर्धमान। स्वर्ग से सौधर्म आदि इन्द्रों ने आकर उनका खूब उत्साहपूर्वक जन्मोत्सव मनाया और सुमेरूपर्वत की पांडुकशिला पर ले जाकर 1008 कलशों से उनका जन्माभिषेक किया।

जैनधर्म में प्रसिद्ध चौबीस तीर्थंकरों में महावीर स्वामी अंतिम तीर्थंकर थे। इससे पूर्व कर्मयुग के प्रारंभ में जब प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने ''अयोध्या'' में जन्म लिया था। तब महावीर उनके पोते मरीचि की पर्याय में थे। उसी समय उन्हें ऋषभदेव के मुखारविन्द से ज्ञात हो गया था कि तू भविष्य में चौबीसवां तीर्थंकर बनेगा, तब मरीचि ने अहंकारवश अनेक कुरीतियाँ चलाकर भव-भवान्तरों में नरक-पशु आदि गतियों के दुःख भोगे, पुनः एक बार सिंह की पर्याय में महामुनियों से सम्बोधन प्राप्त कर जीवन का उत्थान प्रारंभ किया। उसके पश्चात् दशवें भव में तीर्थंकर महावीर बनकर वे अहिंसा के अवतार कहलाए। इस प्रकार ऐतिहासिक दृष्टि से भगवान ऋषभदेव और महावीर में बाबा-पोते का संबंध है। इनमें से किसी ने भी जैनधर्म की स्थापना नहीं की है, प्रत्युत् उस धर्म का प्रचार-प्रसार कर स्वयं के जीवन में ''जिन'' शब्द को सार्थक किया है इसीलिए वे जिनेन्द्र भगवान कहलाये और उनके उपासक ''जैन'' माने गये। जैनधर्म एक सर्वहितकारी धर्म है जो प्राणिमात्र को दुःखों से निकालकर सुख का मार्ग बताता है, वह जाति और सम्प्रदाय से बिल्कुल भिन्न विश्वधर्म के रूप में प्राकृतिक और अनादि धर्म है।

भगवान महावीर ने तीस वर्ष की युवावस्था में पूर्वभव के जातिस्मरण हो जाने से जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली और उनका प्रथम आहार ''कूलग्राम'' में राजा कूल के यहाँ हुआ। उन्हें दीक्षा के 12 वर्ष पश्चात् केवलज्ञान उत्पन्न हो गया, उसके बीच में किसी एक दिन वे ''कौशाम्बी'' नगरी में आहार के लिए पहुँचे। वहाँ राजा ''चेटक'' की सबसे छोटी पुत्री ''चन्दना'' एक सेठानी के द्वारा सताई हुई सांकलों में बंधी थी और कोदों का तुच्छ भोजन ग्रहण करती थी किन्तु महावीर को देखते ही उसने भक्तिपूर्वक उनका पड़गाहन किया जिसके प्रभाव से चंदना के सारे बंधन टूट गये, वह वस्त्राभूषणों से सुन्दर हो गई और कोदों का चावल ''शालि'' धान्य में परिवर्तित हो गया पुनः चन्दना ने श्रद्धा सहित महावीर स्वामी को आहारदान दिया और देवताओं ने उस समय रत्नवृष्टि कर दान का महत्व प्रदर्शित किया।

केवलज्ञान होने के पश्चात् 30 वर्षों तक उन्होंने सारे देश में भ्रमण कर जनता को दिव्य उपदेश दिया पुनः 72 वर्ष की उम्र में बिहार की ''पावापुरी'' नगरी में कार्तिक कृष्णा अमावस के दिन समस्त कर्मों का नाश कर निर्वाण प्राप्त कर लिया। जैन पुराणों के अनुसार तब से ही ''दीपावली पर्व'' मनाया जाने लगा है। उनके निर्वाण को आज 2528 वर्ष हो चुके हैं और वर्तमान में 2529 वाँ वीर निर्वाण संवत् चल रहा है।

इस प्रकार भगवान महावीर की भक्ति करते हुए आप सभी अपने जीवन को सार्थक करने का पुरुषार्थ करें यही मंगल भावना है।

बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज की परम्परा में वर्तमान पट्टाचार्य परमपूज्य

आचार्यरत्न श्री अभिनंदनसागर महाराज

का

-:मंगल आशीर्वादः-

बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में ''कुण्डलपुर महोत्सव'' का आयोजन हो रहा है। गणिनी ज्ञानमती माताजी जहाँ विराजमान हों वहाँ ऐसे महोत्सव का होना कोई बड़ी बात नहीं है। जो कुण्डलपुर 2600 वर्षों से भगवान महावीर की जन्मभूमि थी वह जैन समाज की सुप्तता के कारण कुछ वर्षों से उपेक्षित हो गयी थी और माताजी के प्रयासों से वह पुनः एक बार अपने प्राचीन स्वरूप को प्राप्त कर सकी है।

ज्ञानमती माताजी तो वास्तव में इस युग की सरस्वती माता हैं। वे चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के पट्टाचार्य श्री वीरसागर महाराज की शिष्या हैं, उनमें गुरुणांगुरु का प्रतिबिम्ब झलकता है, उन पर हम सभी साधुगण पूर्ण विश्वास रखते हैं। उनकी प्रत्येक चर्या, उनका प्रत्येक कार्य सदैव आगम के अनुकूल होता है और उनका प्रत्येक कार्य जैनधर्म की कीर्तिपताका को फहराने हेतु ही होता है अतः वे वास्तव में जिनशासनप्रभाविका माता हैं।

उनकी प्रेरणा और मंगल आशीर्वाद से आयोजित इस ''कुण्डलपुर महोत्सव'' के समस्त आयोजकगण एवं इसमें तन, मन, धन से जुटे प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद है कि वे इसी प्रकार माताजी की प्रेरणानुसार जिनधर्म की कीर्तिपताका को फहराने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हुए भगवान महावीर जन्मभूमि का यश दुनिया भर में फैलाने में सक्षम हों।

इंदौर (म.प्र.) **आचार्य अभिनंदनसागर**

22-9-2003

तीर्थविकास एवं महोत्सव की सम्प्रेरिका परम पूज्य गणिनीप्रमुख,
राष्ट्रगौरव, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

का

-:मंगल आशीर्वाद:-

भगवान महावीर की जन्मभूमि पर ''भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दि. जैन समिति'' एवं ''बिहार सरकार-पर्यटन विभाग'' के संयुक्त तत्वावधान में ''कुण्डलपुर महोत्सव'' का भव्य आयोजन हो रहा है यह बिहार प्रान्त ही नहीं पूरे देश के लिए गौरव की बात है।

जिस बिहार प्रान्त के कुण्डलपुर नगर में जन्म लेकर भगवान महावीर ने अपने सर्वोदयी-अहिंसामयी सिद्धान्तों से सारे विश्व को अहिंसा का पाठ पढ़ाया, ''जियो और जीने दो'' के उपदेश से सभी को प्रेम, मैत्री एवं भाईचारे का संदेश प्रदान किया उस बिहार प्रदेश में एक बार फिर से अहिंसा का बिगुल बजे एवं भगवान महावीर के दिव्य उपदेश सबके लिए कल्याणकारी होवें।

भगवान महावीर के 2600वें जन्मजयंती महामहोत्सव वर्ष के अंतर्गत विकसित हुए इस तीर्थ से मानवता का संदेश सम्पूर्ण विश्व को प्राप्त हो तथा भगवान महावीर के पावन संदेश सबके जीवन को मंगलमयी बनावें। यह ''कुण्डलपुर महोत्सव'' भगवान महावीर की जन्मभूमि पर हमेशा-हमेशा चलता रहे और सम्पूर्ण भारतवर्ष के शासकों एवं जनता के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए कल्याणकारी होवे यही मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है।

नंद्यावर्त महल, कुण्डलपुर **गणिनी ज्ञानमती**
(नालंदा) बिहार
24-9-2003

परम पूज्य आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी

का

-:मंगल आशीर्वादः-

इस युग में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव एवं अंतिम व चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर हुए हैं जिनमें भगवान महावीर का जन्म बिहार प्रांत के नालंदा जिला स्थित कुण्डलपुर नगर में हुआ था। आज कतिपय आधुनिक शोधकर्ता भगवान महावीर की जन्मभूमि वैशाली सिद्ध कर रहे हैं जो कि नितान्त गलत है, प्राचीन आगम ग्रंथों में वर्णित ढेरों प्रमाण भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर सिद्ध कर रहे हैं।

वर्तमान में इस समसामयिक विषय को लेकर परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने कुण्डलपुर तीर्थ विकास का कार्य करवाकर व जिनशासन की रक्षा कर समस्त जैन समाज पर अनन्य उपकार किया है जिसके लिए जैन समाज उनका चिरऋणी रहेगा। पूज्य गणिनी माताजी प्रत्येक कार्य जिनागम के अनुकूल करती हैं अतः उसका विशेष महत्व रहता है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि उनके मंगल चातुर्मास के मध्य उनके ही पावन सानिध्य में ''कुण्डलपुर महोत्सव'' का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन अपने लक्ष्य में पूर्णता सफल हो और इसको करने-कराने वाले पुण्य संपादन के साथ-साथ भगवान महावीर के अहिंसामयी सिद्धान्तों से जनमानस को परिचित करवाने में पूर्णतः सफल होवें, सभी कार्यकर्ताओं के लिए मेरा यही शुभाशीर्वाद है।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर **आर्यिका अभयमती**

20-9-2003

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का मंगल आशीर्वाद

जिन तीर्थंकर भगवन्तों की दिव्यदेशना से वर्तमान में जैनशासन विद्यमान है उनके जीवन का परिज्ञान रखना हमारा पुनीत कर्तव्य है। आज से 2600 वर्ष पूर्व चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर ने राजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला की पवित्र कुक्षि से जिस कुण्डलपुर नगरी में जन्म लिया था, वह नगरी तीर्थंकर भगवान के जन्म से सदैव-सदैव के लिए पूज्यनीय बन गयी थी जो सौभाग्य से आज भी बिहार प्रदेश में नालंदा के निकट विद्यमान है।

यद्यपि काल के प्रभाव और समाज की सुप्तता ने उसका वैभव अपने आंचल में समेटकर हमारी आँखों से ओझल कर दिया परन्तु उसकी पूज्यता निरन्तर बनी रहीहै और अब जिनशासन की रक्षिका एवं तीर्थंकर भगवन्तों की पंचकल्याणक भूमियों के विकास की प्रेरणास्रोत परमपूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से जब इस तीर्थ का विकास हो रहा है तब वह दिन दूर नहीं जब यह तीर्थ शासनपति भगवान महावीर के अहिंसामयी सिद्धान्तों की अनुगूंज से पुनः विश्वशांति को प्रतिष्ठापित कर अपने विराट स्वरूप को विश्व के क्षितिज पर आलोकित होगा।

तीर्थ विकास के क्रम में कुण्डलपुर तीर्थ पर पूज्य गणिनी श्री के पावन सानिध्य में ''भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दि. जैन समिति'' एवं 'बिहार सरकार पर्यटन विभाग' के संयुक्त तत्त्वावधान में ''कुण्डलपुर महोत्सव'' का आयोजन अहिंसा के व्यापक प्रचार-प्रसार का ही गतिमान रूप है। यह महोत्सव जैनधर्म के पुनरुद्धारक भगवान महावीर के सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार-प्रसार कर तीर्थ को प्राचीन तीर्थ का स्वरूप प्रदान करने में सहकारी होवे यही मेरी मंगल भावना है और इसके समस्त आयोजकगण अपने उद्देश्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करें यही शुभाशीर्वाद है।

25-9-2003, नंद्यावर्त महल **आर्यिका चंदनामती**
कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार

परमपूज्य पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर महाराज का शुभाशीर्वाद

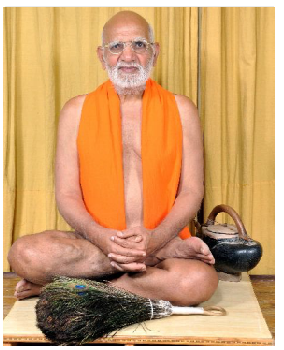

भारत उत्सव-महोत्सवों का देश है। वर्ष के 365 दिनों में विभिन्न धर्म एवं जातियों के महोत्सव हुआ करते हैं। कभी सामाजिक, कभी प्रादेशिक, कभी राष्ट्रीय एवं कभी अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव होते रहते हैं।

ये महोत्सव अतीत, अनागत तथा वर्तमान पर दृष्टिपात कराते हैं। महोत्सवों में अनेक रसों का समावेश होता है। प्रत्येक उत्सव-महोत्सव का अपना-अपना स्वरूप होता है।हमारा देश अनेक संस्कृतियों का संगम है। सबके अपने-अपने रीति-रिवाज हैं, उन्हीं के आधार से उत्सव मनाये जाते हैं।

यहाँ की गंगा-जमनी संस्कृति बड़ी ही आकर्षक है। उन्हीं में से एक जैन संस्कृति है जो अनादिकाल से चली आ रही है। जैनधर्म में वर्तमान में ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यंत 24 तीर्थंकर (अवतार) हुए हैं। उनमें से अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मभूमि (नालंदा) बिहार है।

कुण्डलपुर को विशालरूप प्रदान किया जा रहा है। कुण्डलपुर को देश-विदेश के पर्यटकों से परिचय कराने के लिए यहाँ ''कुण्डलपुर महोत्सव'' का आयोजन 8से 10 अक्टूबर 2003 तक किया जा रहा है।

यह महोत्सव तथा स्मारिका अपने उद्देश्य में सफल हो तथा जन-जन के कल्याण में यह महावीर जन्मभूमि सहायक बने यही मंगलकामना है।

25-9-2003, नंद्यावर्त महल **क्षुल्लक मोतीसागर**
कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार

कुण्डलपुर में भगवान की राज्यसभा (9 फरवरी 2003) के मंच से रक्षामंत्री,
भारत सरकार-श्रीयुत जार्ज फर्नांडीज जी का वक्तव्य

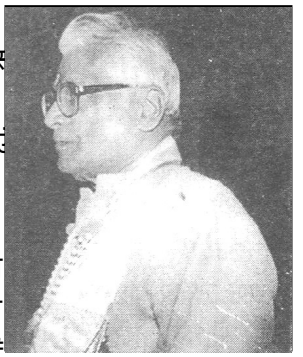

जैनधर्म के अंतिम एवं 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मभूमि के रूप में इस कुण्डलपुर की मान्यता प्राचीनकाल से रही है और यह मेरा सौभाग्य है कि इस महान पवित्र भूमि का भारतीय संसद में प्रशासनिक प्रतिनिधित्व करने का दायित्व मुझे मिला है। भगवान महावीर वो महान व्यक्तित्व थे, जिनकी बौद्धिक क्षमताएं असाधारण थीं, जिनके सिद्धांत समस्त विश्वपरिवार के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, सांस्कृतिक हर क्षेत्र संबंधी जीवन को सुचारूरूप से चलाने हेतु सर्वाधिक सक्षम हैं। भगवान महावीर ने जहां अपनी ओर से दूसरे पर आक्रमण करने से मना किया वहीं स्वयं की रक्षा के लिए हर प्रकार से तत्पर रहने का उपदेश भी हमें उनकी वाणी से ही प्राप्त हुआ है। रक्षामंत्री के रूप में आज देश की सीमाओं की सुरक्षा नीति अपनी ओर से आक्रमण न करने की नीति इत्यादि सभी भगवान महावीर के सिद्धान्तों को ही प्रतिपादित कर रही हैं। ऐसे युगपुरुष की जन्मभूमि मेरे इस संसदीय क्षेत्र का महान गौरव है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि ऐसी पावनभूमि का विकास करने का संकल्प हमारे देश की विभूतिस्वरूप महान जैनसाध्वी श्रीज्ञानमती माताजी द्वारा लिया गया है। भारत की समाज पर यदि किसी का गहरा असर होता है तो वे ये आध्यात्मिक संत ही हैं, जिनकी वाणी जन-जन के लिए प्रामाणिक हो जाती है। मुझे बताया है कि पूज्य माताजी दिगम्बर जैन समाज की ऐसी साध्वीरत्न हैं जिन्होंने भगवान महावीर के बाद ढाई हजार वर्षों के इतिहास में पहली बार विशाल ग्रंथ लेखन किया है। ऐसी महान विद्वान् माताजी के दर्शन का सौभाग्य मुझे मेरे ही संसदीय क्षेत्र में प्राप्त हुआ है तो यह मेरे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। पूज्य माताजी के आह्वान पर भगवान महावीर जन्मभूमि के विकास का जो महत्तम कार्य सम्पन्न किया जा रहा है, वह मात्र जैनसमाज के लिए ही यशस्वी नहीं है वरन् इस संपूर्ण नालंदा क्षेत्र एवं बिहार प्रान्त की कीर्ति संसार में प्रसारित करने वाला है। नालंदा को तो बौद्धिक क्षेत्र में पहले से ही ख्याति इसलिए प्राप्त है क्योंकि भगवान महावीर और गौतम बुद्ध जैसे महापुरुषों ने इस धरती पर निवास करके अपनी ज्ञानरश्मियों को बिखराया है।

बहुत ही अल्पसमय में इस प्रकार के विकास कार्य को देखकर मैं इस विकास के आधारभूत कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन सहित उनकी पूरी टीम को साधुवाद देना चाहता हूँ। नालंदा की जनता इस तीर्थ के माध्यम से महावीर के सिद्धान्तों को पुनः आत्मसात करके जीवन में और भी सुखी हो सकेगी, ऐसी मेरी शुभकामना है।

भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं सानिध्य में दो बार राजधानी दिल्ली में तीर्थंकर महावीर की परम्परा के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से संबंधित दो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों का उद्घाटन किया। प्रथम तो अप्रैल 1998 में भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार प्रवर्तन का उद्घाटन एवं उसके पश्चात् फरवरी 2000 में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष का उद्घाटन। तीर्थंकर भगवन्तों के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार की माननीय अटल जी ने जो ये परम्परा पूज्य माताजी की प्रेरणा से स्थापित की है, मैं तो उसे ही आगे बढ़ाने आया हूँ।

मेरा प्रयास रहेगा कि सरकारी स्तर पर भगवान महावीर जन्मभूमि के विकास हेतु जो सहयोग संभव है, उसके प्रति मैं सजग होकर अपने कर्तव्य का निर्वाह करूँ।

प्रस्तुति-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

कुण्डलपुर आकर मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँः रेलमंत्री श्री नितीश कुमार

(10 फरवरी 2003)

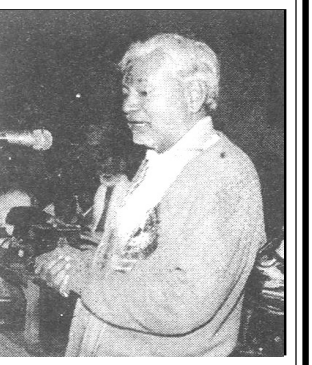

मेरे लिए इससे अधिक गौरवान्वित होने की तो कोई बात ही नहीं है। हम सब लोग जो इस नालंदा की मिट्टी से वास्ता रखते हैं, उन सबके लिए यह गौरव की बात होगी। अब तो आपने यहाँ इतना बड़ा आयोजन कर दिया, आप इतने भव्य मंदिर का निर्माण कर रहे हैं, देश-विदेश के लोग यहाँ माथा टेककर आशीर्वाद लेने के लिए आयेंगे, पुण्य कमाने के लिए आयेंगे तो फिर सरकार भी कुछ ऐसा कर दे जिससे उसका कुछ खर्च भी न हो और जैनसमाज के लोगों को प्रसन्नता भी हो तो इसमें तो हम लोगों का कुछ लग भी नहीं रहा है ऊपर से हमारा गौरव भी बढ़ रहा है। मैं यहाँ पधारे हुए आप सब लोगों का इस धरती पर, इस धरती से वास्ता रखने के कारण अभिनंदन करता हूँ, स्वागत करता हूँ। यहाँ के लोग हर प्रकार का सहयोग करेंगे क्योंकि आपने जिस चीज को प्रतिष्ठित करने की कोशिश की है, ऐसी प्रतिष्ठा कोई अगर चाहे जितना भी खर्च कर ले, चाहे कितना भी परिश्रम कर ले, यह प्रतिष्ठा किसी को प्राप्त नहीं हो सकती।

बार-बार सब यहाँ इकट्ठा होंगे, धर्मसमागम यहाँ लगेगा और जिस गति से निर्माण कार्य चल रहा है उसके अनुसार तो शीघ्र ही मंदिर बनकर तैयार हो जायेगा और तब भी हम सब लोग यहाँ उपस्थित होकर जरूर आशीर्वाद लेना चाहेंगे।

जब मैं यहाँ आ रहा था तो ''क्लीन स्लेट'' वाली मेरी मानसिकता थी, ऐसी स्लेट जिस पर कुछ भी न लिखा हो, इसलिए रास्ते में मैं इस क्षेत्र के विधायक-श्री श्रवण कुमार जी से पूछ रहा था कि जब इतना बड़ा आयोजन हो रहा है तो हम लोगों से उनकी क्या अपेक्षा है? आपस में बात करके हमने सोचा है कि 2-3 साल पहले हमने जो पास के दीपनगर को ''हाल्ट स्टेशन'' की मान्यता दिलाई है, उसके साथ कुण्डलपुर को राज्यसरकार से परामर्श करके जोड़ दिया जाये।

आप जब इतना बड़ा काम कर रहे हैं तो हाल्ट स्टेशन से काम नहीं चलेगा, हमें मालूम है। तो हमने यह भी कहा है कि उसको पूर्ण स्टेशन का दर्जा दिया जाये ताकि आपको आने में कोई असुविधा न हो। पावापुरी की भांति ही इस स्टेशन का विकास करने की हमारी पूरी कोशिश होगी।

आज तो मैं आपका स्वागत करने आया हूँ। जब आप कुण्डलपुर के लिए इतना कुछ कर रहे हैं तो हमारा भी कुछ दायित्व बनता है कि हम भी कुण्डलपुर का प्रचार-प्रसार करें। आप सबके माध्यम से जब काम होगा तो इसका नाम होगा, लोग यहाँ आएंगे और कितने लोग इस तीर्थस्थान के इर्द-गिर्द अपने आप बगैर किसी श्रम के, बगैर किसी मेहनत के रोजगार पाएंगे कई लोग इस काम में लग जायेंगे। अपनेदेश में अगर कोई सबसे बड़ी समस्या है तो वह है बेरोजगारी की। तो इस प्रकार से यह तीर्थकेन्द्र के रूप में उभरेगा तो कई लोगों को उसके विस्तृत होने का प्रसाद मिलता रहेगा और उसी में उनके जीवन की नैया आगे बढ़ती जायेगी। आज के इस शुभ अवसर पर मैं आप सबके प्रति अपनी श्रद्धा निवेदित करता हूँ और एक बार पुनःजितने भी यहाँ पर पधारे हैं उन नर-नारी, बाल, वृद्ध, युवाओं का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ और इस कार्य में हम सब लोगों का सहयोग अपने ढंग से जो भी संभव होगा वह हम करते जायेंगे।

प्रस्तुति-ब्र. कु. अलका जैन (संघस्थ)

न्यायमूर्ति म. रामा जोयिस
राज्यपाल, बिहार

सत्यमेव जयते

संदेश

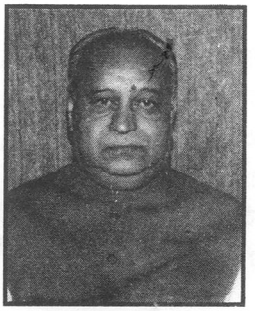

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में आयोजित होने वाले 'कुण्डलपुर महोत्सव' के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के बारे में जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई ।

आज, जबकि मानव राक्षस-रूप धारण कर मानव की हत्या कर रहा है तथा विभिन्न तरीकों से हिंसा हो रही है, ऐसी स्थिति में भगवान महावीर के उपदेश ही मानवता को विवेक एवं ज्ञान प्रदान कर सकते हैं ।

मुझे आशा है कि उक्त महोत्सव तथा इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका कुण्डलपुर की महत्ता के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ भगवान महावीर के संदेशों को प्रचारित कर विश्व शान्ति में भी सहायक होगा ।

स्मारिका की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

(म० रामा जोयिस)

अशोक कुमार सिंह
मंत्री
कला, संस्कृति, युवा एवं पर्यटन विभाग
बिहार

दूरभाष : 226688, 211242 (कार्यालय)
227837, 230345 (आवास)
स्टेडियम चैम्बर - 670860
फैक्स : 0612-227837, 211242
आवास : 10, वीरचंद पटेल पथ,
पटना - 800 001.

पत्रांक: .....

दिनांक: .....

शुभकामना-संदेश

यह हर्ष का विषय है कि दिनांक-8 से 10 अक्टूबर तक कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति एवं पर्यटन विभाग के संयुक्त तत्वाधान में कुण्डलपुर महोत्सव मनाया जा रहा है, तथा इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है ।

प्राचीन काल से ही भगवान महावीर की जन्म भूमि कुण्डलपुर में देश भर के हजारों श्रद्धालुगण पवित्र स्थल के दर्शन हेतु आते है । भगवान महावीर ने विश्व को शान्ति एवं अहिंसा का संदेश तो दिया ही साथ ही उन्होंने सामाजिक एवं धार्मिक आडम्बरों के खिलाफ भी लोगों को सक्रिय किया ।

मैं इस स्मारिका की सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ, तथा आयोजन समिति के सभी सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ ।

अशोक कुमार सिंह
23.9.03

सत्यमेव जयते

जिला पदाधिकारी, नालन्दा
- 06112 कोड
225203 (का0)
225204 (आ0)
225205 (फैक्स)

दिनांक 03.06.2003

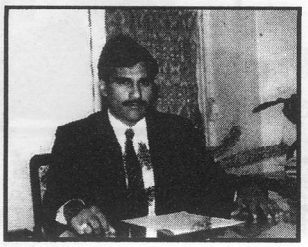

शुभ संदेश

यह जानकर काफी प्रसन्नता हुई कि भगवान महावीर के जन्मस्थल कुण्डलपुर में श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में दिनांक 08 अक्टुबर, 2003 से 10 अक्टुबर, 2003 तक 'कुण्डलपुर महोत्सव' का प्रथम आयोजन हो रहा है। देश भर के विभिन्न पर्यटन स्थलों पर आयोजित महोत्सवों में एक और की वृद्धि हो रही है। इससे कुंडलपुर को पर्यटन के मानचित्र पर लाने में सहयोग मिल सकेगा, साथ ही क्षेत्र के विकास को भी एक नया आयाम मिलेगा। सत्य, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव आदि मानव मूल्यों के प्रसार में कुण्डलपुर का एक नयी कड़ी के रूप में उद्भव हो रहा है। परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माता जी के सानिध्य में कुण्डलपुर का द्रुत विकास जैन धर्म के मुख्य तीर्थ स्थल के रूप में हो ऐसी मेरी शुभ कामना है।

(ई० हुकुम सिंह मीणा)
जिला पदाधिकारी, नालन्दा

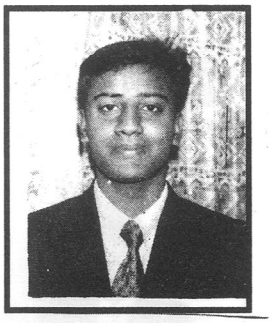

Amit Lodha
I.P.S.
आरक्षी अधीक्षक,
नालंदा ।

कुण्डलपुर महोत्सव स्मारिका
हेतु
शुभकामना

बिहार प्रान्त के नालंदा जिले में स्थित "कुण्डलपुर" दिगम्बर जैनधर्म के अनुयायियों द्वारा "भगवान महावीर जन्मभूमि" के रूप में प्राचीन समय से पूजा जाता है, हजारों श्रद्धालु प्रतिवर्ष यहाँ पधारते हैं । वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माता जी की प्रेरणा द्वारा यहाँ जो निर्माण कार्य चल रहा है, उसकी तीव्रगति को देखकर लगता है कि शीघ्र ही यह स्थान नालंदा जिले का भव्य आकर्षण बन जायेगा । विश्व को अहिंसा का महान संदेश देने वाले तीर्थंकरों की विकसित जन्मभूमियाँ सभी के लिए गौरव की बात है । कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति एवं पर्यटन विभाग, बिहार सरकार द्वारा संयुक्त रूप से जो "कुण्डलपुर महोत्सव" का शुभारंभ किया गया है, वह भी एक शुभ संकेत है क्योंकि इसके माध्यम से जनमानस इस स्थान की ओर आकर्षित होगा और उससे शाकाहार, अहिंसा, पारस्परिक मैत्री, पर्यावरण विशुद्धी जैसे सिद्धांत का बोध सबको प्राप्त हो सकेगा ।

"कुण्डलपुर महोत्सव स्मारिका" के माध्यम से मैं इस महोत्सव एवं संबंधित कार्यकर्त्ताओं विशेष रूप से कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति के अध्यक्ष-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ । भगवान महावीर की इस भूमि का यश दिगन्तव्यापी बने, यही शुभेच्छा है ।

27. 9. 2003
बिहारशरीफ

27.9
अमित लोढ़ा

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

दूरभाष : 81824 कार्यालय
81831 निवास

सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
पुरातत्व संग्रहालय, नालन्दा - 803111

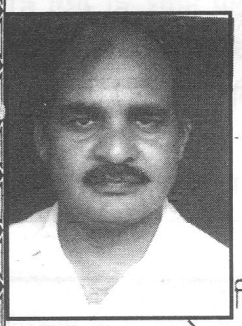

शुभकामना

"यह बड़े हर्ष का विषय है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर बिहार में कुण्डलपुर महोत्सव (8 से 10 अक्टूबर 2003) के अवसर पर "कुण्डलपुर महोत्सव स्मारिका" का प्रकाशन जैन साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के मार्गदर्शन में किया जा रहा है। इस स्मारिका के माध्यम से जैनधर्म के अनुयायियों को इस तथ्य का ज्ञान प्राप्त होगा कि यही कुण्डलपुर भगवान महावीर की जन्मभूमि है इसका प्रमाण यहां भगवान महावीर के समकालीन पुरावशेष एवं कलाकृतियों से मिलता है जो कि यहाँ के टीलों पर बिखरी एवं दबी पड़ी हैं। यही नहीं प्राचीन जैन ग्रंथों से ज्ञात होता है कि भगवान महावीर ने अपने तपस्वी जीवन के सर्वाधिक वर्ष यहाँ बिताये।

इस स्मारिका के माध्यम से जैनधर्म के अनुयायियों को एक नया दृष्टिकोण एवं व्यापक ज्ञान प्राप्त होगा। सामाजिक बुराई एवं भ्रांतियों का अंत होगा। मैं "कुण्डलपुर महोत्सव स्मारिका" की सफलता के लिए हृदय से कामना करता हूँ कि यह विश्व कल्याणकारक होगी।

25-9-2003

ए.के. पाण्डे
(सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद्)

"यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का जन्मोत्सव भगवान महावीर की जन्मस्थली कुण्डलपुर में ससमारोह मनाया जा रहा है, जिसमें बिहार सरकार के पर्यटन विभाग का सहयोग प्राप्त है। मैं पूज्य माताजी के चरणों में कोटिशः वंदना अर्पित करता हूँ। माताजी ने सप्रयास यह सिद्ध किया है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर ही है, जो कि बिहार प्रांत के नालंदा जिले में अवस्थित है। मेरी आयु आज 78 वर्ष की है और मैं बचपन से ही देख रहा हूँ कि राजगीर व पावापुरी में आने वाले जैन श्रावकों की भीड़ कुण्डलपुर में जाकर अपनी श्रद्धा अवश्य समर्पित करती है। इसी कुण्डलपुर में भगवान महावीर का जन्म हुआ है, इस संबंध में इसके आसपास के गाँवों में अनेक दंतकथाएँ प्रचलित हैं तथा हिंदी एवं लोकभाषाओं में इस संबंधी गीत गाये जाते हैं। कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल के आधारस्रोत-ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन की कर्मठता एवं ईमानदारी अत्यंत प्रशंसनीय है।

28-9-2003

सुरेन्द्र प्रसाद 'तरुण', राजगीर
(पूर्व शिक्षा मंत्री, बिहार सरकार)

शुभकामनाएं

''पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा से भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में जो भव्य विकास हुआ है, उससे यह महान तीर्थ युग-युग के लिए अमर हो गया है। आने वाले सैकड़ों-हजारों वर्षों तक देश-विदेश के श्रद्धालु तीर्थंकर महावीर के जन्म से पवित्र रज को प्राप्त करने के लिए यहाँ ही पधारेंगे। ऐसे महान तीर्थ एवं गणिनी माताजी को कोटिशः वंदन। इस तीर्थ पर 'कुण्डलपुर महोत्सव' की यह श्रृंखला सदा चलती रहे, यही शुभकामना है।

महावीर प्रसाद जैन (संघपति)
बंगाली स्वीट सेंटर, दिल्ली

''आज सारे भारत में भगवान महावीर की जन्मभूमि की चर्चा हो रही है। जो सदियों से मान्यता प्राप्त जन्मभूमि थी, वह पूज्य आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के अथक परिश्रम से सारे देश में छा गई है। ऐसे महान पवित्र ''कुण्डलपुर' तीर्थ की कीर्ति अब कभी भी धूमिल नहीं हो सकती। 'कुण्डलपुर महोत्सव' जैसे कार्यक्रमों से अजैन जनता भी इस भूमि के महत्व को समझ सकेगी। यह तीर्थ एवं पूज्य गणिनी माताजी सदैव जयवंत रहें, यही हार्दिक भावना है।

कमलचंद जैन
खारीबावली, दिल्ली

''पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी जो कार्य हाथ में लेती हैं, वह सदा आगम के अनुकूल एवं धर्मप्रभावना के निमित्त होता है, इसलिए उनकी आज्ञा का परिपालन करने में विशेष उत्साह एवं संतुष्टि प्राप्त होती है। महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर तीर्थ का विकास करके भगवान महावीर की यशोगाथा का पूज्य माताजी द्वारा जो ध्वज लहराया है वह सदैव आकाश की ऊँचाइयों को छूता रहे। हम सदैव गुरुआज्ञा का परिपालन करते हुए तीर्थविकास में सहयोगी बनते रहें, यही गुरुचरणों में कामना है।''

प्रेमचंद जैन
खारीबावली, दिल्ली

''कुण्डलपुर (नालंदा) भगवान महावीर की जन्मभूमि है और शासनपति तीर्थंकर भगवान की जन्मभूमि के विकास में सहभागी बनना महान सौभाग्य एवं पुण्य का कारण है'' इस तथ्य को समझाकर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने हम पर महान उपकार किया है। जन्मभूमि-कुण्डलपुर एवं पूज्य माताजी के चरणों में शत-शत नमन करते हुए कुण्डलपुर महोत्सव एवं महोत्सव स्मारिका के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।''

ऋषभदास दीपक कुमार जैन
वाराणसी (उ.प्र.)

शुभकामनाएं

''हमारे प्राचीन दिगम्बर जैन शास्त्रों में भगवान महावीर की जन्मभूमि ''कुण्डलपुर'' बतायी गयी है, जबकि ''वैशाली'' भगवान की ननिहाल थी। हमें तो आगम को ही चक्षु समझकर अपनी श्रद्धा का निर्धारण करना चाहिए। पूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) को देशभर में चमकाकर दिगम्बर जैन समाज पर बड़ा उपकार किया है। पूज्य माताजी शतायु होकर इसी प्रकार हमारा मार्गदर्शन करती रहें, यही जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना है।

जिनेन्द्र प्रसाद जैन, ठेकेदार
बंगाली मार्केट, दिल्ली

''बिहार व झारखंड प्रांतों के जैनतीर्थ-सम्मेदशिखर जी, कुण्डलपुर, राजगीर, पावापुरी, गुणावां, चम्पापुर, मंदारगिरी इत्यादि प्राचीनकाल से ही समस्त जैनसमाज में बड़ी श्रद्धा से पूजे जाते हैं। इनमें से भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) ही है, अन्यत्र नहीं, इस बात का हमें पूर्ण विश्वास है।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने कुण्डलपुर का विकास करके बहुत ही महान कार्य किया है। इस तीर्थ का नया स्वरूप निश्चित ही बिहार प्रांत के गौरव को शतगुणा करने वाला सिद्ध होगा। प्रथम बार आयोजित हो रहे ''कुण्डलपुर महोत्सव'' के लिए मेरा पूर्ण सहयोग एवं बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

रामगोपाल जैन, पटना
(अध्यक्ष-बिहार राज्य दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड)

''कुण्डलपुर विकास के क्रम में परम पूज्या श्री ज्ञानमती माताजी के मंगल चरण बिहार के जिन-जिन क्षेत्रों में पड़े हैं, वहाँ एक नई लहर, नई जागृति पैदा हुई है। पावापुरी जी, राजगृही जी, गुणावां जी यहाँ तक कि तीर्थराज शिखरजी में भी पूज्या माताजी की प्रेरणा से नवनिर्माण हो रहे हैं।

सम्यक्त्व की प्रतिमूर्ती पूज्य माताजी के वात्सल्य की छाँव में हमने बहुत कुछ सीखा है एवं बहुत-बहुत सीखना बाकी है। पूर्वजों के धर्मानुकूल पदचिन्हों पर चलने का प्रयास करते हुए जब भी हमारे कदम रुके हैं, लड़खड़ाये हैं, तब पूज्य माताजी ने थोड़ा डाँट कर और ढ़ेरों ममता उड़ेल कर हमें संभाला है जो हमारे जैसे तुच्छ व्यक्ति के लिए बहुत बड़ी बात है।

पूज्या माताजी के जन्मजयंती पर 'कुण्डलपुर महोत्सव' का आयोजन उनके उपदेशों एवं आशीर्वादों से प्रभावित होकर प्राचीन आगम की मान्यतानुसार भगवान महावीर की जन्मभूमि पर अप्रमाद की स्थिति में किये जा रहे विभिन्न प्रयासों का निचोड़ है, जो कार्यक्रमों, गोष्ठियों, उपदेशों के माध्यम से आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। हम इसे याद रखें, भविष्य में यह हमारा मार्गदर्शक बनकर वीर शासन को शक्ति प्रदान करे यही पूज्या माताजी को हमारी सबसे बड़ी एवं सच्ची विनयांजलि होगी।

अजय कुमार जैन (आरा-पटना)
(महामंत्री-भ.म.ज. कुण्डलपुर दि. जैन समिति)
(मानद मंत्री-बिहार स्टेट दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी)

शुभकामनाएं

''भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी (ससंघ) की मंगल प्रेरणा से नवविकसित नंद्यावर्त महल परिसर में पहली बार ''कुण्डलपुर महोत्सव'' का बिहार सरकार के पर्यटन विभाग एवं कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजन हो रहा है, यह बड़े हर्ष और गौरव का विषय है, सरकारी रूप से कुण्डलपुर की मान्यता होने से सड़क, बिजली, पानी इत्यादि की सुविधाएं यहाँ उपलब्ध हो सकती हैं, जिसके कारण जैनेतर समाज भी यहाँ आकर भगवान महावीर के दर्शन करके उनके सर्वोपयोगी सिद्धांतों से लाभ प्राप्त कर सकता है। ''

जयचंद कासलीवाल (पूर्व विधायक)
चांदवड़ (महा.)

''पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के विराट व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब है-नवविकसित नंद्यावर्त महल, जन्मभूमि-कुण्डलपुर तीर्थ। हमने कितने-कितने तीर्थों का विकास किया पर अपनी संस्कृति के उद्गम स्थल-तीर्थंकर जन्मभूमियों पर समुचित ध्यान नहीं दिया। महान सौभाग्य से पूज्य माताजी जैसा सूर्य सदृश व्यक्तित्व हमारे मध्य में विराजमान है, जिन्होंने हम सबको तीर्थंकर भगवंतों की भक्ति के साथ-साथ तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास के प्रति भी सचेत किया। ऐसी सन्मार्गप्रदर्शिका पूज्य माताजी के चरणों में कोटि-कोटि बार वंदन करते हुए मैं ''कुण्डलपुर महोत्सव'' के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ।''

भाई जी (कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन) इसी प्रकार पूज्य माताजी की प्रेरणाओं को मूर्तरूप प्रदान कर हम सबका भी मार्गदर्शन करते रहें, यही मंगल भावना है।

डा. पन्नालाल पापड़ीवाल (पैठण) महा.
(अध्यक्ष-महा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी)

'पूज्य ज्ञानमती माताजी का हमने नाम तो बहुत सुना था, पर जब साक्षात् उनके कर्मठ एवं दृढ़ संकल्पी व्यक्तित्व को निकट से देखा तो उनके प्रति विशेष श्रद्धाभाव जागृत हो गया। जंगल में बसे कुण्डलपुर तीर्थ का ऐसा भव्य विकास हो जायेगा, हम लोग कभी यह सोच भी नहीं सकते थे। पूज्य माताजी जैसा व्यक्तित्व ही इस सपने को साकार कर सकता था। उनकी प्रेरणा से मुझे भी इस तीर्थ के विकास में सहयोगी बनने की सद्बुद्धि प्राप्त हुई, यह मेरा महान पुण्य है।

विकास कार्य में पूर्ण समर्पित कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी जैन सहित सभी कार्यकर्ता सदस्यों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ,''

ज्ञानचंद जैन,(आरा) बिहार

''भगवान महावीर जिनके शासन में रहकर हमें धर्मपालन करने का मार्ग प्राप्त हुआ है, उनकी जन्मभूमि के विकास का कार्य अत्यंत आवश्यक था। नंद्यावर्त महल-कुण्डलपुर जन्मभूमि तीर्थ समाज के लिए पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की महान सौगात है, जिसको अब हम सबको मिलकर संरक्षित रखना है, ताकि अपनी महान संस्कृति सदैव सुरक्षित रहे।'' पर्यटन विभाग-बिहार सरकार के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित ''कुण्डलपुर महोत्सव'' इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मनोज जैन
डिफेन्स कालोनी, मेरठ (उ.प्र.)

शुभकामनाएं

''इतने कम समय में कुण्डलपुर में हुआ निर्माण हार्दिक प्रसन्नता का विषय है। जम्बूद्वीप जैसी अद्वितीय रचना की सम्प्रेरिका प्रातःस्मरणीय पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने भगवान महावीर की जन्मभूमि को अब ऐसा जीवंत कर दिया है कि बिहार के तीर्थों के दर्शन करने आने वाला कोई भी तीर्थयात्री इसके दर्शन से वंचित नहीं रहना चाहेगा। बिहार ही क्या समस्त भारतवर्ष के दिगम्बर जैन तीर्थों में कुण्डलपुर (नालंदा) की महिमा अब विशेष ही रहेगी।''

राकेश जैन (मवाना वाले)
मेरठ (उ.प्र.)

''अपनी मंगल प्रेरणा से तीर्थंकर महावीर जन्मभूमि के विकास की ओर उन्मुख करके पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी जी ने हमें वास्तविक सद्मार्ग दिखाया है। जन्मभूमि-कुण्डलपुर तीर्थ एवं पूज्य माताजी के श्रीचरणों में बारम्बार नमन करते हुए हम पूज्य माताजी के 70वें जन्मदिवस पर आयोजित ''कुण्डलपुर महोत्सव'' की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं समर्पित करते हैं।

कृष्ण कुमार, कमल कुमार जैन
आरा (बिहार)

''पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रारंभ से ही हस्तिनापुर, अयोध्या, अहिच्छत्र, प्रयाग जैसी तीर्थंकर जन्मभूमियों एवं कल्याणकभूमियों का विकास अपनी प्रेरणा से कराया है। इस शृंखला में महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर में नवनिर्माण इस युग को पूज्य माताजी की महान देन है। कुण्डलपुर की पुण्यभूमि पर विराजमान पूज्य गणिनी माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज एवं कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन सहित समस्त संघ को शत-शत नमन् ।

सरोज जैन, फतेहपुर
(महामंत्री-अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी)

''जब पहले कभी कुण्डलपुर आने का अवसर मिला, तब महावीर की जन्मभूमि पर मात्र एक छोटा सा मंदिर देखकर मन में विषाद तो होता था, पर इस तीर्थ का विकास कैसे हो, इसओर कोई सकारात्मक प्रयास किसी ने भी नहीं किया था। ये तो पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का महान उपकार मानना चाहिए कि इस स्थान की दूरी और अपने नाजुक स्वास्थ्य की भी चिंता न करते हुए वह अपने संघ सहित यहाँ पधारीं, सारे देश की दिगम्बर जैन समाज को इस लक्ष्य से जोड़ा और कुछ ही महीने में भव्य तीर्थ बनकर खड़ा हो गया। ये तो कोई अद्भुत शक्ति हैं, जिनके सामने सारी बाधाएँ स्वयमेव पराजित हो जाती हैं। हमने यही दृश्य मांगीतुंगी में देखा है, यही प्रयाग में देखा है और यही कुण्डलपुर में देखा है। अहिंसा के अवतार भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर की पावन भूमि पर हो रहे 'कुण्डलपुर महोत्सव' हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।''

जम्मनलाल जैन कासलीवाल 'एडवोकेट', औरंगाबाद (महा.)
(संयोजक-गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल, महाराष्ट्र)

शुभकामनाएं

''यह मेरे कैरियर का एक सुनहरा अवसर है जबकि सर्वोच्च जैन साध्वी पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा द्वारा महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में निर्मित हो रहे नंद्यावर्त महल परिसर के निर्माण में मुझे कुछ सुझाव भी देने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। ब्र. रवीन्द्र कुमार जी जैसे समर्पित एवं सूझ-बूझ वाले कर्मयोगी व्यक्तित्व के साथ काम करके मुझे बहुत ही प्रसन्नता है। नंद्यावर्त महल परिसर सारे संसार के लिए आकर्षण का केन्द्र सिद्ध हो, यही शुभेच्छा है। ''

गुणसागर जैन, इंजी., दिल्ली

''अवध प्रांत की गौरव पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी आज सारे राष्ट्र की गौरव हैं। जहाँ उन्होंने अपनी ज्ञान साधना से सभी को आश्चर्यचकित कर दिया, वहीं कितने ही जैन तीर्थों का अपनी प्रेरणा से उद्धार कराकर जैन समाज पर महान उपकार किया। वर्तमान में भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) को विकसित करके पूज्य माताजी ने जैन संस्कृति की महान सुरक्षा की है। कुण्डलपुर तीर्थ एवं तीर्थोद्धारिका पूज्य माताजी के श्रीचरणों में बारम्बार वंदन।

नेमकुमार जैन, गणेशपुर (बाराबंकी)

'' जैन संस्कृति में तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों का विशेष महत्व है, क्योंकि इन द्रव्यतीर्थों की वन्दना से अपनी आत्मा तीर्थस्वरूप बन जाती है। सम्मेदशिखर जी, पावापुरी, राजगृही, गुणावां इत्यादि तीर्थों की यात्रा करने वाले जैन यात्रीगण प्राचीन समय से ही कुण्डलपुर की भगवान महावीर की जन्मभूमि के रूप में वंदना करते आ रहे हैं। वास्तव में जनमानस की श्रद्धा तो सर्वोपरि होती ही है। प्राचीन आगमग्रंथ भी कुण्डलपुर को महावीर जन्मभूमि बताते हैं।

हम सब भी अपनी संस्कृति के उद्भव केन्द्र-तीर्थंकर जन्मभूमियों की रक्षा में सदैव तन-मन-धन से संलग्न रहें, यही जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 70वें जन्मजयंती दिवस पर उनके चरणों में शत-शत नमन।

प्रदीप कासलीवाल, इंदौर
(अध्यक्ष-दि. जैन महासमिति ट्रस्ट)

''दिगम्बर जैन आगमानुसार 'कुण्डलपुर' ही भगवान महावीर की जन्मभूमि है। प्राचीन काल से चली आई जनश्रद्धा के साथ खिलवाड़ करना कदापि भी उचित नहीं है, यदि हम श्रद्धा पर ही कुठाराघात करने लगेंगे तो हम कहीं के भी नहीं रहेंगे। इसलिए कुण्डलपुर (नालंदा) के प्रति अपना पूर्ण समर्थन एवं समर्पण रखते हुए मैं पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा द्वारा कुण्डलपुर में किये जा रहे नवनिर्माण एवं ''कुण्डलपुर महोत्सव'' के आयोजन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।''

डा. अनुपम जैन, इंदौर
(महामंत्री-तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ)

शुभकामनाएं

''कुण्डलपुर ही भगवान महावीर की जन्मभूमि है, यही हमारे आगम की वाणी है। सदियों से जो स्थान भगवान की जन्मभूमि के रूप में पूजा जा रहा है, उसका नया स्वरूप तो 'भगवान महावीर 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष' की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसका श्रेय जाता है राष्ट्रगौरव पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी को। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी एवं कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने जिस समर्पण एवं लगनशीलता से पूज्य माताजी की प्रेरणा को साकार किया है, उसकी मिसाल इस कलिकाल में अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

पूज्य गणिनी माताजी के 70वें जन्मजयंती दिवस पर आयोजित ''कुण्डलपुर महोत्सव'' जन्मभूमि के प्रचार-प्रसार में मील का पत्थर सिद्ध हो, यही शुभेच्छा है।

कैलाशचंद जैन, सर्राफ, लखनऊ

परम पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा एक नहीं अनेक तीर्थंकर जन्मभूमियों एवं कल्याणकभूमियों का विकास अपनी प्रबल प्रेरणा द्वारा कराया गया है, तीर्थंकर शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की जन्मभूमि-हस्तिनापुर, ऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनंदननाथ-सुमतिनाथ एवं अनन्तनाथ तीर्थंकरों की जन्मभूमि-अयोध्या, और अब भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) पूज्य माताजी के कठिन संकल्प एवं परिश्रम से देश-विदेश में चमक गये हैं। मैं अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की समस्त सदस्याओं की ओर से यह विश्वास दिलाना चाहती हूँ कि कुण्डलपुर विकास के लिए हम सब प्राण-प्रण से पूज्य माताजी के साथ हैं।''

जय महावीर! जय कुण्डलपुर! जय गणिनी ज्ञानमती माताजी!

सुमन जैन, इंदौर
(केन्द्रीय महामंत्री-अ.भा.दि. जैन महिला संगठन)

''हम लोग महावीर भगवान की पूजा में हमेशा पढ़ते थे-'जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कनवरना' और आरती में पढ़ते थे-'कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानंद विभो', वैशाली का नाम तो हम लोगों ने कभी पूजा-आरती में पढ़ा नहीं, हाँ ये जरूर मानते थे कि महावीर की माता-महारानी त्रिशला वैशाली के राजा चेटक की पुत्री थीं। अब तो पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा द्वारा विकसित नंद्यावर्त कुण्डलपुर तीर्थ सारे संशयों को विराम देते हुए महावीर के हर भक्त को कुण्डलपुर (नालंदा) की ओर आकर्षित करेगा ही करेगा।

आशा जैन, दिल्ली
(अध्यक्ष-अ.भा.दि.जैन महिला संगठन-दिल्ली प्रदेश)

''आगम के दर्पण में कुण्डलपुर''

-गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती

भगवान महावीर की जन्मभूमि ''कुण्डलपुर'' है ऐसा वर्णन श्रीयतिवृषभआचार्यदेव ने अतिप्राचीन तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ में कहा है।

सिद्धत्थरायपियकारिणीहिं, णयरम्मि कुण्डले वीरो। उत्तरफग्गुणिरिक्खे, चित्तसियातेरसीए उप्पण्णो।।546।।

भगवान महावीर कुण्डलपुर नगर के राजा सिद्धार्थ की रानी प्रियकारिणी के गर्भ से चैत्र शुक्ला तेरस के दिन उत्पन्न हुए हैं।

षट्खण्डागम महाग्रंथ के चतुर्थ खंड में वर्तमान में प्रकाशित 9वीं पुस्तक में लिखा है-

''आषाढ़जोण्हपक्खछट्ठीए कुंडलपुरनगराहिव णाहवंस-सिद्धत्थ-णरिंदस्स तिसिलादेवीए गब्भमागंते तत्थ अट्ठदिवसाहिय णवमासे अच्छिय चइत्तसुक्खपक्ख तेरसीए उत्तराफग्गुणी गब्भादो णिक्खंतो।।''

आषाढ़ मास की शुक्ला षष्ठी के दिन कुण्डलपुर नगर के अधिपति नाथवंशी राजा सिद्धार्थ की रानी त्रिशला देवी के गर्भ में आकर वहाँ आठ दिन अधिक नवमाह पर्यंत रहकर चैत्र शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में भगवान महावीर ने जन्म लिया था।

भगवान का जन्म रात्रि में हुआ था ऐसा कथन इसी ग्रंथ में है–

कुण्डपुरवरिस्सर, सिद्धत्थक्खत्तियस णाहकुले। तिसिलाए देवीए, देवीसदसेवमाणए।।23।।

अच्छित्ता णवमासे, अट्ठ य दिवसे चइत्त-सियपक्खे। तेरसिए रत्तीए, जादुत्तरफग्गुणीए दु।।24।।

अर्थात् कुण्डलपुर नगर के सिद्धार्थ क्षत्रिय के घर नाथकुल में सैकड़ों देवियों से सेवमान त्रिशला देवी के गर्भ में महावीर का जीव आया और वहां नौ माह आठ दिन रहकर चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की रात्रि में उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के रहते हुए भगवान का जन्म हुआ।

इस कुण्डलपुर को अनेक ग्रंथों में कुंडपुर भी कहा है लेकिन यह छोटा सा कुण्डग्राम नहीं है प्रत्युत विदेहदेश की महान-विशाल राजधानी थी। देखिए–

अथ देशोऽस्ति विस्तारी, जम्बूद्वीपस्य भारते। विदेह इति विख्यातः स्वर्गखण्डसमः श्रिया।।1।।
प्रतिवर्षविनिष्पन्नधान्यगोधनसंचितः। सर्वोपसर्गनिर्मुक्तः प्रजासौस्थित्य सुन्दरः।।2।।
सखेटखर्वटाटोपिमटम्बपुटभेदनैः। द्रोणामुखाकरक्षेत्रग्रामघोषैविभूषितः।।3।।
किं तस्य वर्ण्यते यत्र स्वयं क्षत्रियनायकाः। इक्ष्वाकवः सुखक्षेत्रे संभवंति दिवश्च्युताः।।4।।
तत्रखण्डलनेत्रालीपद्मनीखण्डमण्डलम् । सुखाम्भः कुण्डमाभाति नाम्ना कुण्डलपुरं पुरं।5।।
यत्र प्रासादसंघातैः शंखशुभ्रैर्नभस्तलम् । धवलीकृतमाभाति शरन्मेघैरिवोन्नतैः।।6।।
चन्द्रकान्तकरस्पर्शाच्चन्द्रकान्तशिलाः निशि। द्रवन्ति यद्गृहाग्रेषु प्रस्वेदिन्य इव स्त्रियः।।7।।
सूर्यकान्तकरासंगात् सूर्यकान्ताग्रकोटयः। स्फुरन्ति यत्र गेहेषु विरक्तां इव योषितः।।8।।
पद्मरागमणिस्फीतिर्यत्र प्रासादमूर्धनिं। इनपादपरिष्वंगादंगनेवातिरज्यते।।9।।
मुक्तामरकतालौकर्वज्रवैडूर्यविभ्रमैः। एकमेवं सदा धत्ते यत्समस्ताकरश्रियम् ।।10।।
शाल शैलमहावप्रपरिखापरिवेषिणः। यस्योपरि परं गच्छत्यमित्रेतरमण्डलम् ।।11।।

एतावतैव पर्याप्तं पुरस्य गुणवर्णनम् । स्वर्गावतरणे तद्यद्वीरस्याधारतां गतम् ।।12।।
सर्वार्थश्रीमतीजन्मा तस्मिन् सिद्धार्थदर्शनः। सिद्धार्थो भवदर्काभो भूपः सिद्धार्थपौरुषः।।13।।
यत्र पाति धरित्रीयमभूदेकत्र दोषिणी। धर्मार्थिन्योपि यत्त्यक्तपरलोकभयाः प्रजाः।।14।।
कस्तस्य तान् गुणानुद्धान्नस्तुलयितुं क्षमः। वर्द्धमानगुरुत्वं यः प्रापितः स नराधिपः।।15।।
उच्चैःकुलाद्रिसंभूता सहजस्नेहवाहिनी। महिषी श्रीसमुद्रस्य तस्यासीत् प्रियकारिणी।।16।।
चेतश्चेटकराजस्य यास्ताः सप्तशरीरजाः। अतिस्नेहाकुलं चक्रुस्तास्वाद्या प्रियकारिणी।।17।।
कस्तां योजयितुं शक्तस्त्रिशलां गुणवर्णनैः। या स्वपुण्यैर्महावीरप्रसवाय नियोजिता।।18।।

अर्थात् इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में लक्ष्मी से स्वर्गखण्ड की तुलना करने वाला विदेह इस नाम से प्रसिद्ध एक बड़ा विस्तृत देश है। यह देश प्रतिवर्ष उत्पन्न होने वाले धान्य तथा गोधन से संचित है, सब प्रकार के उपसर्गों से रहित है, प्रजा की सुखपूर्ण स्थिति से सुन्दर है और खेट, खर्वट, मटम्ब, पुटभेदन, द्रोणामुख, सुवर्ण-चांदी आदि की खानों, खेत, ग्राम और घोषों से विभूषित है।

जो नगर, नदी और पर्वत से घिरा हो उसे बुद्धिमान पुरुष खेट कहते हैं, जो केवल पर्वत से घिरा हो उसे खर्वट कहते हैं, जो पांच सौ गांवों से घिरा हो उसे पण्डितजन मटम्ब कहते हैं, जो समुद्र के किनारे हो तथा जहां पर लोग नाव से उतरते हों उसे पत्तन या पुटभेदन कहते हैं, जो किसी नदी के किनारे बसा हो उसे द्रोणामुख कहते हैं, जहां सोना-चांदी आदि निकलता हो उसे खान कहते हैं, अन्य उत्पन्न होने की भूमि को क्षेत्र या खेत कहते हैं, जिनमें बाड़ से घिरे हुए घर हों, जिनमें अधिकतर शूद्र और किसान लोग रहते हैं तथा जो बाग-बगीचा और मकानों से सहित हों उन्हें ग्राम कहते हैं और जहां पर अहीर लोग रहते हैं उन्हें घोष कहते हैं। वह विदेहदेश इन सबसे विभूषित था। उस देश का क्या वर्णन किया जाये जहां के सुखदायी क्षेत्र में क्षत्रियों के नायक स्वयं इक्ष्वाकुवंशी राजा स्वर्ग से च्युत हो उत्पन्न होते हैं।

उस विदेहदेश में कुण्डपुर नाम का एक ऐसा सुन्दर नगर है जो इन्द्र के नेत्रों की पंक्तिरूपी कमलिनियों के समूह से सुशोभित है तथा सुखरूपी जल का मानो कुण्ड ही है। जहां शंख के समान सफेद एवं शरदऋतु के मेघ के समान उन्नत महलों के समूह से सफेद हुआ आकाश अत्यन्त सुशोभित होता है? जिसके महलों के अग्रभाग में लगी हुई चन्द्रकांतिमणि की शिलाएं रात्रि के समय चन्द्रमा रूपी पति के कर अर्थात् किरण स्पर्श से स्वेदयुक्त स्त्रियों के समान द्रवीभूत हो जाती हैं। जहाँ के मकानों पर लगे हुए सूर्यकान्तमणि के अग्रभाग की कोटियां, सूर्यरूपी पति के कर अर्थात् किरण के स्पर्श से विरक्त स्त्रियों के समान देदीप्यमान हो उठती हैं। जहां के महलों के शिखर पर लगे हुए पद्मराग मणियों की पंक्ति सूर्य की किरणों के संसर्ग से स्त्री के समान अत्यन्त अनुरक्त हो जाती है। उस नगर में कहीं मोतियों की मालाएं लटक रही हैं, कहीं मरकत मणियों का प्रकाश फैल रहा है, कहीं हीरा की प्रभा फैल रही है और कहीं वैडूर्यमणियों की नीली-नीली आभा छिटक रही है। उन सबसे वह एक होने पर भी सदा सब रत्नोंकी खान की शोभा धारण करता है। कोटरूपी पर्वत, बड़े-बड़े धूलि कुट्टिम और परिवार से घिरे हुए उस नगर के ऊपर यदि कोई जाता था तो मित्र अर्थात् सूर्य का मण्डल ही जा सकता है अमित्र अर्थात् शत्रुओं का मण्डल नहीं जा सकता था। इस नगर के गुणों का वर्णन तो इतने से ही पर्याप्त हो जाता है कि वह नगर स्वर्ग से अवतार लेते समय भगवान महावीर का आधार हुआ आर्थात् भगवान महावीर वहां स्वर्ग से आकर अवतीर्ण हुए।

राजा सर्वार्थ और रानी श्रीमती से उत्पन्न, समस्त पदार्थों को देखने वाले, सूर्य के समान देदीप्यमान और समस्त अर्थ–पुरुषार्थ सिद्ध करने वाले "सिद्धार्थ" वहां के राजा थे। जिन सिद्धार्थ के रक्षा करने

पर पृथिवी इसी एक दोष से युक्त थी कि वहां की प्रजा ने धर्म की इच्छुक होने पर भी परलोक का भय छोड़ दिया था अर्थात् जो प्रजा धर्म की इच्छुक होती है उसे स्वर्ग, नरक आदि परलोक का भय अवश्य रहता है परन्तु परलोक का अर्थ शत्रु लोगों से विरोध दूर हो जाता है अर्थात् वहां की प्रजा धर्म की इच्छुक थी और शत्रुओं के भय से रहित थी। जो राजा सिद्धार्थ साक्षात् भगवान वर्द्धमान के पितृ पद को प्राप्त हुए थे उनके गुणों का वर्णन करने के लिए कौन मनुष्य समर्थ हो सकता है। जो उच्चकुलरूपी पर्वत से उत्पन्न स्वाभाविक स्नेह की मानो नदी थी ऐसी रानी प्रियकारिणी लक्ष्मी के समुद्रस्वरूप राजा सिद्धार्थ की प्रिय पत्नी थी। जिन सात पुत्रियों ने राजा चेटक के चित्त को अत्यधिक स्नेह से व्याप्त कर रखा था उन पुत्रियों में प्रियकारिणी सबसे बड़ी पुत्री थी जो अपने पुण्य से भगवान महावीर को जन्म देने के लिए प्रवृत्त हुई। उस त्रिशला के गुणवर्णन के लिए कौन समर्थ है?

श्री असगकवि विरचित ''वर्द्धमान चरित''में भी कुण्डलपुर का सुन्दर वर्णन आया है यथा–

तत्रास्त्यथो निखिलवस्त्ववगाहयुक्तं, भास्वत्कलाधरबुधैः सवृषं सतारं।
अध्यासितंवियदिवस्वसमानशोभं ख्यातं पुरं जगति कुण्डपुराभिधानं।।
प्राकारकोटिघटितारुणरत्नभासां छायामयैः परिगता पटलैः समंतात्।
आभातिवारिपरिखा नितरामनेकां संध्याश्रियं विदधतीव दिवापि यत्र।।
धौतेन्द्रनीलमणिकल्पितकुट्टिमेषु यत्रोपहाररचितान्यसितोत्पलानि।
एकीकृतान्यपि सलीलतया प्रयांति व्यक्तिं पतद्भ्रमरहुकृंतिभिः समंतात् ।।
जैत्रेषवः सुमनसो मकरध्वजस्य निस्तेजितांबुजरुचो शशलक्ष्मभासः।
अप्रावृषोः नवपयोधरकांतयुक्ता यस्मिनविभान्त्यसरितः सरसा रमण्यः।।
अत्युन्नताः शशिकरप्रकरावदाता मूर्धस्थरत्नरुचिपल्लवितांतरिक्षाः।
उत्संगदेशसुनिविष्टमनोज्ञरामाः पौरा विभांति भुवि यत्र सुधालयाश्च।।
लीलामहोत्पलमपास्य कराग्रसंस्थं कर्णोत्पलंच विगलन्मधु यत्र भृंगाः।
निश्वाससौरभरता वदने पतन्ति स्त्रीणां मृदुर्मृदुकराहतिभीप्सवश्च।।

कुण्डलपुर का वर्णन महाकवि असग ने अपने ''वर्द्धमानचरित'' में किया है। यह नगर सभी प्रकार की वस्तुओं से युक्त परकोटा, खातिका, वापिका एवं वाटिकाओं से परिपूर्ण था। कोट के प्रांत भागों में लगी हुई अरुणमणियां, पन्नाओं की प्रभा के छायामय पटलों से परिपूर्ण होने के कारण संध्याकालीन श्री का सृजन करती थीं। भूमि पर जटित इन्द्रनीलमणियां अपनी आभा से भ्रमरों की भ्रांति उत्पन्न करती थीं। उन्नत भवन और रत्नजटित गोपुर अपने सौन्दर्य से पथिकों के मन को आकृष्ट करते थे। मुक्ताओं की आभा के कारण इस नगर में श्वेत किरणों का वितान तना रहता था। धन-धान्य, पशु-सम्पत्ति आदि से युक्त यह नगर प्रजाजनों को अत्यन्त सुखप्रद था।

भगवान महावीर के समय यह कुण्डलपुर कितना वैभवपूर्ण था उसका वर्णन आपने पढ़ा। वास्तव में जहां सौधर्मइन्द्र की आज्ञा से कुबेर लगातार पन्द्रह महिने तक प्रतिदिन साढ़े सात करोड़-साढ़े सात करोड़ प्रमाण रत्नों की वर्षा करता हो और माता का महल नंद्यावर्त नाम से सात खन का हो तथा जहां माता का पलंग ही रत्नों से निर्मित हो उसके वैभव का हम और आप क्या अनुमान लगा सकेंगे?

ऐसे ही ''वीरजिणिंद चरिउ'' और ''महावीर पुराण''में भी विदेहदेश के अंतर्गत कुण्डपुर में भगवान महावीर का जन्म माना है। ऐसी पावन नगरी कुण्डलपुर जन्मभूमि को मेरा शत-शत नमन।

बजी कुण्डलपुर में बधाई

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

आज से 2600 वर्ष पूर्व भारत की धरती पर तीर्थंकर भगवान महावीर ने जन्म लेकर संसार को अहिंसा का ब्रह्मास्त्र देकर विश्वकल्याण के साथ-साथ अपनी आत्मा को सम्पूर्ण कर्मों से रहित करके निर्वाण धाम को प्राप्त कर लिया और अनंत-अनंत काल के लिए सर्वसुख सम्पन्न सिद्धपद को प्राप्त हो गये।

इतिहास के अनुसार उन्हें मोक्ष प्राप्त हुए 2528 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं उनकी कृतकृत्यता तो किसी के द्वारा भी खंडित नहीं की जा सकती है किन्तु यह समाज का दुर्भाग्य ही कहना होगा कि वर्तमान में उनके जीवन से संबंधित अनेक पहलुओं को आधुनिक इतिहासकारों द्वारा किस प्रकार से विकृत करके प्रस्तुत किया जा रहा है यह एक अत्यन्त चिन्तनीय स्थिति बन गई है। सर्वप्रथम हम उनके जन्मस्थान को ही लेते हैं कि यह तो निःसंदेह कहा जा सकता है कि महावीर का जन्म तो एक ही स्थान पर हुआ था और जहां उनका जन्म हुआ था वहीं पर उनकी माता के आंगन में पंद्रह महीनों तक रत्नों की वृष्टि भी हुई थी, अतः सर्वप्रथम पाठकों का ध्यान जन्मभूमि कुण्डलपुर की ओर आकर्षित किया जा रहा है।

सर्वप्राचीन ग्रंथ (लगभग 2000 वर्ष पूर्व प्राचीन आचार्यों द्वारा लिखित तिलोयपण्णत्ति, धवला-जयधवला, उत्तरपुराण, हरिवंशपुराण, वीरजिणिंदचरिउ, महावीरपुराण, वर्धमानचरित आदि अनेकानेक ग्रंथों में स्पष्ट रूप से विदेहदेश अर्थात् वर्तमान बिहार प्रांत की कुण्डलपुर नगरी में महावीर स्वामिका जन्म राजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला के पवित्र गर्भ से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हुआ था यही बातवर्णित है।

देखें 'कषायपाहुड ग्रंथ की जयधवला टीका-(पृष्ठ 76-77) ''आसाढ़जोण्हपक्खछट्ठीए कुंडपुरणगराहिव-णाहवंस सिद्धत्थणरिंदस्स तिसिलादेवीए गब्भमागंतूण तत्थअट्ठदिवसाहिय णवमासे अच्छिय चइत्त-सुक्कपक्ख-तेरसीए रत्तीए उत्तरफग्गुणीणक्खत्ते गब्भादो णिक्खंतो वड्ढमाणजिणिंदो।'' अर्थात् आषाढ़ महीना के शुक्लपक्ष की षष्ठी के दिन कुण्डपुर (कुण्डलपुर) नगर के स्वामी नाथवंशी सिद्धार्थ नरेन्द्र की त्रिशला देवी के गर्भ में आकर और वहाँ नौ माह आठ दिन रहकर चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन रात्रि में उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के रहते हुए भगवान महावीर गर्भ से बाहर आये।

इसी जयधवला में श्री वीरसेनाचार्य आगे कहते हैं-पृ.78

कुंडपुरपुरवरिस्सर सिद्धत्थक्खत्तियस णाहकुले। तिसिलाए देवीए देवीसदसेवमाणाए।।23।।

अच्छित्ता णवमासे अट्ठ य दिवसे चइत्त-सियपक्खे। तेरसिए रत्तीए जादुत्तरफग्गुणीए दु।।24।।

अर्थात् कुण्डपुर नगर के सिद्धार्थ क्षत्रिय के घर, नाथकुल में, सैकड़ों देवियों से सेवमान त्रिशला देवी के गर्भ में महावीर का जीव आया और वहाँ नौ माह आठ दिन रहकर चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की रात्रि में उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के रहते हुए भगवान का जन्म हुआ।

2. षट्खंडागम[1] के चतुर्थ-खंड एवं नवमी पुस्तक की धवला टीका में पृ. 121 पर भी यह कथन कुण्डलपुर के संबंध में आया है।

1.सन् 1944 में भा.दि. जैन संघ-मथुरा से प्रकाशित। पं. फूलचंद सिद्धांतशास्त्री, पं. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य एवं पं. कैलाशचंद सिद्धांतशास्त्री द्वारा संपादित।

3. तिलोयपण्णत्ती[1] (श्री यतिवृषभाचार्य) चतुर्थ महाधिकार पृ. 210–

सिद्धत्थरायपियकारिणीहिं, णयरम्मि कुंडले वीरो। उत्तरफग्गुणिरिक्खे, चित्तस्यातेरसीए उप्पण्णो।।549।।

4. श्रीजिनसेनाचार्य रचित हरिवंशपुराण[2] के द्वितीय सर्ग में महावीर स्वामी के गर्भकल्याणक प्रकरण में कुण्डलपुर नगरी का विस्तृत वर्णन आया है–

तत्राखण्डलनेत्राली, पद्मनीखण्डमण्डलम् । सुखाम्भः कुण्डमाभाति, नाम्ना कुण्डपुरं पुरम् ।।5।।

अर्थात् उस विदेह देश में कुण्डलपुर नाम का एक ऐसा सुन्दर नगर है जो इन्द्र के नेत्रों की पंक्तिरूपी कमलिनियों के समूह से सुशोभित है तथा सुखरूपी जल का मानो कुण्ड ही है।

5. श्रीगुणभद्राचार्य रचित उत्तरपुराण[3] ग्रंथ में पर्व 74 पर–

राज्ञः कुण्डपुरेशस्य, वसुधाराप तत्पृथु। सप्तकोटीमणीः सार्द्धाः, सिद्धार्थस्य दिनं प्रति।।252।।

अर्थात् ''कुण्डलपुर'' नगर के राजा सिद्धार्थ के घर प्रतिदिन साढ़े तीन करोड़ मणियों की भारी वर्षा होने लगी।

6. महाकवि श्री पुष्पदंत विरचित ''वीर जिणिन्द चरिउ[4]'' में पृष्ठ 11 एवं 15 पर कुण्डलपुर नगरी की शोभा का वर्णन है–

इह जंबुदीवि भरहंतरालि। रमणीय-विसइ सोहा-विसालि।।
कुंडउरि राउ सिद्धत्थु सहिउ। जो सिहिहरु मग्गण-वेस रहिउ।।

इस जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र में विशाल शोभाधारी विदेह प्रदेश में ''कुण्डलपुर'' नगर के राजा सिद्धार्थ राज्य करते हैं।

आगे इसी में सौधर्म इन्द्र के शब्दों में धनकुबेर को दिये गये आदेशानुसार नगरी सजाने का वर्णन भी आया है।

ता कयउ कुंडपुरु तेण चारु। सव्वत्थ रयण-पायार-भारु।। सव्वत्थ रइय णाणा दुवारु। सव्वत्थ परिह परिरुद्ध चारु।।

इन्द्र की आज्ञानुसार कुबेर ने ''कुण्डलपुर'' को ऐसा ही सुन्दर बना दिया। उसके चारों तरफ रत्नमयी प्राकार बन गया। जिसके सब ओर नाना प्रकार के द्वार थे और उसके चारों ओर ऐसी परिखा थी जिससे वहाँ शत्रुओं का संचार अवरुद्ध हो जाये।

7. श्रीमहावीरपुराण[5] (आचार्य श्री सकलकीर्ति विरचित) के पृष्ठ 43 पर

भरतक्षेत्र के इसी विदेहदेश के ठीक मध्य में ''कुण्डपुर'' एक अत्यन्त रमणीक नगर है। यहाँ पर धर्मात्माओं का विशेष रूप से निवास है। यहाँ के कोट, द्वार एवं अलंघ्य खाइयों को देखकर अपराजिता अयोध्या नगरी का भान होता है।.......यहाँ के ऊँचे-ऊँचे एवं स्वर्ण रत्नों से निर्मित जैन मंदिरों को देखकर लोगों को **कुण्डलपुर** के प्रति अपार श्रद्धा जागृत होती थी। वह नगर धर्म का समुद्र जैसा प्रतीत होता था।.........उस नगर के राजा का

1. श्री जैन संस्कृति संरक्षक संघ-सोलापुर से सन् 1990 में प्रकाशित एवं फूलचंद्र सिद्धांतशास्त्री द्वारा सम्पादित।
2. सोलापुर से ही सन् 1956 में प्रकाशित एवं प्रो ए.एन. उपाध्ये एवं प्रो. हीरालाल सिद्धांतशास्त्री द्वारा सम्पादित।
3. भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित सन् 1978 में। 4. भारतीय ज्ञानपीठ से सन् 2000 में प्रकाशित।
5. सन् 1974 में भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित। 6. जैन साहित्य सदन, दिगम्बर जैन लाल मंदिर-दिल्ली से प्रकाशित।

नाम ''सिद्धार्थ'' था।

इसी कुण्डलपुर नगरी में भगवान महावीर के जन्मवर्णन के साथ सौधर्मेन्द्र द्वारा सुमेरुपर्वत पर जन्माभिषेक करके वापस वर्धमान शिशु को लाकर माता-पिता की गोद में सौंपने का बड़ा रोमांचक वर्णन विशेष पठनीय है–

''इस प्रकार भगवान का नामकरण कर इन्द्र ने देवों के साथ उनको ऐरावत गजराज पर बिठाकर ''कुण्डलपुर'' की ओर प्रस्थान कर दिया। देवों की सारी मंडली बड़े उत्सव के साथ कुण्डलपुर में आ पहुँची।.....वहाँ जाकर इन्द्राणी ने मायामयी निद्रा में लीन महारानी को जगाया। उन्होंने बड़े प्रेम से आभूषणों से युक्त अपूर्व कान्तिवाले पुत्र को देखा।

8. श्री पुष्पदंत कवि रचित महापुराण (भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित) में पृष्ठ 310-312-313 पर भी जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में कुण्डलपुर नगरी के राजा सिद्धार्थ का वर्णन, देवों द्वारा कुण्डलपुर की सजावट एवं वहीं पर सिद्धार्थ राजा के महल में रत्नवृष्टि का कथन दृष्टव्य है–

घरपंगणि तासु रायहु सुहपब्भारहिं। वुट्ठउ धणणाहु अविहंडियधणधारहिं।।8।। (पृ. 313)

अर्थात् उस राजा के आंगन में सुख के प्रभारों से युक्त अखण्डित धन-धाराओं के द्वारा कुबेर स्वयं बरस रहा है।

आगे इसी प्रकरण में कुण्डलपुर में ही महावीर स्वामी का जन्म होना बतलाया है।

यह तो मात्र आठ प्रमुख प्राचीन दिगम्बर जैन ग्रंथों के अनुसार मैंने महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर नगरी का अस्तित्व पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है और इनमें सब जगह महावीर के ननिहाल राजा चेटक की राजधानी के रूप में ''वैशाली'' का वर्णन आता है।

इन पूर्वाचार्यों की वाणी के आधार पर ही दिगम्बर जैन परम्परा के समस्त विद्वान, लेखक और कवि अपनी रचनाओं में कुण्डलपुर का वर्णन करते नहीं थकते थे। जैसे-महावीर पूजा में ही पढ़ा जाता है–

9. ''जनम चैतसित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कन वरना।।''
सुरगिरि सुरगुरु पूज कियो नित, मैं पूजों भव हरना।।

नाथ मोहि राखो हो शरणा.....श्री वर्धमान जिनरायजी,
मोहि राखो हो शरणा।।''

10. कविवर हरप्रसाद जी द्वारा रचित 'महावीर आरती' में भी भक्तगण श्रद्धापूर्वक पढ़ते हैं–

''ॐ जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानंद विभो।।ॐ जय।।''

आगम एवं परम्परा का अनुकरण करते हुए सैकड़ों कवियों ने वर्धमान महावीर के चरणों में श्रद्धासुमन समर्पित करते हुए उनकी पावन जन्मभूमि ''कुण्डलपुर'' को अपनी कृतियों में महत्वपूर्ण स्थान दिया है, उनमें से कतिपय अर्वाचीन कृतियाँ (20वीं शताब्दी में लिखी गईं) भी मेरे देखने में आई हैं।

11. सन् 1941 में श्री 1008 महावीर जैन कीर्तन मण्डल, धर्मपुरा–दिल्ली से प्रकाशित **''महावीर जन्मोत्सव की कथा''** में कवि ने लिखा है–

तर्ज-राधेश्याम.....

छः माह पेशतर रतनों की कुण्डलपुर में वर्षा होती।
प्रतीत हुआ विद्वानों को अब जागेगी कोई ज्योती।।

आषाढ़ सुदी छठ जब आई और समय रात्रि का आया था।
त्रिशला देवी को गर्भ रहा यह ग्रंथों में बतलाया था।।

12. ''तीर्थंकर महावीर भक्ति गंगा'' नामक संकलन कृति में ''धर्मविलास'' के पृ. 51 की कविता भी दृष्टव्य है–

वर्धमान! जस वर्धमान अच्युत विमान गति। नगर कुण्डलपुर धार सार सिद्धारथ भूपति।।
रानी प्रियकारनी बनी कंचन छवि छाया। आयु बहत्तर बरस, जोग खरगासन ध्याया।।
तुम सात हाथ मृगनाथ पति तेमनै अब लों। धरम जर सिर नाय नमौ जुग जोरि कर।।

–धर्म विलास पृ. 51

अर्थ-हे वर्धमान प्रभो! आपका यश निरन्तर वर्धमान है। आप अच्युत विमान को त्याग कर कुण्डलपुर नगर में पधारे। उस नगर के राजा सिद्धार्थ आपके पिता थे और रानी प्रियकारिणी (त्रिशला) आपकी माता थीं। आपके शरीर की आभा स्वर्ण जैसी थी। आपकी आयु बहत्तर वर्ष की थी । आपने दीक्षा लेकर खड्गासन से ध्यान लगाया था। आपकी अवगाहना सात हाथ की थी, सिंह आपका लांछन (चिन्ह) है। आपकेद्वारा प्ररूपित धर्म ही अब तक जगत में परमधर्म का मूल है। प्रभो! बद्धांजलि होकर मैं आपकेचरणों में सिर झुकाता हूँ।

13. उपर्युक्त कृति की ही एक कविता और भी (कविवर श्री ''बुधमहाचन्द्र'' द्वारा रचित) यहाँ प्रस्तुत है–

सिद्धारथ राजा दरबारे बटत बधाई संग भरो हो।।टेक.।।
त्रिशला देवी ने सुत जायो वर्द्धमान जिनराज बरी हो,
कुण्डलपुर में घर-घर द्वारे होय रही आनंद घरी हो।।1।।
रत्नन की वर्षा को होते पंद्रह मास भये सगरी हो,
आज गगन दिश निरमल दीखत पुष्पवृष्टि गंधोद झरी हो।।2।।
जन्मन जिनके जग सुख पाया दूरि गये सब दुक्ख टरी हो।
अन्तर मुहूर्त नारकी सुखिया ऐसो अतिशय जन्म धरी हो।।3।।
दान देन नृप ने बहुतेरो जाचिक जन मन हर्ष करी हो,
ऐसे वीर जिनेश्वर चरणों 'बुध महाचन्द्र' जु सीस धरी हो।।4।।

अर्थ–महाराज सिद्धार्थ के दरबार में आज रंगभरी बधाई बट रही हैं। देवी त्रिशला ने पुत्र प्रसव किया है। वह पुत्र (अंतिम तीर्थंकर) जिनराज वर्धमान हैं। कुण्डलपुर में घर-घर और द्वार-द्वार आनन्द की यह शुभ घड़ी व्याप्त हो रही है। अहो! रत्नों की वर्षा होते पन्द्रह मास हो गये। आज आकाश, दिशाएं निर्मल प्रतीत हो रही हैं और पुष्प वृष्टि हो रही है, गन्धोदक की झड़ी 'वर्षा' लगी हुई है। भगवान के जन्म ग्रहण करते समय संसार ने सुख पाया और सब दुःख दूर हो गये, टल गये। भगवान का अतिशययुक्त जन्म वर्णन कैसे किया जाये उस समय अन्तर्मुहूर्त के लिए नारकियों को भी सुख प्राप्ति हुई। राजा ने बहुत सा दान देकर याचकों तथा जनमानस को प्रहर्षित कर दिया। ऐसे वीर जिनेश्वर के चरणों में 'बुध महाचन्द' मस्तक नमाते हुए विनय भक्ति करते हैं।

14. श्री ताराचंद जैन शास्त्री द्वारा लिखित सन् 1977 में प्रकाशित **''जीवन झांकी तीर्थंकर महावीर''** के प्रथम पद्य में–

आओ दिखाएं जीवन-झांकी, महावीर भगवान की। सिद्धारथ के राजदुलारे, त्रिशला मां के प्राण की।।
क्षत्रिय नाश वंश प्राची के, दिनकर श्री महावीर थे। कुण्डलपुर में जन्म लिया था,जन्मजात अति वीर थे।।

चैत्र शुक्ल तेरस के दिन की शोभासीम निराली थी। राजमहल, पुरजन, परिजनके मुख पर छाई लाली थी।।
रत्नों, पुष्पों की वर्षा हुई, वृद्धि हुई धन-धान की।। आओ दिखाएं, जीवन-झांकी महावीर भगवान की।
सिद्धारथ के राजदुलारे, त्रिशला मां के प्राण की।।

15. श्री कृष्ण जैन द्वारा लिखित **''भगवान महावीर और उनका दिव्य सन्देश''** (अप्रैल 1976 में प्रकाशित) पद्य में भगवान महावीर के जन्म समय का सुन्दर प्रकरण है–

अज्ञानमय इस लोक में, आलोक सा छाने लगा। होकर मुदित सुरपति नगर में रत्न बरसाने लगा।।
उदित बालक की प्रभा, ज्ञान ज्योति प्रगट होने लगी। नभ की दिशा की कालिम अभिनव उषा धोने लगी।
द्वार - द्वार पर सज उठे, तोरण बन्दनवार। कुण्डलपुर नगरी में हुआ, वीर प्रभु अवतार।।
प्राची दिशा के अंग में नूतन दिवाकर आ गया। सत्य अहिंसा का आलोक पुनः जग में छा गया।।

प्रसंगोपात्त कुछ ग्रंथ एवं पुस्तकों के नाम मात्र यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं जिनमें कुण्डलपुरी का वर्णन लेखकों ने किया है, पाठकगण यथासंभव स्वाध्याय के द्वारा इनका अवलोकन करें–

16. ''अहिंसा के अवतार भगवान महावीर'' लेखक-पूज्य आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज (प्रकाशक-जैनमित्र मण्डल-देहली, अप्रैल सन् 1956)

17. ''जैनतीर्थ और उनकी यात्रा'', लेखक-श्री कामताप्रसाद जैन, प्रकाशक-भारतीय दिगम्बर जैन परिषद, मार्च 1969

18. ''भगवान महावीर और उनका समय'' लेखक-पंडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्रकाशक-हीरालाल पन्नालाल जैन-देहली मार्च 1934

19. ''महाश्रमण महावीर'' लेखक-पं. सुमेरचंद दिवाकर, प्रकाशित सन् 1968

20. ''भगवान महावीर'' (जीवन दर्शन) लेखक-पं. सुमेरचंद दिवाकर, प्रकाशित सन् 1970

21. ''भगवान महावीर और उनका संदेश'', लेखक-पं. परमेष्ठीदास जैन, प्रकाशित सन् 1975

22. ''तीर्थंकर महावीर'' लेखक-अनूपचंद जैन, प्रकाशित-अप्रैल सन् 1993

23. ''वृहद् महावीर कीर्तन'' प्रकाशित-दिसम्बर सन् 1962, श्री दिगम्बर जैन वीर पुस्तकालय महावीर जी (राज.)

24. ''महावीर चालीसा''–

जनम लिया कुण्डलपुर नगरी, हुई सुखी तब प्रजा सगरी।
सिद्धारथ जी पिता तुम्हारे, त्रिशला की आँखों के तारे।।

25. ''भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ'' (सन् 1975 में हीराबाग-मुम्बई से प्रकाशित) नामक ग्रंथ में बिहार प्रान्त के तीर्थों का वर्णन करते हुए पं. श्री बलभद्र जैन ने कुण्डलपुर तीर्थ के विषय में लिखा है–

''कुण्डलपुर बिहार प्रान्त के पटना जिले में स्थित है। यहाँ का पोस्ट ऑफिस नालंदा है और निकट का रेलवे स्टेशन भी नालंदा है। यहाँ भगवान महावीर के गर्भ, जन्म और तपकल्याणक हुए थे, इस प्रकार की मान्यता कई शताब्दियों से चली आ रही है। यहाँ पर एक शिखरबन्द मंदिर है जिसमें भगवान महावीर की श्वेतवर्णी साढ़े चार फुट अवगाहना वाली भव्य पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। वहाँ वार्षिक मेला चैत्र सुदी द्वादशी से चतुर्दशी तक महावीर के जन्मकल्याणक को मनाने के लिए होता है।''

26. पण्डित श्री कैलाशचंद्र जैन सिद्धांतशास्त्री द्वारा लिखित **''जैनधर्म''** नामक पुस्तक (सन् 1948 में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ, मथुरा चौरासी से प्रकाशित) में पृ.18 पर भगवान महावीर के बारे में

स्पष्ट वर्णन है–

"भगवान महावीर अंतिम तीर्थंकर थे। लगभग 600 ई पूर्व बिहार प्रान्त के "कुण्डलपुर" नगर के राजा सिद्धार्थ के घर में उनका जन्म हुआ। उनकी माता त्रिशला वैशाली नरेश राजा चेटवकी पुत्री थीं। महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हुआ था। इस दिन भारतवर्ष में महावीर की जयंती बड़े धूम-धाम से मनाई जाती है।"

27. भारत गौरव पूज्य आचार्य श्री देशभूषण महाराज द्वारा रचित **"भगवान महावीर और उनका तत्त्वदर्शन"** (सन् 1974 में श्री जैन साहित्य समिति, कूचा बुलाकी बेगम, ऐस्प्लेनेड रोड-देहली) में भी जगह-जगह भगवान महावीर का कुण्डलपुर नगरी में जन्म लेना, बालक्रीड़ा करना आदि जीवन को दर्शाया है।

विषय की अधिकता के कारण यहाँ अत्यधिक प्रमाणों का उल्लेख नहीं किया जा रहा है किन्तु यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि सम्पूर्ण दिगम्बर जैन आगम ग्रंथ इसी सत्य को स्वीकार करते हैं कि भगवान महावीर ने बिहार प्रान्त के कुण्डलपुर नगर में जन्म लेकर सम्पूर्ण विश्व को अहिंसा के अमर सिद्धांत से प्रभावित किया था। उनके इस व्यापक प्रभाव के कारण ही कुछ इतिहासकारों ने उन्हें जैनधर्म का संस्थापक कह दिया जबकि पंडित श्री सुमेरचंद दिवाकर के शब्दों में **"महावीर को जैनधर्म का संस्थापक न कहकर पुनरुद्धारक"** कहना चाहिए। इस प्रकार **जैनधर्म के पुनरुद्धारक भगवान महावीर एवं उनकी पवित्र जन्मभूमि कुण्डलपुर** के प्रति मेरी विनम्र विनयांजलि अर्पित है।

नारी जागरण की अनूठी मासिक पत्रिका

"ऋषभदेशना"

के स्थायी सदस्य बनकर अपने परिवार को संस्कारित करें!

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से सन् 11 मार्च 1996 को गठित महिलाओं की एकमात्र संस्था "अखिल भारतीय दिगम्बर महिला संगठन" द्वारा निकाली जा रही अनूठी मासिक पत्रिका "ऋषभ देशना" के सदस्य बनकर घर बैठे अपने परिवार एवं समाज में धार्मिक व सामाजिक चेतना को जागृत करने के साथ-साथ सुसंस्कारों का बीजारोपण कर सामाजिक कुरीतियों को दूर करने, सदाचार, शाकाहार एवं अहिंसा के प्रचार-प्रसार में सहयोगी बनें।

–:शुल्क का विवरण:–

व्यक्तिगत वार्षिक सदस्यता	–	51.00 रु.
व्यक्तिगत आजीवन सदस्यता	–	501.00 रु.
व्यक्तिगत सहयोगी सदस्यता	–	1001.00 रु.
व्यक्तिगत विशिष्ट सदस्यता	–	5001.00 रु.
इकाई का सम्बद्धता शुल्क (वार्षिक)	–	151.00 रु.

-:संपर्क सूत्र:-

श्रीमती सुमन जैन–महामंत्री (प्रधान संपादिका)

एम.एस.जे. हाउस, 36/37, कंचनबाग, इंदौर-452001

फोन-(0731) 520034, 513351

भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अंतर्गत
भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा)बिहार में

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से हो रहे निर्माण एवं जीर्णोद्धार कार्य कराने हेतु हम कृतसंकल्प हैं।

साथ ही

कुण्डलपुर में आयोजित ''कुण्डलपुर महोत्सव'' के शुभ अवसर पर

भगवान महावीर के श्रीचरणों में
शत-शत नमन करते हुए
हम राज्य-राष्ट्र के लिए मंगल कामना करते हैं।

अध्यक्ष	*उपाध्यक्ष*	*महामंत्री*
कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन	महावीर प्रसाद जैन (संघपति), दिल्ली	अनिल कुमार जैन, दिल्ली
कोषाध्यक्ष	*उपाध्यक्ष*	*महामंत्री*
कैलाशचंद जैन, दिल्ली	रामगोपाल जैन, पटना	अजय कुमार जैन, आरा-पटना

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति
नंद्यावर्त महल
पो.-कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार
फोन नं. (06112) 281846, मो. 9835020297

भगवान ऋषभदेव की दीक्षास्थली-ऋषभदेव तपस्थली, प्रयाग तीर्थ के दर्शन अवश्य करें!

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं ज्ञानकल्याणक भूमि प्रयाग में इलाहाबाद-बनारस हाइवे पर **पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी** की प्रेरणा से ''**तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली**'' तीर्थ का निर्माण हुआ है। दीक्षाकल्याणक तपोवन, समवसरण तथा कैलाशपर्वत से समन्वित इस तीर्थ के दर्शन कर सातिशय पुण्य का बंध करें। तीर्थ पर यात्रियों के आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था है।इलाहाबाद रेलवे स्टेशन से तीर्थ १३ किमी. है। तीर्थ पर पहुँचने के लिए लोकल सिटी बसें व टैम्पों मिलते हैं।

इंजी. आर.के. जैन (मंत्री)
अरुण जैन (मेला मंत्री)

पता- तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग, दिगम्बर जैन तीर्थ
इलाहाबाद-बनारस हाइवे, निकट अंदावा
पो.-इलाहाबाद (उ.प्र.) फोन नं.-(०५३२) २५६७०६७

तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ वंदना

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

शेर छन्द –

जय जय जिनेन्द्र जन्मभूमियाँ प्रधान हैं।
जय जय जिनेन्द्र धर्म की महिमा महान है।।
जय जय सुरेन्द्रवंद्य ये धरा पवित्र हैं।
जय जय नरेन्द्र वंद्य ये तीरथ प्रसिद्ध हैं।।1।।

मिश्री से जैसे अन्न में मिठास आती है।
वैसे ही पवित्रात्मा तीरथ बनाती हैं।।
हो गर्भ जन्म दीक्षा व ज्ञान जहाँ पर।
वे तीर्थ कहे जाते हैं आज धरा पर।।2।।

जिनवर जनम से पहले वहाँ इन्द्र आते हैं।
नगरी को सुसज्जित कर उत्सव मनाते हैं।।
सुंदर महल सजाया जाता है वहाँ पर।
जिनवर के पिता-माता रहते हैं वहाँ पर।।3।।

पहली जनमभूमि है नगरि तीर्थ अयोध्या।
शाश्वत जनमभूमी प्रभू की कीर्ति अयोध्या।।
इस युग में किन्तु पाँच जिनेश्वर वहाँ जन्मे।
वृषभाजित अभीनंदन सुमति अनंत वे।।4।।

श्रावस्ती ने संभव जिनेन्द्र को जनम दिया।
कौशाम्बी में श्रीपद्मप्रभू ने जनम लिया।।
वाराणसी सुपार्श्व पार्श्व से पवित्र है।
श्रीचन्द्रपुरी चन्द्रप्रभू से प्रसिद्ध है।।5।।

काकन्दी को सौभाग्य मिला पुष्पदंत का।
है भद्रपुरी जन्मस्थल शीतल जिनेन्द्र का।।
श्रेयाँसनाथ से पवित्र सारनाथ है।
जिनशास्त्रों में जो सिंहपुरी से विख्यात है।।6।।

श्रीवासुपूज्य जन्मभूमि चम्पापुरी है।
कम्पिल जी विमलनाथ जिनकी जन्मस्थली है।।
तीरथ रतनपुरी है धर्मनाथ की भूमी।
रौनाही से प्रसिद्ध है वह आज भी भूमी।।7।।

श्रीशांति कुंथु अरहनाथ हस्तिनापुर में।
जन्में जिनेन्द्र तीनों त्रयलोक भी हरषे।।
मिथिलापुरी में मल्लि व नमिनाथ जी जन्मे।
तीर्थेश मुनिसुव्रत जी राजगृही में।।8।।

है जन्मभूमि शौरीपुर नेमिनाथ की।
महावीर से कुण्डलपुरी नगरी सनाथ थी।।
चौबीस जिनवरों की जन्मभूमि को नमूँ।
कर बार-बार वंदना सार्थक जनम करूँ।।9।।

श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
कई जन्मभूमियों में नई ज्योति तब जली।।
उन प्रेरणा से जन्मभूमि वन्दना रची।
प्रभु जन्मभूमि तीर्थों की भक्ति मन बसी।।10।।

प्रभु बार-बार मैं जगत में जन्म ना धरूँ।
इक बार जन्मधार बस जीवन सफल करूँ।।
इस भाव से ही जन्मभूमि वन्दना करूँ।
निज भाव तीर्थ प्राप्ति की अभ्यर्थना करूँ।।11।।
यह भक्तिसुमन थाल है गुणमाल का प्रभु जी।

अर्पण करूँ है भावना यात्रा करूँ सभी।।
बस ''चन्दनामती'' की इक आश है यही।
संयम की ही परिपूर्णता जीवन की हो निधी।।12।।

तीर्थंकर महावीर स्वामी के जीवन परिचय से संबंधित कतिपय प्रेरणाबिन्दु, जो दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्परानुसार भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों में विभक्त हैं-

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

श्वेताम्बर–महावीर पहले देवानंदा नामक ब्राह्मणी के गर्भ में आये पुनः इन्द्र ने उनका गर्भपरिवर्तन करके रानी त्रिशला के गर्भ में स्थापित किया।

दिगम्बर –भगवान महावीर ने त्रिशला के गर्भ में ही अवतार लिया।

श्वेताम्बर–बिहार प्रान्त के 'लिछवाड़' ग्राम में महावीर का जन्म हुआ था।

दिगम्बर –महावीर का जन्म विदेह देश (वर्तमान बिहार प्रान्त) की कुण्डलपुर नगरी में (वर्तमन नालंदा जिला के अंदर) हुआ था।

श्वेताम्बर–वे माता-पिता एवं गुरु को नमस्कार करते थे।

दिगम्बर –महावीर अपने माता-पिता, मुनि आदि किसी को भी नमस्कार नहीं करते थे। तीर्थंकर प्रकृति के नियमानुसार सभी तीर्थंकर केवल सिद्धों को नमन करते हैं और किसी को नहीं।

श्वेताम्बर–यशोदा नामक राजकुमारी के साथ उनका विवाह हुआ और उनकी प्रियदर्शना नामक पुत्री थी। उसके पश्चात् राज्य संचालन कर वे दीक्षाधारण कर देवदूष्य वस्त्रों को पहनते थे और दीक्षा के दूसरे वर्ष में उन्होंने उसका भी त्याग कर दिया था और वे अचेलक हो गये थे।

दिगम्बर –महावीर ने 30 वर्ष की युवावस्था में दिगम्बर जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की, वे बालब्रह्मचारी थे। महावीर अपनी माता के इकलौते पुत्र थे क्योंकि तीर्थंकर माता मात्र एक पुत्रको ही जन्म देती है।

श्वेताम्बर–महावीर यत्र-तत्र ग्रामों में विहार करते रहे और सबसे वार्तालाप करते रहे। चंडकौशिक सर्प के काटने पर उनके पैरों से दूध की धारा निकल पड़ी, उनके शरीर पर कीलें ठोकी गईं।

दिगम्बर –दीक्षा के बाद महावीर ने मौनपूर्वक विहार किया और 12 वर्ष की तपस्या करके केवलज्ञान प्राप्त किया।

श्वेताम्बर–महावीर के ऊपर जगह-जगह तमाम नगरों में उपसर्ग हुआ। लोगों ने उन्हें बांधा, मारा, जेल में डाल दिया, उछालकर फेंक दिया, आग लगा दी.....इत्यादि।

दिगम्बर –महावीर पर उज्जयिनी के अतिमुक्तक वन में ध्यानावस्था में रुद्र ने मात्र एक बार उपसर्ग किया और ध्यान के बल पर उपसर्ग को जीतकर महावीर तीर्थंकर बने। दिगम्बर परम्परानुसार कोई भी उपसर्गकर्ता तीर्थंकर के शरीर को स्पर्श नहीं कर सकता है, उपसर्ग उनके चारों ओर होता है, तीर्थंकर को कोई कष्ट नहीं हो सकता है। महावीर अपने जीवन में कभी बीमार नहीं हुए, क्योंकि तीर्थंकर के शरीर में प्रारंभ से अंत तक कोई रोग नहीं होता है।

श्वेताम्बर–गोशालक ने भगवान महावीर पर तेजोलेश्या का प्रहार किया।

दिगम्बर –गोशालक नामक कोई व्यक्ति भगवान महावीर के जीवनकाल में नहीं हुआ।

श्वेताम्बर–भगवान महावीर ने दीक्षा के पश्चात् चातुर्मास किये।

दिगम्बर –तीर्थंकर दीक्षा के पश्चात् वर्षायोग नहीं करते।

श्वेताम्बर–श्वेताम्बर में दिगम्बर चित्र बनाते हुए उसके आगे पेड़ आड़ा कर देते हैं, सामने सर्प या आशीर्वाद का हाथ आड़ा करके नग्नता को ढक देते हैं।

दिगम्बर –भगवान महावीर को दीक्षा लेने के पश्चात् नग्न दिगम्बर अवस्था में दिखाया जाता है।

श्वेताम्बर–भगवान महावीर ने गौतम गणधर को निर्वाण जाने के समय अन्यत्र भेज दिया ताकि उनको वियोग का दुःख न हो।

दिगम्बर –भगवान महावीर ने अपने निर्वाण काल की बेला में गौतम गणधर को अन्यत्र जाने का आदेश नहीं दिया क्योंकि वे तो पूर्ण वीतरागी थे।

श्वेताम्बर–महावीर की माता ने 14 स्वप्न देखे।

दिगम्बर –महावीर की माता ने 16 स्वप्न देखे जैसा कि प्रत्येक तीर्थंकर की माता अपने गर्भ में तीर्थंकर के आने पर 16 स्वप्न ही देखती हैं।

श्वेताम्बर–रानी त्रिशला के महावीर से पहले एक पुत्र नंदीवर्धन तथा पुत्री सुदर्शना थे अर्थात् महावीर से पूर्व उनके एक भाई और एक बहन थी।

दिगम्बर –रानी त्रिशला के केवल एक ही पुत्र भगवान महावीर थे।

श्वेताम्बर–महावीर का एक नाम वैशालिक भी माना है।

दिगम्बर –किन्हीं भी ग्रंथों में भगवान महावीर का नाम वैशालिक नहीं आया।

श्वेताम्बर–महावीर से पूर्व महाश्रमण केशी कुमार हुए ऐसा माना है।

दिगम्बर –भगवान महावीर से पूर्व केशी कुमार नाम के कोई महामुनि नहीं हुए।

श्वेताम्बर–माता त्रिशला ने महाराजा के शयनकक्ष में जाकर उनको जगाकर अपने स्वप्न बताये। उनका फल राजदरबार में विद्वान पंडितों को बुलाकर पूछा।

दिगम्बर –माता त्रिशला पिछली रात्रि में स्वप्न देखकर अगले दिन प्रातः राजदरबार में जाकर महाराज सिद्धार्थ से स्वप्नों का फल पूछती हैं।

श्वेताम्बर–गर्भ में यह जानकर कि माता को कष्ट हो रहा है महावीर ने हलनचलन बंद कर दिया था। उनका यह नियम था कि जब तक माता-पिता जीवित रहेंगे तब तक दीक्षा नहीं लूंगा।

दिगम्बर –गर्भधारण करने से माता को कोई कष्ट नहीं था, न ही गर्भ में महावीर ने ऐसा कोई नियम लिया कि माता-पिता के जीवित रहने तक दीक्षा नहीं लूंगा।

श्वेताम्बर–पांडुकशिला पर इन्द्र भगवान को गोद में लेकर बैठता है।

दिगम्बर –जन्माभिषेक के समय इन्द्र भगवान को गोद में लेकर पांडुकशिला पर नहीं बैठता है।

श्वेताम्बर–बाल्यावस्था में महावीर स्कूल में पढ़ने गये।

दिगम्बर –तीर्थंकर स्कूल में पढ़ने नही जाते हैं वे तो जन्म से ही तीन ज्ञान के धारी होते हैं।

श्वेताम्बर–माता-पिता आदि को प्रणाम करते हैं।

दिगम्बर –दीक्षा के पूर्व या पश्चात् तीर्थंकर माता-पिता अथवा मुनियों को भी नमस्कार नहीं करते।

श्वेताम्बर–भगवान ने अशोक वृक्ष के नीचे दीक्षा धारण की।

दिगम्बर –भगवान ने साल वृक्ष के नीचे दीक्षा धारण की।

श्वेताम्बर–ध्यानस्थ अवस्था में गोशालक उनके पास बैल बांध गया पुनः आने पर बैल नहीं मिले तो उस गोशालक ने महावीर स्वामी को कोड़े मारे।

दिगम्बर –महावीर स्वामी के दीक्षा लेने के पश्चात् किसी भी गोशालक ने कोई उपसर्ग नहीं किया।

श्वेताम्बर–इन्द्र ने भगवान महावीर के दीक्षा काल में आने वाले उपसर्गों से रक्षा के लिए साथ में रहने

का निवेदन किया किन्तु भगवान ने मना कर दिया।

दिगम्बर –इन्द्र ने कभी भी भगवान महावीर को दीक्षा काल में यातनाओं से बचाने के लिए साथ में रहने का निवेदन नहीं किया।

श्वेताम्बर–मोराक ग्राम के तापस आश्रम में चातुर्मास किया तथा कुटिया की घास गायों द्वारा खा जाने पर कुलपति ने महावीर को उपालंभ दिया। इस पर महावीर आश्रम छोड़कर अन्यत्र चले गये।

दिगम्बर –मुनि अवस्था में मोराक नगर के तापस आश्रम में नहीं ठहरे।

श्वेताम्बर–भिक्षा, गवेषणा मार्ग, ज्ञान तथा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर के अतिरिक्त मौनपूर्वक रहने का नियम लिया।

दिगम्बर –दीक्षा लेने के पचात् तीर्थंकर किसी से किसी भी प्रकार का वार्तालाप, चर्चा, शंका-समाधान आदि नहीं करते। (दीक्षा लेने से केवलज्ञान होने तक)

श्वेताम्बर–भ्रमण काल में अस्तिक ग्राम में एक सुनसान वैदिक मंदिर में ठहरे वहाँ के यक्ष ने घोर उपसर्ग किया। अंत में हारकर भक्त बन गया।

दिगम्बर –विहारकाल में अस्तिक ग्राम में किसी भी वैदिक मंदिर में नही ठहरे।

श्वेताम्बर–कनखल आश्रम से श्वेताम्बी जाने के रास्ते में ध्यान में खड़े महावीर पर चण्डकौशिक सर्प ने दंशा घात किया जिसमें महावीर के पैर से दूध की धारा बह निकली। सर्प शांत हो गया उसे घी शक्कर अर्पित करने लगे जिससे उस पर असंख्य चीटियाँ चढ़ गई जिससे मरकर देव बन गया।

दिगम्बर –भगवान के विहार में कनखल आश्रम में जाने का कोई विवरण नहीं आता।

श्वेताम्बर–संगम देव ने दीक्षित अवस्था में कभी पत्नी बनकर, कभी रूप लावण्य स्त्री का रूप धरकर, कभी पक्षी बनकर, कभी भगवान को चोरीकला का गुरु घोषित कर, कभी हाथी आदि जंगली जानवर बनकर 6 माह तक घोर उपसर्ग किया।

दिगम्बर –संगम देव ने सर्प बनकर भगवान महावीर की बाल्यकाल में मात्र एक दिन वीरता की परीक्षा ली थी।

श्वेताम्बर–संगमदेव की पापवर्धित क्रियाओं को देखकर उसके प्रति करुणा भाव से भगवान महावीर के नेत्र सजल हो गये।

दिगम्बर –भगवान महावीर दीक्षित अवस्था में कष्टों से अथवा स्नेहवश कभी भी रोये नहीं (अश्रुपात नहीं हुए)।

श्वेताम्बर –गोकुल ग्राम में गोपी वत्सपालिका के यहाँ छह मास के उपवास के बाद पारणा हुआ।

दिगम्बर –ऐसा कोई पारणा नहीं हुआ क्योंकि महावीर इस तरह यत्र-तत्र भोजन-पारणा नहीं करते थे।

श्वेताम्बर –दीक्षा के 13वें वर्ष में घम्माणी ग्राम में एक ग्वाले ने घोर उपसर्ग किया। अपने बैल ध्यानस्थ भगवान के पास छोड़ गया। लौट कर आने पर बैल नहीं मिलने पर क्रोधित होकर उस ग्वाले ने भगवान के दोनों कानों में लकड़ी की कीलें ठोंकी इस असहनीय कष्ट को भगवान ने मौनभावपूर्वक सहन किया। कीलें ठुकी अवस्था में मध्यमा नगरी में एक श्रावक के यहाँ भिक्षार्थ आये, यहाँ एक वैद्य ने उनकी दारुण पीड़ा को देखकर तेल आदि का लेपकर कीलें खींची जिसके कारण खून की तेजधार निकल पड़ी। जिससे भगवान को अपार वेदना हुई।

फिर भी वे विचलित नहीं हुए। उपसर्गों का प्रारंभ बैलों के निमित्त से हुआ तथा उपसर्गों का समापन भी बैलों के निमित्त से हुआ।

दिगम्बर –ऐसा कोई उपसर्ग नहीं हुआ।

श्वेताम्बर–चंदनबाला से आहार वाले दिन भगवान ने 13 नियमों की विधि ली थी।

दिगम्बर –चंदनबाला को भक्तिवश सहज में महावीर को आहारदान देने का योग प्राप्त हुआ था।

श्वेताम्बर–चंदनबाला को उड़द के बाकले सूप में खाने के लिए दिये जाते थे।

दिगम्बर –चंदनबाला को मिट्टी के सकोरे में कोदों का भात दिया जाता था।

श्वेताम्बर–चंदना को कौशाम्बी में नीलाम कर दिया गया सेठ ने दासी के रूप में रखा।

दिगम्बर –इस प्रकार का कथानक नहीं है। सेठ ने पुत्री के रूप में अपने यहाँ रखा था किन्तु सेठानी ने शंकित होकर उसे कष्ट दिया।

श्वेताम्बर–गोशालक ने भगवान महावीर पर तेजोलेश्या फेकी।

दिगम्बर –गोशालक नाम का कोई व्यक्ति भगवान के संपर्क में नहीं आया। न ही ऐसी कोई घटना हुई।

श्वेताम्बर–भगवान महावीर को गोदुह्य आसन से केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

दिगम्बर –भगवान को पद्मासन मुद्रा में केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

श्वेताम्बर–केवलज्ञान होने के पश्चात् भी उपसर्ग हुए।

दिगम्बर –केवलज्ञान होने के पश्चात् किसी भी प्रकार का कोई उपसर्ग तीर्थंकर पर नहीं होता है।

श्वेताम्बर–केवलज्ञान होने के पश्चात् भी तीर्थंकर भगवान महावीर भक्तों से वार्तालाप करते थे, हाथ से आशीर्वाद देते थे। 30 नगरों में चातुर्मास किये।

दिगम्बर –केवलज्ञान के पश्चात् तीर्थंकर किसी से न तो वार्तालाप करते हैं और न ही हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हैं और न ही कहीं चातुर्मास करते हैं क्योंकि वे पूर्ण वीतरागी भगवानहो जाते हैं।

श्वेताम्बर–भगवान महावीर सामान्य देहधारी मनुष्य थे।

दिगम्बर –वे सामान्य देहधारी मनुष्य नहीं थे, उनको जन्म से ही असाधारण तीर्थंकर प्रकृति का माहात्म्य था। वे दिव्य परमौदारिक देह के धारी थे।

vueksy opu

^^ckcuks la,e/kkj.kdjk] fHkÅudkA**

HkO;kRekvks! la,e/kkj.kdjks] MjkserA

&pkfj=pOkorhZ vkpk;Z Jh 'kkafrlkxj theqkjkt

^^ldpZ ck dkeedjks] cSaphckughaA**

ftu opu dh J)k esa iRFkj dh rjg vpy jgks fnuds dh rjg gYds&QqYds ughaA

&vkpk;Z Jh cqrjlkxj theqkjkt

^^fdlh Hkh dk;Z ds djus esa e/;eekxZ dk vuqlj.kdjks] uvf/kdlkspks ufcuklkspsdjksA**

&xf.kuh izeq[k Jh Kkuerh ekrkth

भगवान महावीर के पंचकल्याणकों से पावन है बिहार प्रान्त की धरती

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

जैनशासन के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर ने जहाँ आज से 2601 वर्ष पूर्वबिहार प्रान्त की राजधानी कुण्डलपुर (निकट नालंदा) में जन्म लिया, वहीं उनके मंगल विहारों एवंदीक्षा आदि कल्याणकों से भी पावन बनने का सौभाग्य इसी प्रान्त को प्राप्त हुआ है। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को कुण्डलपुर में सौधर्म इन्द्र के साथ पूरा स्वर्ग ही उतरकर आ गया था क्योंकि भरतक्षेत्र में इस युग के अंतिम तीर्थंकर का जन्म हुआ था। महाराजा सिद्धार्थ और महारानी त्रिशला के जीवन का तो वह अपूर्व क्षण था जब वेत्रिलोकीनाथ भगवान के माता-पिता बनकर अपने मानवीय दाम्पत्य जीवन को सफल कर सके थे।

कहते हैं कि उस समय तीर्थंकर की जन्मनगरी (कुण्डलपुर) से अधिक संसार में कहीं भी सुख-सम्पन्नता एवं वैभव नहीं था और न ही तीर्थंकर के पिता (सिद्धार्थ) से ज्यादा कोई महान था। जिसे इन्द्रों ने स्वयं सुसज्जित किया हो, जहाँ पन्द्रह मास तक निरन्तर करोड़ों रत्नों की वर्षा हुई हो उस नगरी की तुलना भला किसी से कैसे की जा सकती है? अर्थात् पुण्य के साम्राज्य का एक मात्र स्थल वह कुण्डलपुर नगर सदैव ऋषि-मुनियों का प्रणम्य स्थल रहा है तथा इन्द्रों द्वारा पूज्य भगवान के माता-पिता की तुलना भी किसी अन्य राजा से नहीं हो सकती है, अर्थात् त्रैलोक्यपति को जन्म देने वाले तो स्वयं रत्नाकर से भी अधिक महान होते हैं। इसलिए तो भक्तामर स्तोत्र में आचार्य श्री मानतुंग स्वामी ने तीर्थंकर की माता को पूर्व दिशा की उपमा देते हुए तीर्थंकर को साक्षात् सूर्य कहा है।

भारत देश की धरती यूँ तो अनादिकाल से तीर्थंकर, नारायण, चक्रवर्ती आदि महापुरुषों के जन्म, निर्वाण एवं तपस्या आदि से पवित्र रही है किन्तु वर्तमान कर्मयुग में उत्पन्न हुए महापुरुषों की श्रृंखला में शासनपति भगवान महावीर के पाँचों ही कल्याणक बिहार प्रदेश में होने से यहाँ की धरती विशेष पूजनीय है। इनमें से गर्भ, जन्म कल्याणक स्थल के रूप में कुण्डलपुर जहाँ 26 सदियों से पूजा जाता रहा है वहीं उनके प्रथम देशनास्थल के रूप में राजगृही नगर का विपुलाचल पर्वत एवं निर्वाणभूमि के रूप में पावापुरी-जलमंदिर आज भी सम्पूर्ण जैन जनता की श्रद्धाकेन्द्र के रूप में विद्यमान हैं। शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर की यात्रा करने वालों को बिहार प्रदेश के इन समस्त तीर्थों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने संघ सहित बिहार प्रदेश में भ्रमण करके उपर्युक्त समस्त तीर्थों के दर्शन के साथ-साथ उनका सूक्ष्मावलोकन भी किया है। तभी उनकी प्रेरणा से महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास द्रुतगति से हो रहा है, साथ ही राजगृही-पावापुरी और गुणावा को भी उनकी प्रेरणा से ऐतिहासिक महत्व प्राप्त होने का सुअवसर आया है।

कुण्डलपुर में 7 से 12 फरवरी 2003 तक सम्पन्न हुए भगवान महावीर पंचकल्याणक एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव के पश्चात् माताजी ने 19फरवरी को ससंघ सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र की यात्रा हेतु मंगल विहार किया और 21-22-23 फरवरी को राजगृही में उनका प्रवास रहा। वहाँ पर्वत वन्दना के साथ उन्होंने तीर्थ के प्राचीन इतिहास से लोगों को परिचित कराते हुए बताया कि "आज से 11 लाख वर्ष पूर्व बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रत का जन्म राजगृही में हुआ था। अतः उनकी सवा ग्यारह फुट उत्तुंग

खड्गासन प्रतिमा यहाँ शीघ्र विराजमान करना है।''

24 फरवरी को संघ प्रातः 8 बजे पावापुरी सिद्धक्षेत्र पर पहुँचा, जहाँ हम सभी लोगों ने जलमंदिर में भगवान महावीर के श्रीचरणों का वृहत् पंचामृत अभिषेक एवं महापूजन करके निर्वाणलाडू चढ़ाया एवं पूज्य माताजी ने सिद्धक्षेत्र की वन्दना करके जलमंदिर के सामने पांडुकशिला परिसर में भगवान महावीर की सवा ग्यारह फुट खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने की घोषणा करते हुए क्षेत्र की चहुँमुखी प्रगति का आशीर्वाद प्रदान किया।

25 फरवरी को संघ का पदार्पण गुणावा सिद्धक्षेत्र (गौतम गणधर की निर्वाणभूमि) पर हुआ, वहाँ एक ''चित्रकला दीर्घा'' का उद्घाटन हुआ तथा वहाँ के इतिहास से संबंधित भगवान महावीर के प्रमुख गणधर शिष्य श्री इन्द्रभूति गौतम गणधर स्वामी की सवा पाँच फुट ऊँची प्रतिमा विराजमान करने का उद्घोष किया। पूज्यश्री की प्रेरणानुसार ये सभी प्रतिमाएं शीघ्र ही उन-उन स्थलों पर स्थापित करने का उपक्रम चल रहा है जो वहाँ की यशवृद्धि में चार चाँद लगाएंगी।

भगवान महावीर स्वामी से संबंधित इन सभी पवित्र भूमियों की वन्दना करके जहाँ संघ को आनन्दानुभूति हुई, वहीं 40 वर्षों के बाद बिहार और झारखंड क्षेत्र भी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की चरणरज पाकर फूला नहीं समाया। नवादा, झुमरीतलैया और सरिया इन तीन नगरों को विशेषरूप से धर्मलाभ प्राप्त हुआ और संघ ने अपनी 21 दिवसीय यात्रा पूरी करके 12 मार्च को शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर में मंगल प्रवेश किया। सम्मेदशिखर में हुए विकास कार्यों को देखकर माताजी का मन फूला नहीं समाया, उन्होंने वहाँ की समस्त कार्यरत संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को खुले दिल से कोटि-कोटि आशीर्वाद प्रदान किया।

होली का पर्व सम्मेदशिखर के लिए यूँ भी विशेष स्मरणीय रहता है, जब देश भरके दिगम्बर जैन श्रद्धालु श्रावक अपने परिवारों के साथ पारस बाबा के पास पहुँचकर भक्ति का रंग प्रवाहित करते हैं। ऐसे केशरिया वातावरण में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी का संघ सानिध्य पाकर तो भक्तों कोमानो सोने में सुगंधि जैसी खुशियाँ प्राप्त हुईं और वे उनके साथ पर्वतवन्दना-तीर्थदर्शन आदि करके धन्य-धन्य हो गये। वहाँ यूँ तो समय-समय पर धर्मप्रवचन, मंडलविधान, सम्मेलन वगैरह के कार्यक्रमों में सभी ने गुरुवाणी का लाभ प्राप्त किया, फिर भी उनकी तृप्ति न होने से जब बार-बार दर्शन-प्रवचन का निवेदन भक्तों द्वारा प्रेषित होता रहा तब पूज्य माताजी ने यही कहकर सबको सन्तुष्ट किया कि ''यहाँ मैं दर्शन के लिए आई हूँ न कि दर्शनार्थियों के लिए तथा ''पर्वत की वन्दना करना मेरा सम्मेदशिखर यात्रा का प्रमुख लक्ष्य है, यहाँ भक्तों की भावनापूर्ति मेरा लक्ष्य नहीं है'' इत्यादि.....इस प्रकार की दर्शनविशुद्धि एवं तीर्थभक्ति की भावनाओं से ओतप्रोत पूज्यश्री के साथ आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लकश्री मोतीसागर महाराज यात्रा संघ के संयोजक विजय कुमार जैन-कानपुर एवं सभी संघस्थ जनों ने पर्वत की सात-पाँच इत्यादि वन्दनाएं करके सम्मेदशिखर यात्रा का अपना लक्ष्य पूर्ण किया।

बिहार प्रान्त का यह शाश्वत सिद्धक्षेत्र वर्तमान की परिस्थितियों के अनुसार झारखंड प्रदेश का तीर्थ माना जाता है अतः बिहार और झारखंड इन दो प्रदेशों के प्रमुख तीर्थ हम सभी की श्रद्धा के केन्द्र हैं और विशेष रूप से बिहार की धरती पर भगवान महावीर के पाँचों कल्याणक होने के कारण उसकी पूज्यता ऐतिहासिक अविस्मरणीय है। मैं इस पावनरज को मस्तक पर चढ़ाते हुए देशभर के अपने समस्त दिगम्बर जैन श्रद्धालु भक्तों को भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) पधारने हेतु आमंत्रित करता हूँ।

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार की पावन धरा पर

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से आयोजित

''कुण्डलपुर महोत्सव''

के शुभ अवसर पर ''अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद'' की ओर से

हार्दिक शुभकामनाएं

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं

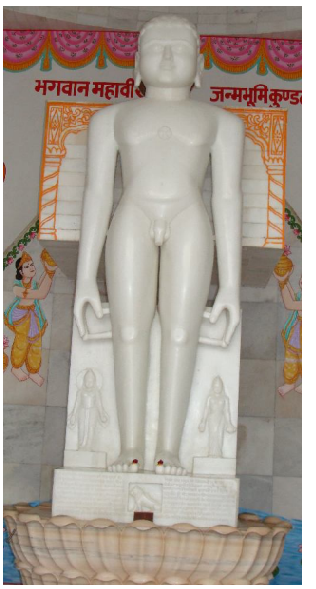

मंगलमय श्री महावीर प्रभु, कोटि नमन स्वीकार करो
रत्नत्रय से वसुन्धरा का, युग-युग तक शृंगार करो।

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन	राकेश कुमार जैन, मेरठ	मनोज कुमार जैन, मेरठ
(अध्यक्ष)	(कोषाध्यक्ष)	(महामंत्री)

पावापुरी जल मंदिर ही भगवान महावीर की निर्वाणभूमि है

प्रस्तुति-गणिनी ज्ञानमती

पावापुरी में सरोवर के मध्य स्थित जल मंदिर ही भगवान महावीर की निर्वाणभूमि है।

श्री पूज्यपाद आचार्य ने निर्वाणभक्ति में कहा है–

पद्मवनदीर्घिकाकुल-विविधद्रुमखण्डमण्डिते रम्ये। पावानगरोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।16।।
कार्तिककृष्णस्यान्ते स्वातावृक्षे निहत्य कर्मरजः। अवशेषं संप्रापद्-व्यजरामरमक्षयं सौख्यम् ।।17।।
परिनिर्वृतं जिनेन्द्रं, ज्ञात्वा विबुधा ह्यथाशु चागम्य। देवतरुरक्तचंदन - कालागुरुसभिगोशीर्षैः ।।18।।
अग्नीन्द्राज्जिनदेहं मुकुटानलसुरभिधूपवरमाल्यैः। अभ्यर्च्य गणधरानपि, गता दिवं खं च वनभवने।।19।।

पुनश्च–

पावापुरस्य बहिरुन्नतभूमिदेशे, पद्मोत्पलाकुलवतां सरसां हि मध्ये।
श्रीवर्द्धमानजिनदेव इति प्रतीतो, निर्वाणमाप भगवान् प्रविधूतपाप्मा।।24।।

श्रीगुणभद्र आचार्य ने उत्तरपुराण में कहा है–

क्रमात्पावापुरं प्राप्य मनोहरवनान्तरे। बहूनां सरसां मध्ये महामणिशिलातले।।509।।
स्थित्वा दिनद्वयं वीतविहारो वृद्धनिर्जरः। कृष्णकार्तिकपक्षस्य चतुर्दश्यां निशात्यये।।510।।
स्वातियोगे तृतीयेद्ध-शुक्लध्यानपरायणः। कृतत्रियोगसंरोधः समुच्छिन्नक्रियं श्रितः।।511।।
हताघातिचतुष्कः सन्नशरीरो गुणात्मकः। गन्ता मुनिसहस्रेण निर्वाणं सर्ववाञ्छितम् ।।512।।
तदेव पुरुषार्थस्य पर्यन्तोऽनन्तसौख्यकृत् । अथ सर्वेऽपि देवेन्द्रा वह्नीन्द्रमुकुटस्फुरत् ।।513।।
हुताशनशिखान्यस्त-तद्देहा मोहविद्विषम् । अभ्यर्च्य गन्धमाल्यादि-द्रव्यैर्दिव्यैर्यथाविधि।।514।।
वन्दिष्यन्ते भवातीतमर्थ्यैर्वन्दारवः स्तवैः। वीरनिर्वृतिसम्प्राप्तदिन एवास्तघातिकः।।515।।
भविष्याम्यहमप्युद्यत्केवलज्ञानलोचनः। भव्यानां धर्मदेशेन विहृत्य विषयांस्ततः।।516।।

(उत्तरपुराण, पर्व 76)

यहां अभिप्राय यह है कि पावापुरी के मनोहर नाम के उद्यान में कमलों से व्याप्त सरोवर के मध्य महामणिमयी शिला पर भगवान विराजमान हुए उस समय समवसरण विघटित हो चुका था। श्रीविहार बंद कर दो दिन तक ध्यान में लीन हुए महावीर स्वामी ने कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की रात्रि के अंत में अघातिया कर्मों को नष्ट कर निर्वाणपद प्राप्त कर लिया। तभी सौधर्मेन्द्र आदि इन्द्रों ने अग्निकुमार इन्द्र के मुकुट के अग्रभाग से निर्गत अग्नि पर प्रभु का शरीर स्थापित कर दिव्य चन्दन आदि के द्वारा पूजा करके संस्कार कर दिया। उसी दिन गौतमस्वामी को वहीं पर केवलज्ञान प्रगट हुआ है।

हरिवंशपुराण में भी यही लिखा है एवं दीपावली पर्व तभी प्रारंभ हुआ, ऐसा कहा है–

जिनेंद्रवीरोऽपि विबोध्य संततं, समन्ततो भव्यसमूहसन्ततिम् ।
प्रपद्य पावानगरीं गरीयसीं, मनोहरोद्यानवने तदीयके।।15।।
चतुर्थकालेऽर्धचतुर्थमासकै - र्विहीनताविश्चतुरब्दशेषके ।

स कार्तिके स्वातिषु कृष्णभूतसु-प्रभातसन्ध्यासमये स्वभावतः।।16।।
अघातिकर्माणि निरुद्धयोगको, विधूय घातीन्धनवद् विबंधनः।
विबन्धनस्थानमवाप शंकरो, निरन्तरायोरुसुखानुबन्धनम् ।।17।।
स पञ्चकल्याणमहामहेश्वरः, प्रसिद्धनिर्वाणमहे चतुर्विधैः।
शरीरपूजाविधिना विधानतः, सुरैः समभ्यर्च्यत सिद्धशासनः।।18।।
ज्वलत्प्रदीपालिकया प्रवृद्धया, सुरासुरैर्दीपितया प्रदीप्तया।
तदा स्म पावानगरी समन्ततः, प्रदीपिताकाशतला प्रकाशते।।19।।
तथैव च श्रेणिकपूर्वभूभुजः, प्रकृत्य कल्याणमहं सहप्रजाः।
प्रजग्मुरिन्द्राश्च सुरैर्यथायथं, प्रयाचमाना जिनबोधिमर्थिनः।।20।।
ततस्तु लोकः प्रतिवर्षमादरात्, प्रसिद्धदीपालिकयात्र भारते।
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं, जिनेंद्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक्।।21।।

(हरिवंशपुराण सर्ग 66)

सार यही है कि भगवान महावीर पावापुरी के मनोहर उद्यान में विराजमान हुए। जब चतुर्थकाल में तीन वर्ष साढ़े आठ मास बाकी रहे तब स्वाति नक्षत्र में कार्तिककृष्णा अमावस्या के दिन प्रातः–उषाकाल के समय स्वभाव से योग निरोधकर शुक्लध्यान के द्वारा सर्वकर्म नष्ट कर निर्वाण को प्राप्त हो गये। उस समय चार निकाय के देवों ने विधिपूर्वक भगवान के शरीर की पूजा की। अनन्तर सुरअसुरों द्वारा जलायी हुई बहुत भारी देदीप्यमान दीपकों की पंक्ति से पावानगरी का आकाश सब ओर से जगमगा उठा श्रेणिक आदि राजाओं ने भी प्रजा के साथ मिलकर भगवान के निर्वाणकल्याणक की पूजा की पुनः रत्नत्रय की याचना करते हुए सभी इन्द्र, मनुष्य आदि अपने-अपने स्थान चले गये।

उस समय से लेकर भगवान के निर्वाण कल्याणक की भक्ति से युक्त संसार के प्राणी इस भरतक्षेत्र में प्रतिवर्ष आदरपूर्वक प्रसिद्ध दीपमालिका के द्वारा भगवान महावीर की पूजा करने के लिए उद्यत रहने लगे अर्थात् भगवान के निर्वाणकल्याणक की स्मृति में दीपावली पर्व मनाने लगे।

इन्द्र ने प्रभु के चरण उत्कीर्ण किए–

एक प्रकरण हरिवंशपुराण में आया है कि–

जब भगवान नेमिनाथ गिरनार पर्वत से निर्वाण प्राप्त कर चुके तब इन्द्रों ने भगवान की निर्वाणकल्याणक पूजा के बाद गिरनार पर्वत पर वज्र से चरण उत्कीर्ण कर इस लोक में पवित्र सिद्धशिला का निर्माण किया तथा उसे जिनेन्द्र भगवान के लक्षणों के समूह से युक्त किया। यथा–

ऊर्जयन्तगिरौ वज्री वज्रेणालिख्य पावनीम् । लोके सिद्धशिलां चक्रे जिनलक्षण पङ्क्तिभिः।।14।।

(हरिवंश पुराण सर्ग 65)

श्री समन्तभद्रस्वामी ने भी स्वयंभूस्तोत्र में लिखा है–

ककुदं भुवः खचरयोषिदुषितशिखरैरलंकृतः। मेघपटलपरिवीत तटस्तव लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा।।127।।
वहतीति तीर्थमृषिभिश्च, सततमभिगम्यतेऽद्य च।प्रीतिवितताहृदयैः परितो, भृशमूर्जयन्त इति विश्रुतोऽचलः।।128।।

बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्रीशांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज कहते थे कि–इसी प्रकार से पावापुरी सरोवर के मध्य मणिमयी शिला से भगवान के मोक्ष जाने के बाद इन्द्रों ने वज्र से यहाँ पर भी चरणचिन्ह उत्कीर्ण करके इस शिला को

सिद्धशिला के समान पूज्य पवित्र बनाया था।

एक बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि भगवान केवलज्ञान होने के बाद पाँच हजार धनुष–बीस हजार हाथ प्रमाण ऊपर आकाश में अधर पहुंच जाते हैं। अधर में ही कुबेर द्वारा समवसरण की रचना की जाती है। जब भगवान श्रीविहार करते हैं तब समवसरण विघटित हो जाता है और भगवान आकाश में अधर चलते हैं तथा देवगण प्रभु के चरणों के नीचे स्वर्णमयी दिव्य कमलों की रचना करते रहते हैं। निर्वाणप्राप्ति के पूर्व भी जब भगवान योग निरोध करते हैं तब वे आकाश में अधर ही रहते हैं फिर भी उनके ठीक नीचे की भूमि भगवान की निर्वाणभूमि मानी जाती है चूँकि सिद्ध भगवान सिद्धशिला पर भी ठीक उसी भूमि के ऊपर विराजमान हैं।

इससे यह स्पष्ट है कि भगवान महावीर स्वामी जहाँ से मोक्ष गये हैं ठीक वहीं पर उनके शरीर का संस्कार किया गया है और वहीं पर सरोवर के मध्य मणिमयी शिला पर इन्द्रों ने चरण उत्कीर्ण किये थे। ऐसे ही सम्मेदशिखर पर्वत के सभी टोकों पर इन्द्रों द्वारा चरण उत्कीर्ण किये गये हैं ऐसा मानना चाहिए।

ऐसी सिद्धभूमि पावापुरी को मेरा अनन्त-अनन्त बार नमस्कार होवे।

जो शास्त्र लिखे तुमने माता, उसको पढ़ कई विद्वान बने।
जिनको तुमसे शिक्षाएं मिलीं, विद्वानों में शिरमौर्य बने।।
विद्वानों की तुम जननी हो, सब कहें ''वाग्देवी'' हो तुम।
हे विद्वत्जननी ज्ञानमती माँ, तुम चरणों में शत वन्दन।।

बीसवीं सदी में
विद्वत्वर्ग को जिनागम की आराधना करने का
श्रेय जिनने प्रदान किया
ऐसी विद्वत्जननी परम पूज्य गणिनीप्रमुख

श्री ज्ञानमती माताजी के

चरणारविन्द में ''तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वन्महासंघ''
कोटिशः वन्दन करते हुए
गौरव का अनुभव करता है।

डा. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद
(अध्यक्ष)

डा. अनुपम जैन, इंदौर
(महामंत्री)

भगवान महावीन सचित्र जीवनदर्शन

चित्रकथा के सन्दर्भ में –

भगवान महावीन के २६००वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत अक्टूबर २००१ में दिल्ली में सम्पन्न हुए "विश्वशांति महावीर विधान" के राष्ट्रीय महोत्सव के अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के प्रेरणानुसार संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज के मार्गदर्शन में निर्मित महावीर के जीवन से सम्बन्धित अनेक दुर्लभ चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई उन्हीं में से कतिपय प्रमुख चित्र यहाँ प्रस्तुत करते हुए उनकी संक्षिप्त कहानियां दी जा रही हैं। इन्हें भक्तगण मंदिरों में बनवाकर जन-जन को महावीर से परिचित कराने में सफल हों यही हार्दिक भावना है–

आर्यिका चन्दनामती

भील बना महावीर एक दिन

आज से असंख्यातों वर्ष पूर्व की बात है, जब पुरुरवा नामका एक भील अपनी पत्नी कालिका के साथ शिकार के लिए जंगल में घूम रहा था। दूर से उसने एक मुनि को भ्रमण करते हुए देख हिरण समझकर उनके उपर बाण चलाने को तैयार हुआ तो उसकी स्त्री ने तुरन्त रोकते हुए कहा कि "ये वन के देवता घूम रहे हैं इन्हें मत मारो"।

यह सुनकर उस भील ने उन सागरसेन मुनिराज के पास जाकर नमस्कार किया और गुरु और धर्म का उपदेश सुनकर उसने शराब, मांसाहार आदि तामसी भोजन का त्याग कर दिया। जिसके फलस्वरूप उसने अगले जन्म में प्रथम स्वर्ग के देवपद को प्राप्त कर लिया।

भव्यात्माओं ! देखो, कहा जंगली भील जो सदा हिंसाकार्य में ही लगा रहता था और मरकर नरक जाने वाला था किन्तु गुरु का सत्संग प्राप्त करने से हिंसा का त्यागकर देवता बन गया। वही भील कालान्तर में आगे चलकर तीर्थंकर महावीर बना अतः प्रत्येक प्राणी को जीवन में हिंसा का त्याग करके सन्तों का सानिध्य प्राप्त करना चाहिए ताकि एक दिन महापुरुष बनकर आत्मा को परमात्मा बनाया जा सके।

"मरीचिकुमार की पर्याय में दीक्षा ले विचलित हुए"

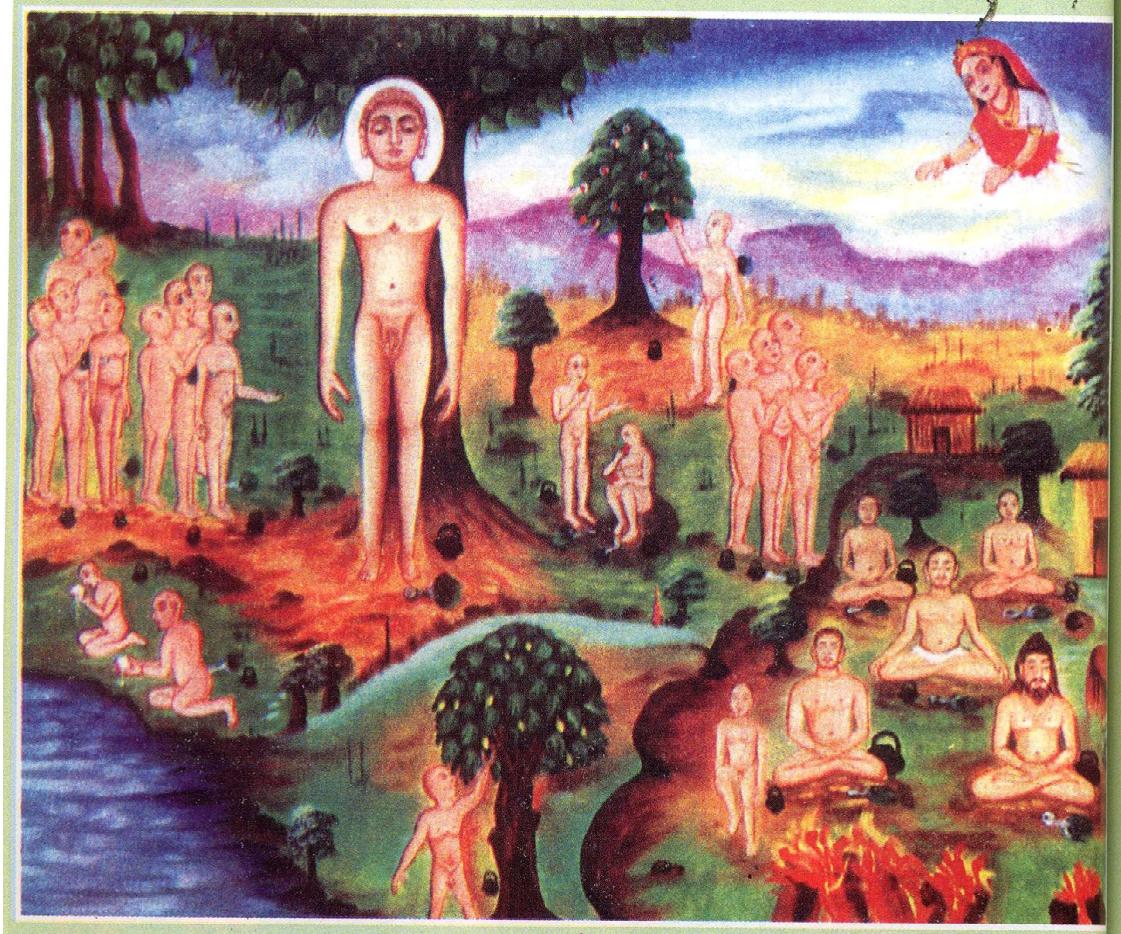

पुरुरवा भील का जीव देवपर्याय से निकलकर "अयोध्या" नगरी में जन्मे इस कर्मयुग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के पुत्र सम्राट भरतचक्रवर्ती के पुत्र "मरीचिकुमार" ऋषभदेव के पौत्र के रूप में जन्म लिया। उन्होंने अपने बाब ऋषभदेव के साथ जाकर प्रयाग में "वटवृक्ष" के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली, किन्तु भूख-प्यास का कष्ट सहन नहीं कर पाने के कारण उनके साथ दीक्षित हुए चार हजार राजा भी पथ से विचलित होकर जंगल में फल खाने लगे, झरने का पानी पीने लगे तो वनदेवता ने प्रगट होकर उनसे कहा –

"आप लोग इस जैन मुनि के वेष में ऐसी अनर्गल क्रिया न करें, यह तीर्थंकर मुद्रा है अत; या तो आप पद छोड़ दें य फिर भगवान ऋषभदेव के समान ध्यानलीन हो जाएं"। महामुनि ऋषभदेव ने चूंकि मुनियों को आहार की विधि बताए बिना ह छह माह के योग में ध्यानस्थ हो गए थे इसलिए मरीचिकुमार सहित वे सभी मुनिवेष छोड़कर तापसी आश्रम बनाकर मनमानी मिथ्या तप करने लगे। जिसके फलस्वरूप मरीचि को अनेक भवों तक संसार में चतुर्गति के दु:ख भोगने पड़े।

"मुनियों के सम्बोधन से शेर भी अहिंसक बन गया।"

अनेकानेक जन्मों में कष्ट सहने के बाद वह मरीचिकुमार का जीव नरक से निकलकर जंगल का राजा शेर हो गया। एक बार वह शेर जंगल में एक हिरण को मार रहा था, तब आकाशमार्ग से जा रहे दो मुनियों ने उसे सम्बोधित किया।

अरे मृगराज ! आज से दश भव पश्चात् तू अहिंसा का अवतार बनने वाला है और आज तू यह घोर हिंसा कर रहा है ?

गुरुवाणी सुनकर शेर की आँखों से अश्रुधार बह निकली, उसने माँसाहार त्याग करके गुरु से पाँच अणुव्रत धारण कर लिए पुनः शांतभाव से मरकर वह स्वर्ग में देव बन गया।

बस ! यहीं से प्रारम्भ होता है सिंह के जीव का उत्थान, जिसने एक दिन महावीर बनकर अहिंसा का बिगुल बजाया।

"कुण्डलपुर के युवराज सिद्धार्थ और वैशाली की राजकुमारी त्रिशला का विवाह"

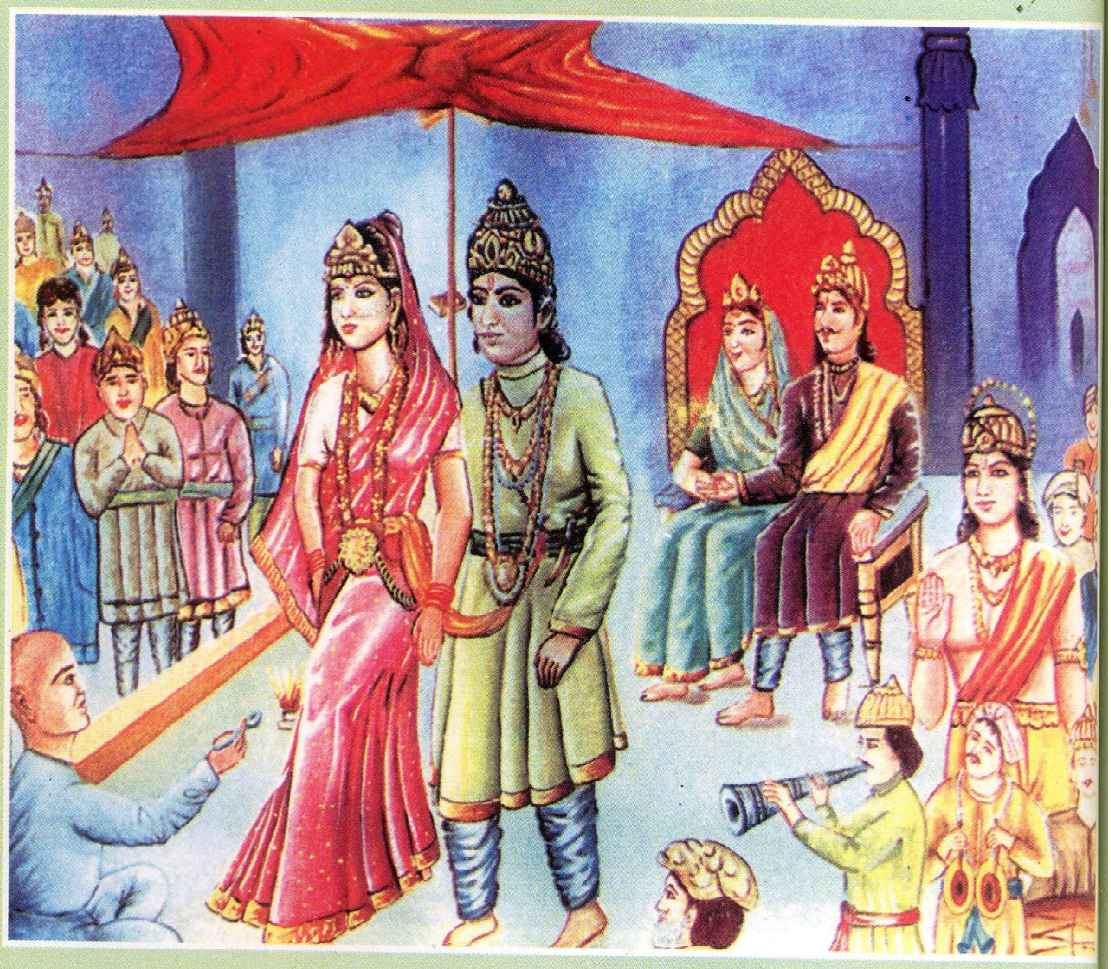

कुण्डलपुर के राजा सर्वार्थ अपने पुत्र सिद्धार्थ का विवाह वैशाली के राजा चेटक की सबसे बड़ी पुत्री त्रिशला प्रियकारिणी के साथ सम्पन्न करने के लिए कुण्डलपुर से सिद्धार्थ की बारात लेकर वैशाली पहुँचते हैं। वहाँ महाराजा चेटक और रानी सुभद्रा अपनी पुत्री त्रिशला का विवाह सिद्धार्थ के साथ करके परम प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

विवाह के पश्चात् बारात वापस वैशाली से कुण्डलपुर आई, जहां नंद्यावर्त महल में समस्त नगरवासियों ने उत्सव–महोत्सवपूर्वक खुशियाँ मनाते हुए राजवधू का स्वागत किया और नवदम्पत्ति सुखपूर्वक अपना गृहस्थ जीवन व्यतीत करने लगे।

"अच्युत स्वर्ग से इन्द्र का जीव आया माता त्रिशला के गर्भ में"

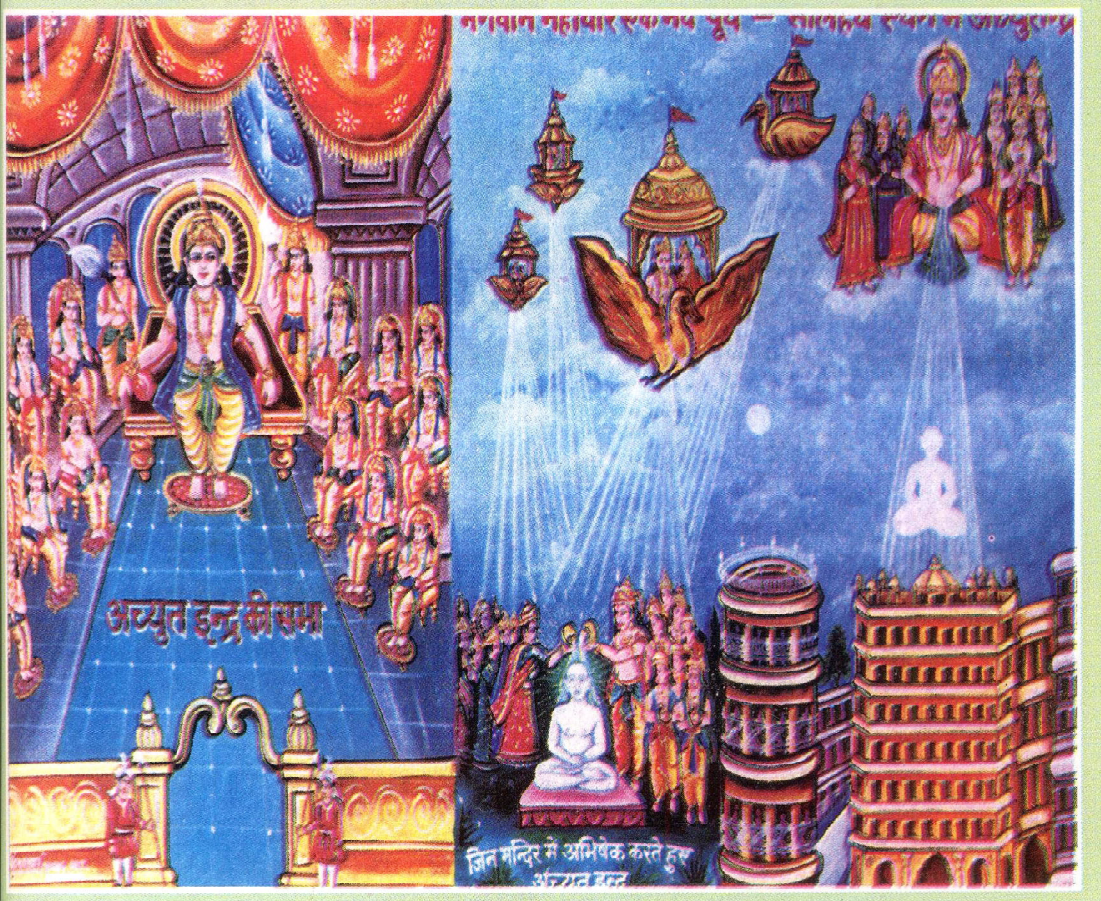

सिंह की पर्याय में मुनियों का सम्बोधन प्राप्त करने के बाद क्रम-क्रम से जीवन का उत्थान करते हुए शेर ने अगले जन्म में देवपर्याय पुनः कनकोज्वल राजा, देवपर्याय, हरिषेण राजा, देव, प्रियमित्र चक्रवर्ती, देव एवं नन्द राजा की पर्याय में सुख भोगते हुए तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध कर लिया था पुनः दशवें भव में "अच्युत" नामक सोलहवें स्वर्ग में जन्म लेकर वह अच्युतेन्द्र अपनी इन्द्रसभा में समस्त देव-देवियों को सदैव धर्म की महिमा बताया करता था।

दिगम्बर जैन ग्रन्थों के अनुसार वह अत्युतेन्द्र स्वर्ग सुखों को भोगते हुए अन्य देवों के साथ अकृत्रिम चैत्यालयों में जाकर हमेशा जिनप्रतिमाओं का अभिषेक-पूजन आदि भी किया करता था।

वहां से इन्द्र की आयु पूर्ण कर वह मध्यलोक में आर्यखण्ड की कुण्डलपुर नगरी में माता त्रिशला के गर्भ में आ गया।

"माता त्रिशला के सपनों का महल साकार हो गया"

गर्भ एवं जन्म कल्याणक

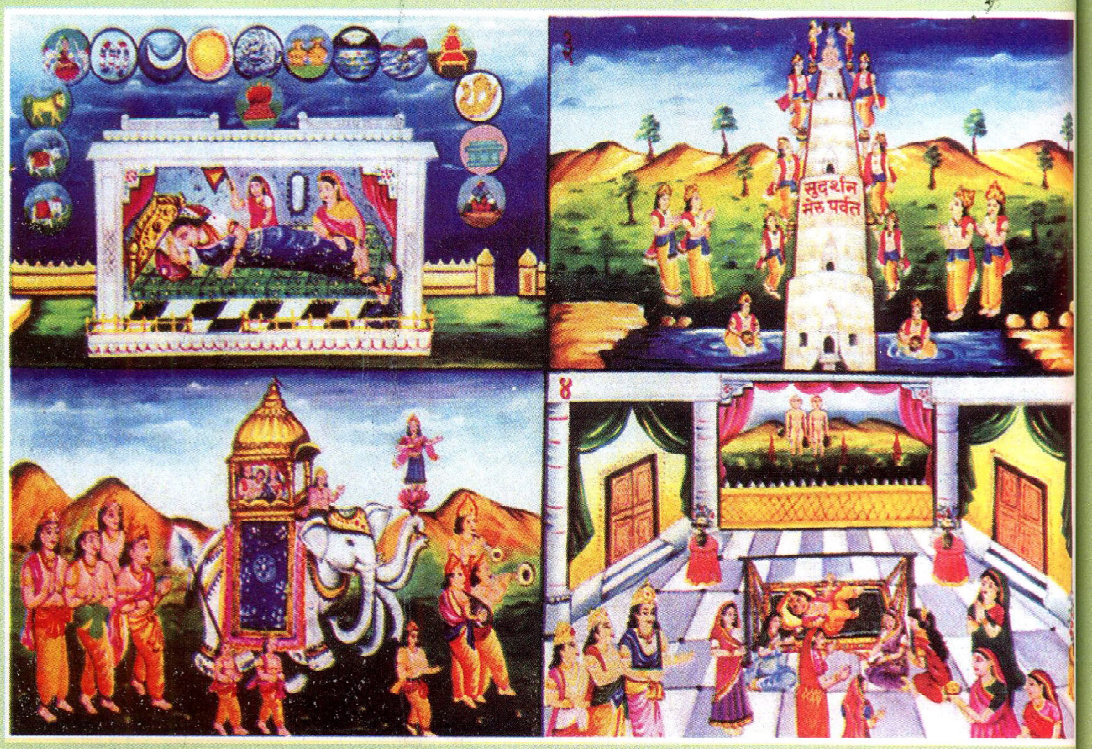

आज से २६०० वर्ष पूर्व बिहार प्रान्त के "कुण्डलपुर" नालन्दा के निकट नगर के नन्द्यावर्त महल में राजा सिद्धार्थ की महारानी "त्रिशला" सुख की नींद सो रही थी। आषाढ़ शुक्ला षष्ठी के दिन पिछली रात्रि में उन्होंने सोलह स्वप्न देखे।

पुन: रानी त्रिशला ने उन स्वप्नों का फल अपने पति राजा सिद्धार्थ से सुना कि तुम्हारे पवित्र गर्भ में तीर्थंकर महापुरुष का पदार्पण हो चुका है तब वह असीम प्रसन्न हुई। यह बात जानकर स्वर्ग से सौधर्म इन्द्र ने धनकुबेर को कुण्डलपुर भेजा जहाँ उसने रानी त्रिशला के आँगन में १५ माह तक प्रतिदिन गर्भ में आने के छह माह पूर्व से लेकर जन्म लेने तक रत्नवृष्टि कर सारी धरती को रत्नमयी बना दिया।

कुण्डलपुर में भरतक्षेत्र के अंतिम तीर्थंकर का जन्म होते ही स्वर्ग में सौधर्म इन्द्र का आसन कम्पित हो उठा। उन्होंने अपने अवधिज्ञान से "तीर्थंकर का जन्म हुआ है" यह जानकर सर्वप्रथम वहीं से प्रभु को परोक्ष नमस्कार किया पुन: शचिइन्द्राणी, ईशान आदि इन्द्रगण तथा समस्त देवपरिवार सहित ऐरावतहाथी पर सवार होकर वे मध्यलोक की कुण्डलपुर नगरी में पहुंच गए।

जैनशास्त्रों में वर्णन आता है कि सौधर्मइन्द्र ने जन्मजात तीर्थंकर बालक को सुमेरुपर्वत की पांडुकशिला पर ले जाकर १००८ कलशों में क्षीरसागर का जल भरकर उनसे भगवान का जन्माभिषेक किया था।

जन्माभिषेक के पश्चात् प्रभु को वस्त्रालंकारो से सुसज्जित करके इन्द्र ने वहीं पर उनका "वीर" और "वर्धमान" यह नामकरण किया पुन: एक बार संजय-विजय नामक दो चारणऋद्धिधारी मुनियों को किसी विषय में संदेह उत्पन्न हो गया और तीर्थंकर वर्धमान को पालने में झूलते देखने मात्र से उनकी शंका का निवारण हो गया, इसलिए उन्होंने बड़ी भक्ति से उनका "सन्मति" नाम रख दिया।

"माता त्रिशला की गोदी में तीर्थंकर शिशु वर्धमान"

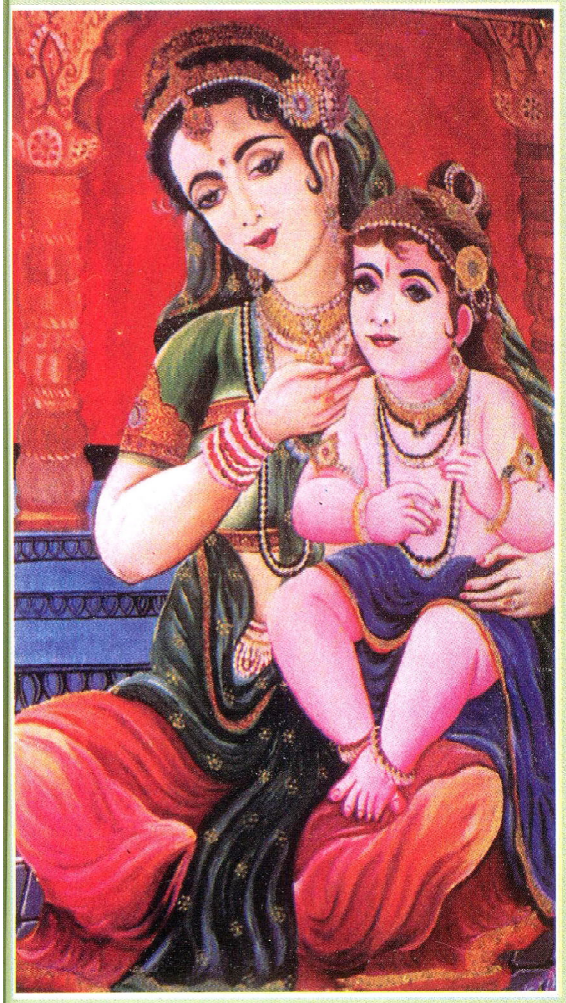

तर्ज – जरा सामने तो ----------

जहां जन्मे वीर वर्धमान जी,
जहां खेले कभी भगवान जी।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।
कुण्डलपुर में राजा सर्वारथ के सुत सिद्धार्थ हुए।
जो वैशाली के नृप चेटक की पुत्री के नाथ हुए।।
रानी त्रिशला की खुशियां अपार थीं,
सुन्दरता की वे सरताज थीं।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।१।।
राजहंस से मानसरोव जैसे शोभा पाता है।
वैसे ही प्रभुजन्म से, जन्मनगर पावन बन जाता है।।
जय जय होती है प्रभु पितु मात की,
इन्द्र गाता है महिला महान जी।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।२।।
प्रान्तबिहार में नालन्दा के, निकट वही कुण्डलपुर है।
छब्बिस सौंवे जन्मोत्सव में, गूंजा ज्ञानमतीस्वर है।।
तभी आई घड़ी उत्थान की,
हुई दर्शन से "चन्दना" निहाल भी।।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।३।।

सुमेरुपर्वत पर जन्माभिषेक करके वापस ऐरावत हाथी से ही सौधर्मइन्द्र ने जिनबालक को कुण्डलपुर में लाकर माता त्रिशला को सौंप दिया और वहां भी बड़ा भारी जन्मोत्सव मनाते हुए बालक के अंगूठे में अमृत लगा दिया, जिसे चूसते हुए वे लोकोत्तर प्रतिभा को प्राप्त होने लगे।

स्वर्णवर्णी काया वाले अपने तीर्थंकरशिशु को गोद में खिलाकर माता त्रिशला वास्तव में मातृत्व को धन्य मानती थी। उन अद्वितीय जिनबालक की जननी का एक नाम प्रियकारिणी भी था जिनके विषय में श्रीगुणभद्रस्वामी ने उत्तरपुराण में कहा है–

मानुषाणां सुरांणां च, तिरश्चां च चकार सा।
तत्प्रसूत्या पृथु-प्रीतिं, तत्सत्यं प्रियकारिणी ।।

अर्थात् महारानी प्रियकारिणी ने उन प्रभु को जन्म देकर मनुष्यों, देवों तथा पशुओं के हृदय में महान प्रेमभाव उत्पन्न कर दिया था इसलिए उसका "प्रियकारिणी" नाम वास्तविक था।

"स्वर्ग से लाया दिव्य भोजन करते थे वर्धमान"

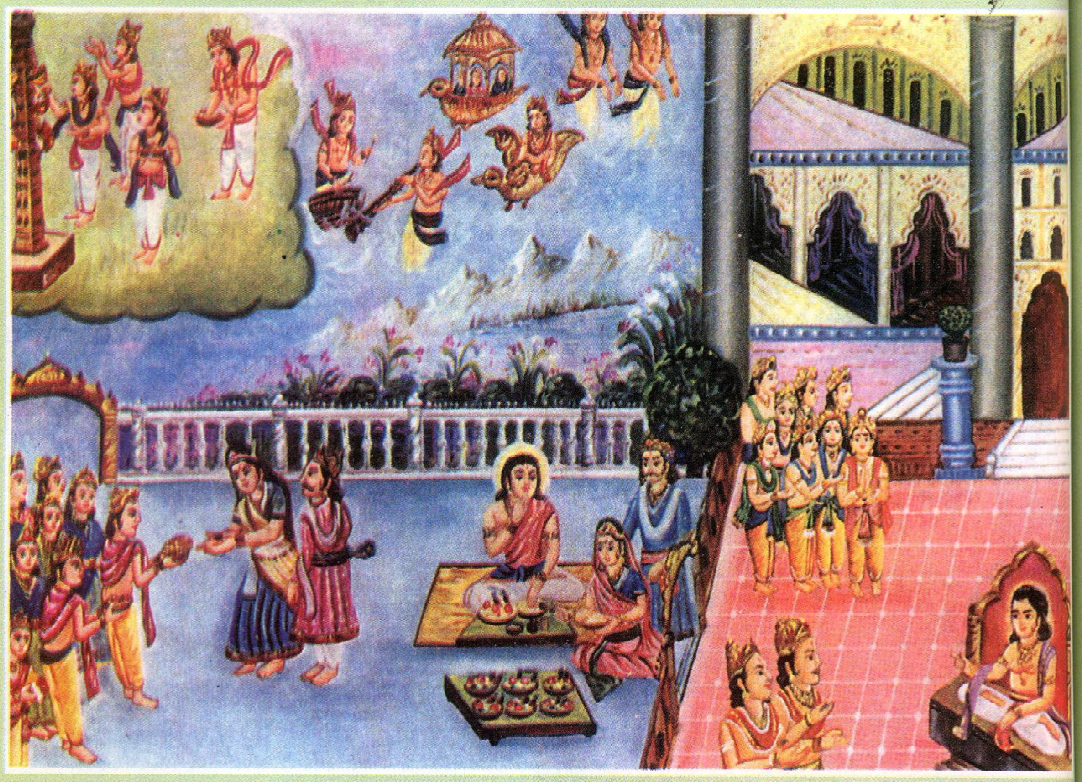

तीर्थंकर बालक वर्धन दिव्य अमृत का पान करते हुए दूज के चांद के समान वृद्धि को प्राप्त होने लगे, तब देवता उनके लिए स्वर्ग से दिव्यभोजन सामग्री लेकर आते और अपने प्रभु को आदरपूर्वक भोजन कराते थे।

दिगम्बर जैन आगम ग्रन्थ "त्रिलोकसार" में वर्णन आता है कि सौधर्म एवं ईशान स्वर्ग में कुछ विशेष मानस्तम्भ बने हुए हैं, जिनमें रत्नों के पिटारों में तीर्थंकरों के लिए भोजन सामग्री तथा वस्त्राभूषण उत्पन्न होते रहते हैं। इन्द्र की आज्ञा से देवगण वहीं से तीर्थंकर बालक के लिए दीक्षा से पूर्व तक सभी सामग्री लाते हैं। इसलिए तीर्थंकर महापुरुषों की महानता के लिए आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी ने कहा है –

मानुषीं प्रकृतिमभ्यतीतवान्, देवतास्वपि च देवता यतः।

तेन नाथ परमासि देवता, श्रेयसे जिनवृषप्रसीद नः ।।

अर्थात् हे प्रभो ! आप मनुष्य के रूप में होकर भी मानवीय चेष्टाओं से परे महान हैं इसलिए आप देवताओं के भी देवता हैं और इसीलिए आपको परमदेवता कहा गया है अतः हे जिनश्रेष्ठ ! आप मुझ पर प्रसन्न होवें।

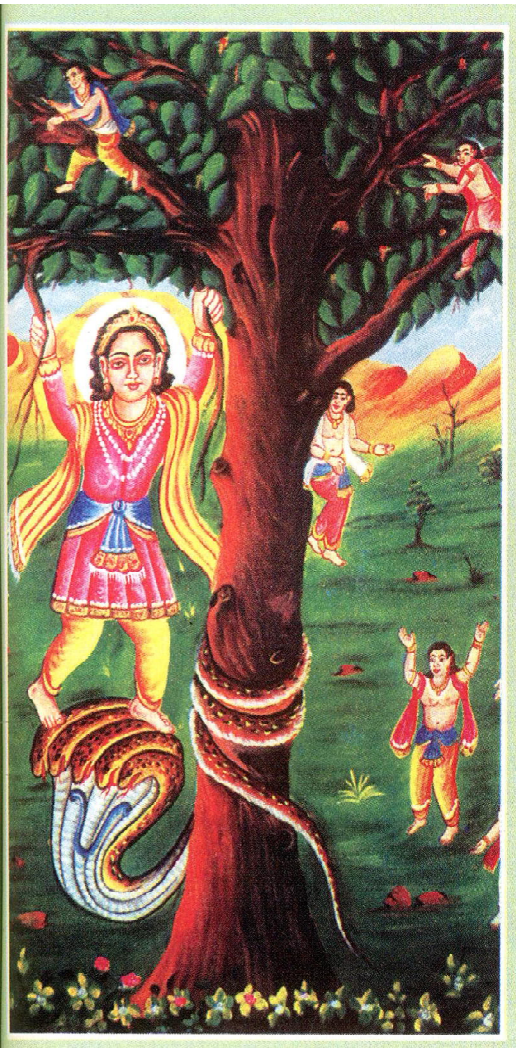

तीर्थंकर बालक वर्धमान महावीर की सर्पक्रीडा

एक बार स्वर्ग में तीर्थंकर वर्धमान के गुणों की चर्चा इन्द्र की सभामें सुनकर एक "संगम" नाम का देव उनकी वीरता की परीक्षा करने आया। भगवान अनेक राजकुमारों के साथ एक वृक्ष पर चढ़े हुए तरह-तरह की क्रीडा कर रहे थे। वह देव बड़े विकराल सर्प का रूप बनाकर वृक्ष की जड़ से लेकर उपर स्कन्ध तक लिपट गया।

इस भयानक दृश्य को देखकर सभी बालक तो डर से कांपते हुए डालियों से कूदकर भागने लगे किन्तु कुमार वर्धमान निर्भय हो उस सर्प पर चढ़कर इस प्रकार क्रीडा करने लगे और जैसे माता के पलंग पर खेल रहे हो। कुमार की क्रीडा करने लगे जैसे माता के पलंग पर खेल रहे हों। कुमार की क्रीडा से हर्षित हो सर्प ने अपना असली देव का रूप प्रगटकर भगवान की स्तुति कर उनका "महावीर" यह सार्थक नाम रक्खा।

प्यारे बच्चों ! आप भी अपने हृदय में ऐसी वीरता की शक्ति प्राप्त करने हेतु सदैव भगवान महावीर की आराधना करें और निम्न पंक्तियों को याद कर लें -

तर्ज – आओ बच्चों तुम्हें ---------

आओ बच्चों तुम्हें बताएं, परिचय प्रभुमहावीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभु महावीर सा ।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो ।।टेक.।।

कुण्डलपुर में पितु सिद्धारथ, मां त्रिशला से जन्म लिया। अपने शौर्य पराक्रम से, महावीर नाम को धन्य किया।।
वीर बहादुर बनना हो तो नाम जपो महावीर का। हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभु महावीर सा ।।

जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो ।।१।।

प्यारे बच्चों ! तुम्हें देश में, महावीर युग लाना है। कभी न अण्डा, केक, पेस्टी, चॉकलेट नहीं खाना है।।
दीप जलाओ जन्मदिनों पर, भोजन खाओ खीर का। हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभु महावीर सा ।।

जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो ।।२।।

गणिनी माता ज्ञानमती का, सम्बोधन तुम सब सुन लो। शाकाहारी बनो बनाओ, तुम बच्चों ! हर बालक को ।।
बच्चा बच्चा करे "चन्दना", नमन सदा महावीर का। हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभु महावीर सा ।।

जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो ।।३।।

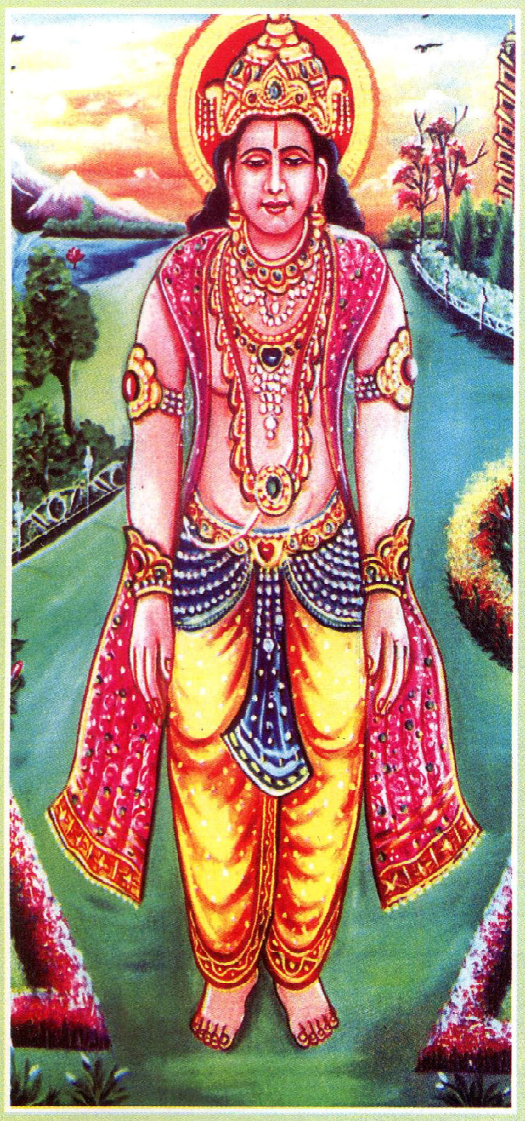

कुण्डलपुर के युवराज वर्धमान महावीर

महाराजा सिद्धार्थ और महारानी त्रिशला के एकमात्र पुत्र तीर्थंकर महावीर कुण्डलपुर के युवराज थे। वे केवल अपने माता-पिता की आंखों के सितारे ही नहीं थे केवल बिहारप्रान्त ही उनसे धन्य नहीं हुआ था और वे केवल भारतदेश के ही सूर्य नहीं थे बल्कि सम्पूर्ण विश्व के कल्याण हेतु महावीर का जन्म भारत की पवित्र धरा पर हुआ था।

महावीर अब दूज चन्द्र के सदृश निरन्तर वृद्धि करते-करते एक दिन युवावस्था को प्राप्त हो गए और अपनी सुन्दरता से देवताओं के सौन्दर्य को भी परास्त करने लगे। कुण्डलपुर का राजमहल एवं वहां का कण-कण अपने युवराज को पाकर धन्य था। देवताओं के द्वारा लाए गए वस्त्राभूषण को धारण कर वे मनुष्यलोक के परमदेवता का रूप दर्शाते थे। नवयुवकों के सरताज तीर्थंकर महावीर हम सबके लिए सर्वोच्च आदर्श हैं। उन तीर्थंकर युवराज महावीर के प्रति एक लघु अंग्रेजी भजन आप अपने बच्चों को भी अवश्य याद करावें–

Tuning - Khabhi Ram Banke ----------
Prince of Kundalpur, King of Universe,
Mahavira, O Lord Mahavira
When you came in Garbh of Trishla,
Sixteen dreams seen by Trishla.
Felt very happiness, siddharth Emperor,
Mahavira, O Lord Mahavira. 1.
When you had born in the Palace,
Indra and Deva came from heaven.
On the Meru Mountain; Celebrated Abhishek,
Mahavira, O Lord Mahavira. 2.
In young age you took Deeksha,
Gained Kevalgyan after twelve years.
Then Samavasaran formed, came all persons,
Mahavira, O Lord Mahavira, 3.

When Vira attained Libreation,
Indra, humen came Pawapuri then.
Celebrated Diwali, from then begin Diwali,
Mahavira, O Lord Mahavira. 4.

Your Shasan is going today also,
We worship to you "Chandna" so.
Give me blessing Prabhuvar, give me knowledge jinver,
Mahavira, O Lord Mahavira. 5.

"तीर्थंकर महावीर की दीक्षा से पूर्व देवता पालकी लेकर आ गए"

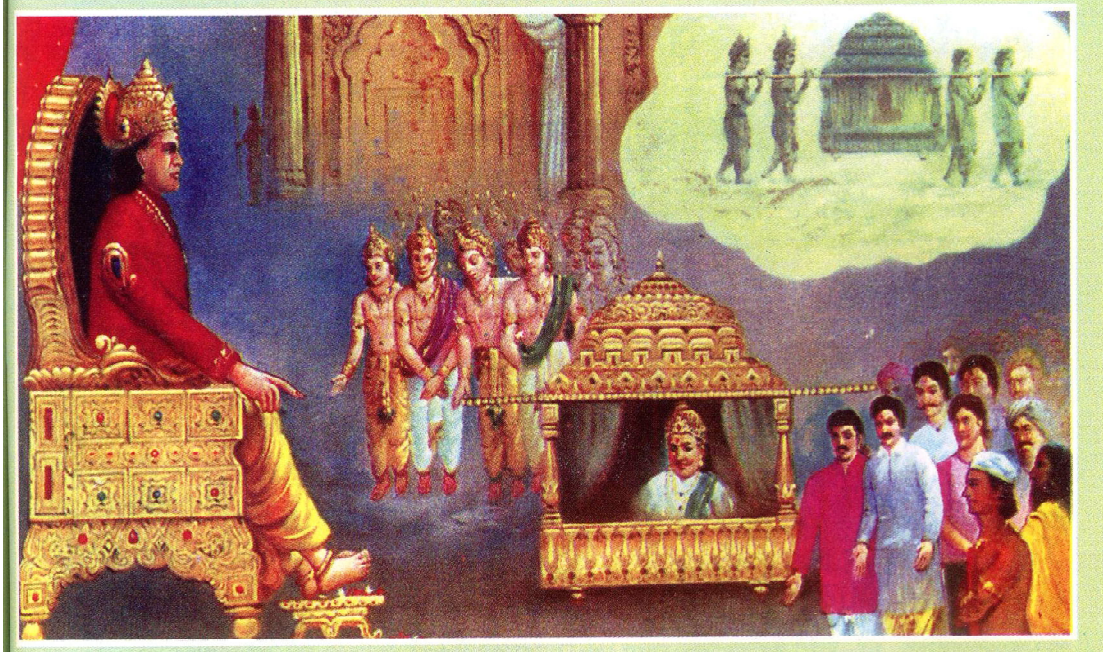

महावीर ज्यों-ज्यों युवावस्था की ओर अग्रसर हो रहे थे त्यों-त्यों उनके माता-पिता का प्रेम भविष्य की आकांक्षा में परिवर्तित होने लगा अर्थात् वे महावीर के विवाह की योजना बनाने लगे। माता त्रिशला एक सुन्दर पुत्रवधू की कल्पना करने लगीं, बहू के पायल की रुनझुन सुनने को उनके कान व्याकुल होने लगे, पौत्र के मुख का अवलोकन उनमें सुखसागर के हिलोरें भरने लगा। पिता सिद्धार्थ अपने राजसिंहासन के परमयोग्य उत्तराधिकारी पर गौरवान्वित थे तथा सम्पूर्ण कुण्डलपुर अपने राजकुमार के विवाहक्षणों का इन्तजार कर रहा था। किन्तु यह क्या ? ---------- महावीर के तो एक शब्द ने ही सारे रंग में भंग कर दिया –

"मुझे अपने पूर्वभव का जातिस्मरण हो गया है अत; मैं विवाह नहीं करूंगा और जैनेश्वरी दीक्षा धारणकर सिद्धिकन्या का वरण करूंगा।" उनका यह निर्णय अटल रहा अत: माता-पिता के प्रबल माह पर उन्हें विजय प्राप्त हुई। उनके वैराग्य की चर्चा ज्ञात होते ही ब्रह्मस्वर्ग के लौकान्तिकदेवों ने आकर महावीर के अखण्डब्रह्मचर्यमयी वैराग्य की बहुत प्रशंसा एवं अनुमोदना की।

महावीर अपने माता-पिता से विदा लेकर ज्यों ही वन जाने को तैयार हुए तुरन्त देवगण स्वर्ग से "चन्द्रप्रभा" नाम की पालकी लेकर आ गए। ज्यों ही भगवान उसमें बैठे, देवता उसे लेकर चलने लगे किन्तु राजसभा में उपस्थित सभी मनुष्यों ने देवताओं को रोक दिया और कहने लगे – "भगवान की पालकी पहले हम लोग उठाएंगे, उनका जन्म चूंकि हमारे मनुष्यलोक में हुआ है अत: मनुष्यों को ही उनकी पालकी उठाने का प्रथम अधिकार होना चाहिए।"

तब देवता बोले – "ऐसा कैसे हो सकता है ? भगवान तो जब गर्भ में भी नहीं आए थे उसके छह महिने पूर्व से ही हमने कुण्डलपुर में आकर रत्नवृष्टि शुरू करके लगातार पन्द्रह महिने तक रत्न बरसाते हुए गर्भ, जन्मकल्याणक महोत्सव मनाया। उसके बाद से सुमेरुपर्वत पर जन्माभिषेक, पुन: स्वर्ग से वस्त्राभूषण, भोजन आदि की व्यवस्था भी हम देवतागण ही संभाल रहे हैं और आज भी हम लोग स्वर्ग से ही यह "चन्द्रप्रभा" पालकी लेकर आए हैं इसलिए भगवान को वन में ले जाने का प्रथम सौभाग्य भी हम ही प्राप्त करें।

मनुष्य और देवताओं के इस विवाद को सुलझाया महाराजा सिद्धार्थ ने, उन्होंने कहा – "पुण्यशाली देवताओं ! आज भगवान जिस संयम पथ को स्वीकार करने जा रहे हैं उस पथ को आप लोग चूंकि अपनी देवपर्याय से ग्रहण नहीं कर सकते हैं इसका अधिकार स्वभावत: मनुष्यों को ही प्राप्त हुआ है इसलिए भगवान की इस दीक्षा पालकी को सर्वप्रथम मनुष्यों को उठाने दें।"

राजा सिद्धार्थ के इस उत्तर से देवता निरुत्तर हो गए, तब जय-जयकार करते हुए उस पालकी को सर्वप्रथम भूमिगोचरी राजाओं ने, फिर विद्याधर राजाओं और उसके बाद इन्द्र और देवताओं ने उठाकर "षण्ड" नामक वन में रख दिया।

"तीर्थंकर महावीर की दीक्षा एवं राजा कूल के यहाँ प्रथम आहार"

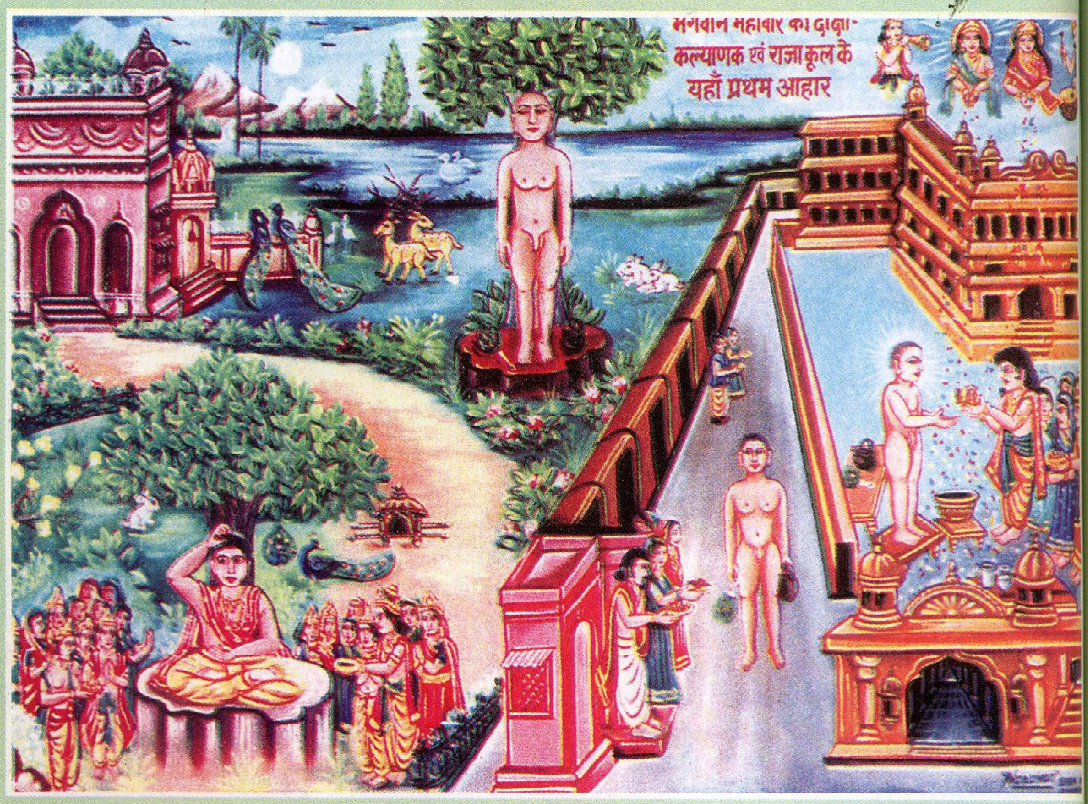

षण्ड वन ज्ञातृवन भी नाम आता है में पहुंचकर भगवान रत्नमयी शिला के ऊपर शचि इन्द्राणी के द्वारा बनाए गए चौक पर उत्तरदिशा की ओर मुंह करके विराजमान हो गए।

मगसिर कृष्णा दशमी की वह पवित्र तिथि थीं, जब भगवान ने बेला का नियम दो दिन का उपवास लेकर अपने सभी वस्त्र, आभरण, माला आदि उतारकर फेंक दिए और शरीर से पूर्ण निर्मम होकर अपने केशों का लुंचन कर डाला। इन्द्र ने उनके सभी केश मणिमयी पिटारे में रखकर उनकी पूजा की एवं उन्हें उत्सवपूर्वक क्षीरसागर में विसर्जित कर दिया।

भगवान जब निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनि हो गए और तत्काल उन्हें मन:पर्ययज्ञान प्रगट हो गया। मति, श्रुत, अवधि ये तीन ज्ञान तो तीर्थंकरों को जन्म से ही रहते हैं और दीक्षा देते ही मन:पर्ययज्ञान प्रगट हो जाता है।

दो उपवास के बाद पारणा के लिए महामुनि महावीर "कुल" ग्राम में पहुंचे, वहां के राजा "कूल" वकुल और नृपकुमार नाम भी आता है ने भक्ति से पड़गाहन कर नवधाभक्ति से भगवान को प्रथम पारणा में खीर का आहार दिया फलस्वरूप उनके घर पर पंचाश्चर्यों की वर्षा हुई।

"चन्दना के बन्धन टूट गए"

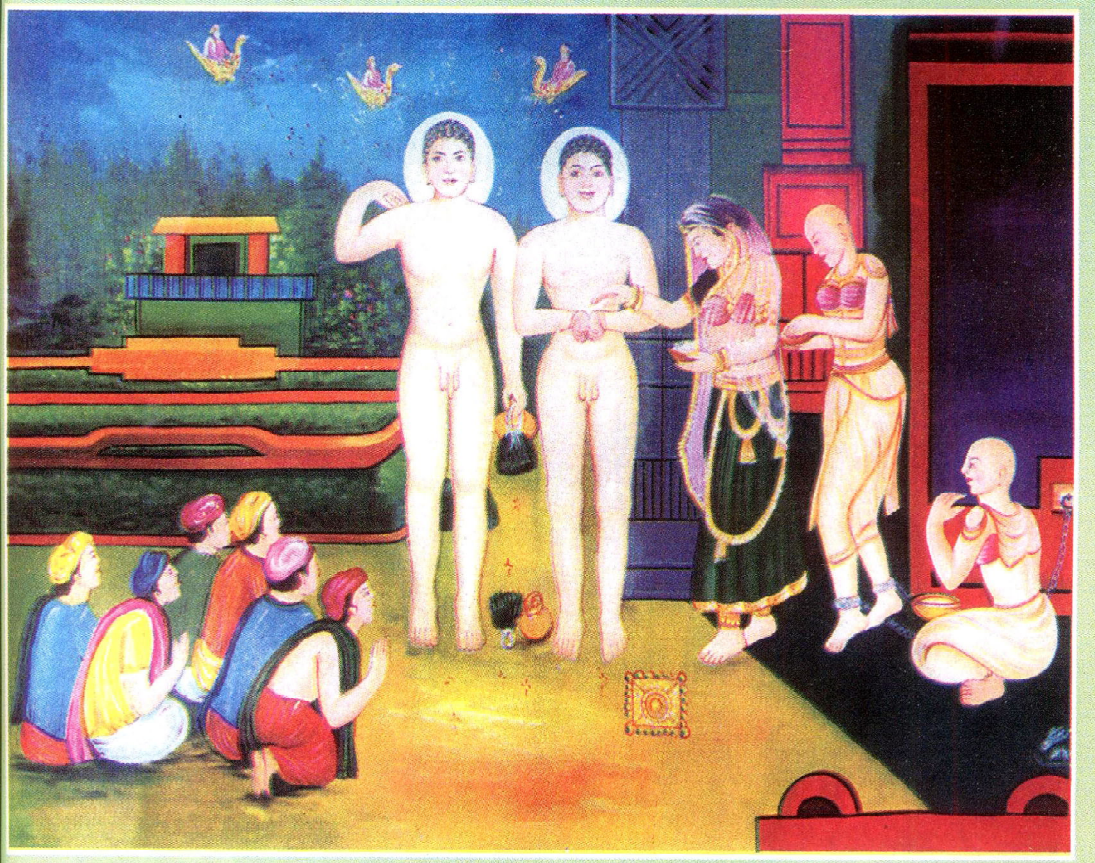

एक बार वैशाली के राजा चेटक की सबसे छोटी पुत्री चन्दना महावीर की मौसी को वनक्रीडा में आसक्त देख किसी विद्याधर ने उसे हरण कर लिया और पत्नी के डरसे उसने चन्दना को भयंकर जंगल में छोड़ दिया। वहां भीलों के सरदार ने उसे ले जाकर कौशाम्बी के सेठ वृषभदत्त को सौंप दिया।

सेठ की पत्नी सुभद्रा को उसके प्रति यह संदेह होने लगा कि कहीं सेठ जी इसे मेरी सौत न बना दें इसलिए वह चन्दना के सिर के केश मुंडवाकर उसे सांकल में बांधकर रखती थी तथा खाने के लिए उसे मिट्टी के सकोरे में कांजी से मिश्रित कोदों का भात दिया करती थी।

किसी दिन उस कौशाम्बी नगरी में आहार के लिए मुनिराज भगवान महावीर स्वामी आ गए, उन्हें देखकर चन्दना उनके सामने जाने लगी, तब उसी समय उसकी सांकल के सब बन्धन स्वयमेव टूट गए, सिर पर सुन्दर घुंघराले केश आ गए और वह राजसी वस्त्रालंकारों से सुसज्जित हो गई।

शील के प्रभाव से मिट्टी का सकोरा सोने का कटोरा बन गया और कोदों का भात सुगन्धित चावल बन गया। तब उस चन्दना ने भगवान महावीर का पड़गाहन कर उन्हें नवधाभक्तिपूर्वक आहार दिया। उसके यहाँ पंचाश्चर्यों की वृष्टि हुई और सारे नगरवासियों ने सेठानी सुभद्रा की निन्दा करते हुए महासती चन्दना की खूब प्रशंसा की। वहीं पर अपने कुटुम्बीजनों के साथ चन्दना का मिलन हो गया। आगे चलकर यही चन्दना भगवान महावीर के समवसरण में आर्यिका दीक्षा ग्रहणकर प्रमुखगणिनी पद पर सुशोभित हुई हैं।

"रुद्र द्वारा भगवान महावीर पर उपसर्ग"

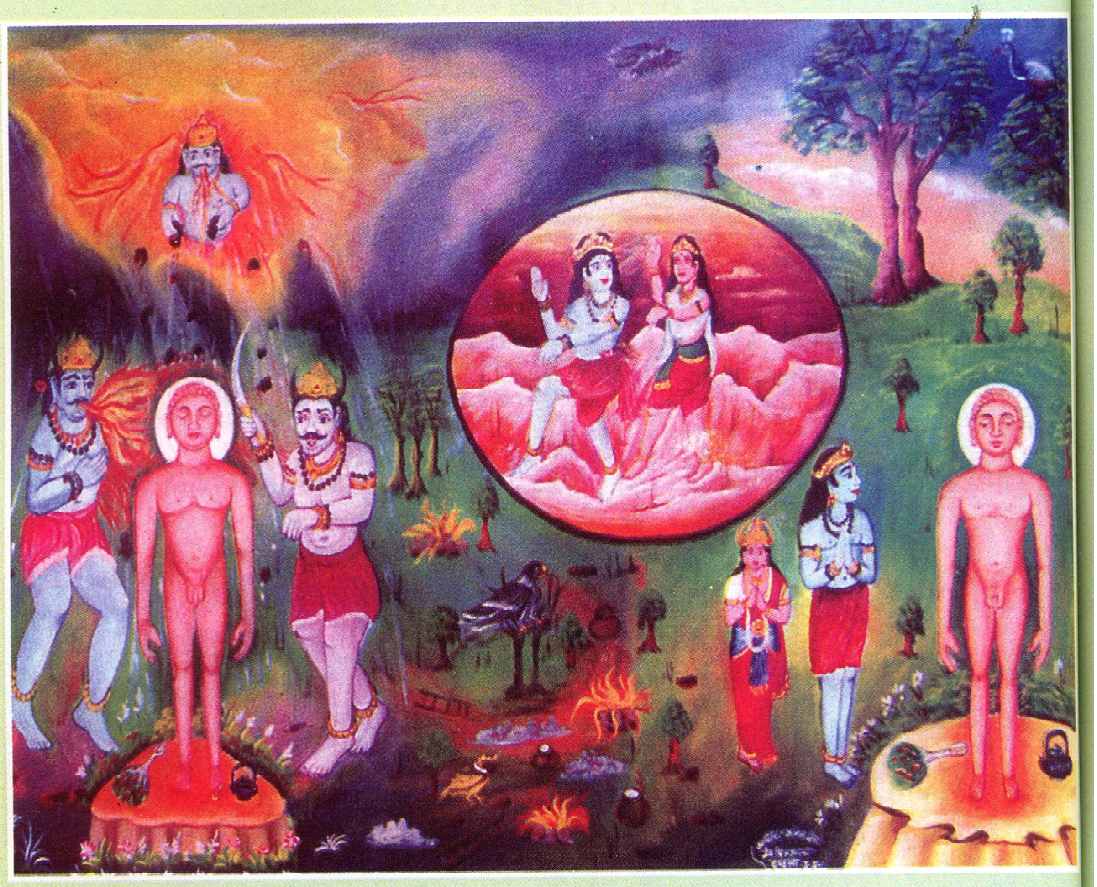

तीर्थंकर महामुनि महावीर विहार करते-करते एक बार उज्जयिनी नगरी पहुंचे। वहां "अतिमुक्तक" नामक वन में स्थित श्मशान भूमि में वे ध्यानमग्न होकर खड़े हो गए। उस समय "भव" नामक एक रुद्र ने उनके धैर्य की परीक्षा करने के लिए रात्रि में बड़े-बड़े बेतालों का रूप बनाकर उनके ऊपर भीषण उपसर्ग किया। उसने सर्प, हाथी, सिंह, अग्नि और वायु के साथ भीलों की सेना बनाकर उपसर्ग किया।

पाप कमाने में अतीव निपुण वह रुद्र अपनी विद्या के प्रभाव से भयंकर उपसर्गों को करते हुए प्रभु को ध्यान से विचलित नहीं कर सका। अन्त में उसने उनका "महतिमहावीर" नाम रखकर प्रभु की अनेक प्रकार से स्तुति की, अपनी भार्या के साथ भक्ति नृत्य किया और सब मत्सर भाव छोड़कर वहां से चला गया।

विशेष – दिगम्बर जैन ग्रन्थों के अनुसार यह विशेष ज्ञातव्य विषय है कि महावीर के उपर जीवन में मात्र एक बार ही उपसर्ग हुआ है। चन्डकौशिक सर्प द्वारा डसना, कीलों का ठोका जाना या मार्ग में किसी प्रकार के उपसर्ग का कोई वर्णन हमारे शास्त्रों में नहीं है अतः दिगम्बर जैन मन्दिरों में उन चित्रों का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।

मध्य प्रदेश की उसी उज्जयिनी नगरी के जयसिंहपुरा क्षेत्र में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से "तीर्थंकर महावीर तपोभूमि" का निर्माण चल रहा है जो शीघ्र ही उक्त प्राचीन इतिहास को दर्शाने वाला एक "ऐतिहासिक तीर्थ" बनकर समाज के समक्ष प्रस्तुत होने वाला है।

"महावीर का केवलज्ञान महोत्सव"

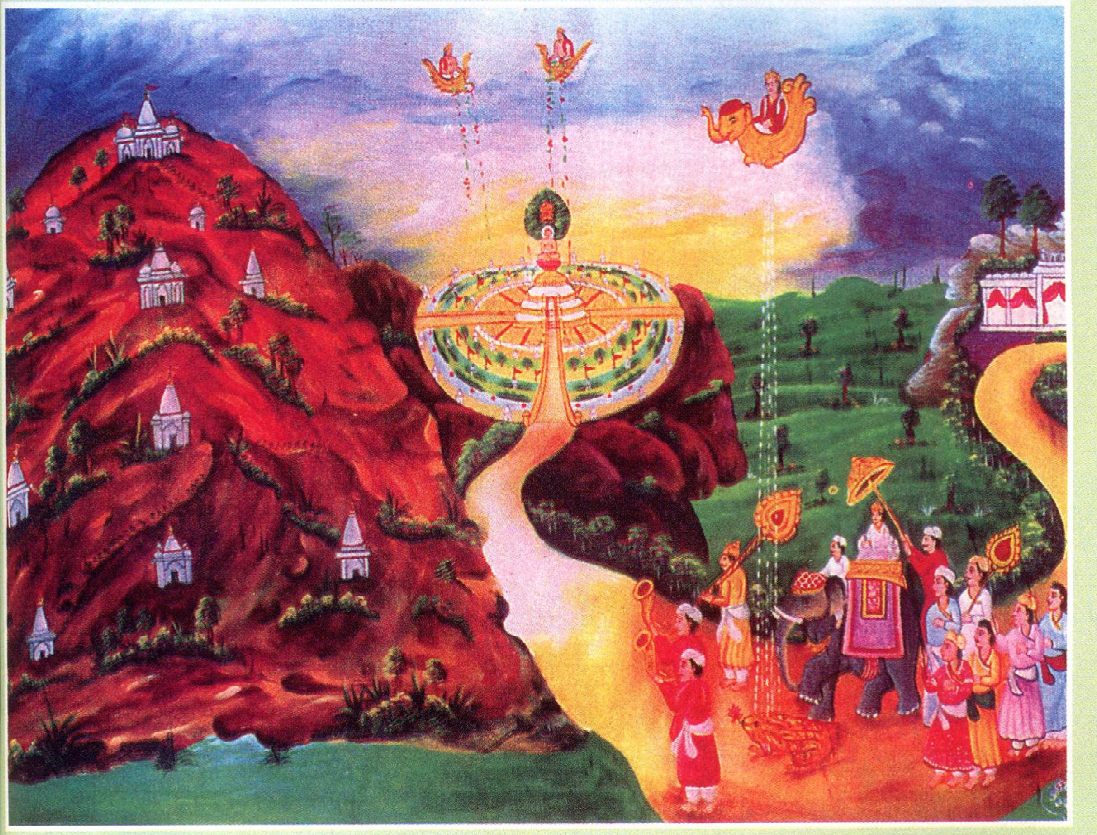

बारह वर्ष पांच महिने पन्द्रह दिन की कठोर तपस्या के बाद वैशाख शुक्ला दशमी के दिन "जृंभिक" ग्राम के समीप "ऋजुकूला" नदी के किनारे "मनोहर" वन में शाल वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ महावीर को केवलज्ञान प्राप्त हो गया। देवताओं ने तुरन्त धरती से बीस हजार हाथ की ऊँचाई पर आकाश में समवसरण की रचना कर दी किन्तु गणधर के अभाव में ६६ दिन तक महावीर की दिव्यध्वनि नहीं खिरी।

पुनः राजगृही के विपुलाचल पर्वत पर जब समवसरण पहुंचा तो सौधर्मइन्द्र की सूझबूझ के फलस्वरूप ब्राह्मण ग्राम निवासी इन्द्रभूति गौतम ने अपने पाँच सौ शिष्यों के साथ समवसरण में आकर महावीर की शिष्यता स्वीकार कर जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली। उनके दीक्षा लेते ही श्रावण कृष्णा एकम को भगवान महावीर की प्रथम देशना प्रगट हुई और इन्द्रभूति गौतम उनके प्रमुख गणधर चार ज्ञानधारी गणधर कहलाए।

इसी प्रकार राजगृही नगरी के सम्राट राजा श्रेणिक महावीर के मौसाजी ने उस समवसरण के प्रमुख श्रोता बनकर भगवान से ६० हजार प्रश्न किए थे। कहते हैं कि प्रश्नों के उत्तर से प्राप्त ज्ञान के आधार पर ही हमारा समस्त उपलब्ध दिगम्बर जैन साहित्य रचा गया है।

एक दिन राजा श्रेणिक अपने परिवार के साथ हाथी पर बैठकर समवसरण में जा रहे थे तो रास्ते में कमलपंखुड़ी मुंह में दबाकर भक्ति हेतु जाता हुआ एक मेंढक हाथी के पैर से दबकर मर गया और महावीर की भक्ति के प्रभाव से वह देव बनकर तुरन्त समवसरण में पहुंचकर नृत्य करने लगा। भक्ति की इस महिमा को जानकर राजा श्रेणिक एवं सभी प्राणी बड़े प्रसन्न हुए और मेंढक की भक्ति का यह कथानक सदा के लिए अमर हो गया।

पावापुर से मोक्ष पधारे

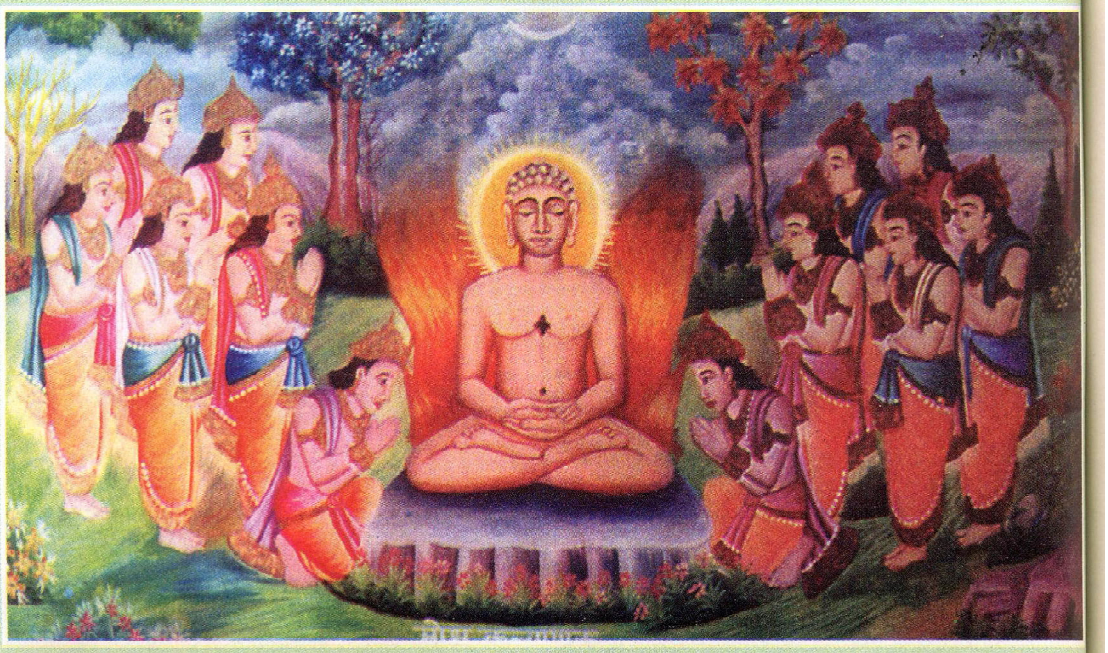

आयु के अन्तिम क्षणों में भगवान महावीर बिहार प्रान्त के "पावापुर" नगर में पहुंचे। वहाँ के "मनोहर" नामक वन के भीतर एक बड़े सरोवर के बीच में मणिमयी शिला पर विराजमान हो गए। दो दिन के योगनिरोध एकाग्रध्यान में लीनता के पश्चात् कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को रात्रि के अंतिम समय स्वाति नक्षत्र में सम्पूर्ण अष्टकर्मों का नाश करके निर्वाणपद प्राप्त किया और उनकी अमूर्तिक आत्मा सिद्धशिला पर जाकर सदा-सदा के लिए विराजमान हो गई। अब वे वापस कभी भी अनन्त काल तक संसार में नहीं आएंगे।

भगवान के मोक्षमगन के पश्चात् स्वर्ग से इन्द्र एवं देवता आएं और अग्निकुमार देवों ने अपने मुकुटानल की अग्नि प्रज्वलित कर भगवान के शरीर का अंतिम संस्कार किया। उस समय सुर-असुरों द्वारा जलाई हुई बहुत भारी दैदीप्यमान दीपकों की पंक्ति से पावापुरी का आकाश सब ओर से जगमगा उठा। तब से लेकर आज तक इस भारतवर्ष में कार्तिक कृष्णा अमावस को "दीपावली" पर्व के रूप में मनाया जाता है।

भव्यात्माओं ! जैनसमाज के हजारों पुण्यात्मा नर-नारी दीपावली के दिन पावापुरी में जाकर निर्वाणलाडू चढ़ाते हैं तथा सम्पूर्ण जैनसमाज अनेक तीर्थों अथवा शहर-नगर के मंदिरों में निर्वाणमहोत्सव मनाते हुए लाडू चढ़ाते हैं और असंख्य दीप जलाकर दीवाली खुशियां मनाते हैं। मैने इन खुशी के क्षणों को एक छोटे से अंग्रेजी के भजन में संजोया है जिसकी कुछ पंक्तियां यहां प्रस्तुत हैं –

I will go to Pavapur, there is temple Jalmandir,
After offering Ladoo I will celebrate Diwali,
Be Happy Diwali, Be Happy Diwali.
Be Happy Diwali, Diwali ----------
Tirthankar Mahavir attained Libreation from there,
Saudharm Indra and Devas, came there from heaven ---------- came,
Men women were praying, all being were praying,
Give me knowledge vira, Give me knowledge Vira. ----- I will go ------- 1.

राजगृही तीर्थ का महत्व

अनेक प्राचीन एवं ऐतिहासिक कथाओं को स्वयं में संजोए हुए राजगृही नगरी जहां आज से 11 लाख वर्ष पूर्व भगवान मुनिसुव्रतनाथ के गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञानकल्याणक से पावन हुई है वहीं यह अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की प्रथम देशनास्थली के रूप में विश्वविख्यात है। आज से 2600 वर्ष पूर्व राजगृही नगरी के विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर का दिव्य समवसरण आया था और 66 दिनों के पश्चात् गौतम गणधर के आने पर भगवान की दिव्यध्वनि खिरी थी, श्रावण शुक्ला एकम की वह पवित्र तिथि थी जिसे आज वीरशासन जयंती पर्व के नाम से जाना जाता है।

यह वह पवित्र भूमि है जहाँ से भविष्यत्काल में होने वाले प्रथम तीर्थंकर की शृंखला जुड़ी है, इन्हीं भगवान महावीर के प्रमुख श्रोता राजा श्रेणिक भविष्यत्कालीन चौबीसी में अयोध्या नगरी में महापद्म नामक प्रथम तीर्थंकर के रूप में जन्म लेंगे। इसी पवित्र भूमि से जीवन्धर कुमार, सुधर्माचार्यादि अनेक मुनि मोक्ष गए हैं जिसका छत्रचूड़ामणि, जीवन्धर चम्पू आदि में सुन्दर वर्णन है। राजा श्रेणिक एवंरानी चेलना का इतिहास इसी नगरी से जुड़ा है, इसी नगरी में भगवान महावीर के समवसरण में भक्तिवशकमल पांखुड़ी को मुंह में दबाकर दर्शन की इच्छा से जाने वाला मेढक जैसा पामर प्राणी भी शुभ भावों से मरकर देव हो गया था।

जैन संस्कृति की महान धरोहर के रूप में यह तीर्थ हमारे और आपके जीवन को पवित्र करे और भगवान की दिव्यध्वनि रूप ग्रंथों का स्वाध्याय करके आप लोग अपने समीचीन ज्ञान को विकसित करें यही राजगृही तीर्थ की वंदना का सार है।

-गणिनी ज्ञानमती

तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ की यात्रा अवश्य करें

दिगम्बर जैनागम में तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या एवं शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर मानी गयी है। अयोध्या नगरी में वर्तमान चौबीसी के 5 तीर्थंकरों (श्री ऋषभदेव, श्री अजितनाथ, श्री अभिनंदननाथ, श्री सुमतिनाथ, श्री अनंतनाथ) के जन्म हुए हैं।

वर्तमान में अयोध्या तीर्थ पर 5 तीर्थंकरों की 5 टोंक, तीर्थंकरत्रय टोंक, कटरा स्थित दि. जैन मंदिर, भरत-बाहुबली टोंक, रायगंज मंदिर स्थित 31 फुट उत्तुंग बड़ी मूर्ति, तीन चौबीसी मंदिर, समवसरण मंदिर, गुरु मंदिर, भगवान ऋषभदेव राजकीय उद्यान आदि वंदनीय एवं दर्शनीय स्थल हैं। रायगंज मंदिर परिसर में यात्रियों के आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था है। फैजाबाद से अयोध्या 6 किमी.एवं लखनऊ से 130 किमी. है।

सम्मेदशिखर, प्रयाग, बनारस आदि तीर्थों की यात्रा करने वाले यात्रीगण आदितीर्थ अयोध्या के दर्शन कर सातिशय पुण्य बंध करें।

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष)

सरोज कुमार जैन, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) (महामंत्री)

–सम्पर्क सूत्र–

श्री दिगम्बर जैन अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी

रायगंज, बड़ी मूर्ति, पो.-अयोध्या (फैजाबाद) उ.प्र., फोन नं.-(05278) 232308

महावीर-जन्मभूमि-प्रकरण

कुण्डलपुर या वैशालीः एक अनुचिंतन

- प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन
अध्यक्ष-अ.भा.दि. जैन शास्त्री परिषद
104, नई बस्ती, फिरोजाबाद-283203

यह युग नई-नई खोजों का है। प्रतिवर्ष देश में कुछ नए अतिशय क्षेत्र खोज लिए जाते हैं। वैसे भी अतिशय क्षेत्रों की किसी सीमा का उल्लेख आगम में नहीं मिलता। वे असंख्य हो सकते हैं और गाव-गांव में हो सकते हैं। खोज अतिशय क्षेत्रों तक ही सीमित रहे तो भी गनीमत है, किन्तु क्या किसी एक ही महापुरुष के कल्याणक क्षेत्र या सिद्धक्षेत्र भी एक से अधिक हो सकते हैं, यह विचारणीय है। दुख है कि आज हमारे कुछ समर्थ महानुभावों ने अपने बुद्धि कौशल से यह कमाल भी कर दिखाया है। हमारे जैन भाई यह नहीं समझ पा रहे हैं कि महावीर का जन्म कहां हुआ था- कुण्डलपुर (नालंदा) में अथवा वासुकुण्ड या कुण्डग्राम (वैशाली) में? वह मोक्ष कहां से गए थे पावापुरी (बिहार शरीफ) या सठियाव गांव (गोरखपुर) से? क्या एक ही व्यक्ति दो स्थानों पर एक साथ जन्म ले सकता है या दो स्थानों पर एक साथ प्रयाण कर सकता है? जब अपने अंतिम तीर्थंकर के बारे में यह भ्रांति है, तब उनसे पूर्ववर्ती तीर्थंकरों के बारे में तो न जाने ऐसी कितनी नई-नई बातें गढ़ी जा सकती हैं और गढ़ी भी जा चुकी हैं। हम किसी निर्दोष व्यक्तित्व का निर्माण तो नहीं कर पा रहे हैं, किन्तु नई-नई पवित्र भूमियों को खोज निकालने में जरूर माहिर हैं। इंसानियत का ढांचा तैयार करने की अपेक्षा किसी भूमि या भूमिखण्ड के नये-नये नक्शे बनाना या बदलना आज हमारे लिए ज्यादा आसान हो गया है।

बात सन् 1993 की है हम लोग बंगलौर जा रहे थे। हमें श्रवणबेलगोल के महामस्तकाभिषेक महोत्सव में सम्मिलित होना था। कर्नाटक एक्सप्रेस गुंटकल स्टेशन से आगे बढ़ी तो एक स्टेशन आया अनन्तपुर और उससे आगे पड़ा एक दूसरा स्टेशन धर्मवरम्। इंदौर के एक जैन सहयात्री ने हमसे कहा कि इधर के स्टेशनों के नाम बड़े प्यारे हैं। हम बोले-क्यों नहीं होंगे? इनका संबंध हमारे पन्द्रहवें और चौदहवें तीर्थंकर भगवन्तों से जो है। जरूर यहाँ कभी न कभी उनका प्रवास या विहार हुआ होगा। लोग हमारा मुंह देखने लगे। कुछ ने तो रेल की खिड़की से अपने सिर और हाथ निकालकर इन स्टेशनों को प्रणाम भी किया। कितने भले और भोले हैं हमारे ये जैन भाई। विनोद में कही गई पंडित की बात पर कितना भरोसा करते हैं। आज जैनियों के इसी भोलेपन का लाभ थोड़े से बौद्धिक व्यायाम से कुछ समर्थ लोग उठाने में सफल हो रहे हैं। महावीर की जन्मभूमि की नई खोज में तो कोई नाम साम्य भी नहीं है। भाषा विज्ञान के किस नियम से बसाढ़ को वैशाली अथवा वासुकुण्ड या कुण्डग्राम में बदला जा सकता है? क्या इस पर विचार नहीं होना चाहिए था। इस नई खोज के बारे में राष्ट्रीय स्तर पर बहस का आयोजन किए बिना ही चंद लोगों द्वारा फतवा जारी करना कथमपि उचित नहीं था।

अंग्रेजी व्याकरण का एक नियम है कि किसी प्रसिद्ध व्यक्ति या स्थान के नाम (Proper Noun)

में प्रायः बदलाव नहीं होता। जो जिस नाम से प्रसिद्ध होता है, उसे उसी नाम से पुकारा जाता है। न तो उसके लिए पर्यायवाची शब्द का प्रयोग होता है और न उसका अनुवाद ही किया जा सकता है। यदि किसी गांव का नाम मक्खनपुर है तो उसे मक्खनग्राम कहना या नवनीतपुर कहना त्रुटिपूर्ण तो है ही, भ्रमोत्पादक भी है। अंग्रेजी में उसे बटर विलेज (Butter Villege) कहना भी हास्यास्पद होगा। अंग्रेजों ने लंका का नाम बदलकर 'सीलोन' रख दिया था, पर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वहां के शासकों ने पुनः उसके मूल नाम को पहले से भी अधिक आदरसूचक बनाकर श्रीलंका कर दिया। यह तो हम ही लोग इतने लचीले हैं कि हमारे संविधान में आज भी देश का नाम इंडिया के रूप में दर्ज है और हमें आज तक इस पर कोई आपत्ति नहीं है। बसाढ़ को वैशाली और पुर को ग्राम कहना भी व्याकरणसम्मत नहीं है। सभी जैनग्रंथों में भगवान की जन्मभूमि को कुण्डलपुर या कुण्डपुर के नाम से ही उल्लेखित किया गया है। किसी एक भी आचार्य ने पुर के स्थान पर ग्राम का प्रयोग नहीं किया।

भारत में अनेक जैन तीर्थ ऐसे हैं, जिन्हें दिगम्बर और श्वेतांबर दोनों ही मानते और पूजते हैं तथा कुछ तीर्थों के बारे में दोनों में मतभिन्नता भी है। महावीर का जन्म कुण्डपुर या कुण्डलपुर में हुआ था, इस विषय में दोनों ही सम्प्रदाय एकमत हैं, किन्तु यह नगर कहाँ पर अवस्थित है, इसको लेकर दोनों में मतभेद हैं। वैशाली को वीर-जन्मभूमि के रूप में मान्यता प्रदान करने के लिए तो अधिकांश श्वेतांबर भाई भी तैयार नहीं हैं। यह तो हमारे चंद नेताओं का उतावलापन ही था, जो उन्होंने कुछ पाश्चात्य और कुछ जैनेतर विद्वानों की खोज पर आनन-फानन में अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दी।

वैशाली को जन्मभूमि मानना आगमसम्मत तो है ही नहीं, युक्तिसंगत भी नहीं है। आज से 54 वर्ष तक तो वैशाली का नाम पुराणों में पढ़ने को अवश्य मिलता था, किन्तु धरतीपर उसका कहीं अस्तित्व ही नहीं था। 14वीं सदी के यति मदनकीर्ति ने अपनी कृति **'शासन चतुश्त्रिंशका'** में अनेक तीर्थों का वर्णन किया है, किन्तु वैशाली कुण्डग्राम का कोई उल्लेख नहीं किया। दूर की बात छोड़िए गतबीसवीं सदी के प्रथम दशक में प्रकाशित **'प्रसिद्ध जैनतीर्थ स्थलों का वृत्तान्त'** नामक पुस्तक में भी वैशाली का नाम नहीं है।सन् 1961 में प्रकाशित दिल्ली जैन डायरेक्टरी में पृ. 225 से 256 तक भारत के प्रमुख जैन तीर्थों का विवरण संकलित किया गया है। उसमें नालंदा और कुण्डलपुर का उल्लेख तो है, परन्तु वैशाली कानहीं। उसमें लिखा है कि नालंदा का पार्श्ववर्ती यह कुण्डलपुर नगर कई बार बना और कई बार नष्ट हुआ।

यहां हुए आर्क्योलॉजीकल सर्वे (Archaeological Servey) के फलस्वरूप अनेक बौद्ध और जैन मंदिरों के अवशेष और मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं। एक नगर बड़गांव का भी उल्लेख है, जहां कभी महावीर के समवशरण के आने की बात कही जाती है। यह गांव आज भी यहां है।

बताया जाता है कि विशाल अट्टालिकाओं से सुशोभित यह वैशाली नगर 5वीं या 6वीं शताब्दी में पूर्णतया नष्ट हो चुका था। आजादी के पूर्व की किसी भी पुस्तक में वैशाली को भगवान की जन्मभूमि नहीं बताया गया है। सदियों से नालंदा के निकट स्थित कुण्डलपुर को ही यह गौरव प्राप्त होता रहा है। इसकी पुष्टि भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित ''भारत के जैनतीर्थ'' पुस्तकमाला के बिहार, बंगाल, उड़ीसा से संबंधित द्वितीय भाग से होती है।यहां शताधिक वर्षों से चैत्र सुदी 12 से 14 तक भगवान महावीर का जन्मकल्याणक महोत्सव मनाने के लिए भारतवर्षीय दिंगबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से एक मेला भी आयोजित किया जाता रहा है। बाद में सन् 1951 में स्व. श्रीमान साहू शांतिप्रसाद जी द्वारा अचानक वैशाली को जन्मभूमि के रूप में मान्यता दिये जाने के बाद जानबूझकर कुण्डलपुर की उपेक्षा करने का

एक सोचा-समझा सिलसिला शुरू हुआ, जो चिन्तनीय है। इस अविचारित खोज के बाद भी ग्रंथमाला के विद्वान् सम्पादक स्व. पं. बलभद्र जी द्वारा यह लिखा जाना बहुत महत्वपूर्ण है **'शताब्दियों से जिस कुण्डलपुर की एक जैन तीर्थ के रूप में मान्यता रही है, उसको भविष्य में भी तीर्थ माना जाता रहेगा।'**

तीर्थक्षेत्र कमेटी में अचानक यह बदलाव केन्द्र सरकार से आर्थिक अनुदान पानेके लालच में आया अथवा अपनी एक नई खोज से मिलने वाली नामवरी की लालसा ने उन्हें उसके लिए प्रेरित किया, अब इस पर भी खोज की आवश्यकता है। पुराने तीर्थों की उपेक्षा और नए तीर्थों के निर्माण के प्रति जागा मोह हमारी परम्परा बन गया है। स्व. पं. नाथूराम प्रेमी ने ठीक ही लिखा था-**'प्राचीनता की रक्षा करने में जैन समाज उतना ही असावधान रहा है, जितना नवीन निर्माण करने में कटिबद्ध।'** जहां जैनत्व का कोई चिन्ह तक कभी नहीं पाया गया, वहां भी नए-नए तीर्थ बनते हुए देखने से उनकी यह बात प्रमाणित भीहो रही है।

कुण्डलपुर के जैन मंदिर और मूर्तियों के दर्शन हमने सर्वप्रथम सन् 1944 में या 45 में अपने पूज्य पिताजी के साथ किये थे। तब हमारी उम्र लगभग 12 वर्ष की रही होगी। उसके बाद भी दो-तीन बार हमारा वहां जाना हुआ है। तभी से निरंतर भगवान महावीर की जन्मभूमि के रूप में हम उसका परिचय प्राप्त करते रहे हैं। अ.भा.दि.जैन परिषद पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित **'जैन तीर्थ दर्शन'** का सन् 1998 का नया संस्करण हमारे पास है। उसने लिखा है-**'कुण्डलपुर नालंदा को ही भगवान महावीर की जन्मभूमि माना जाता रहा है, किन्तु अब यह श्रेय वैशाली के कुण्डग्राम को प्राप्त हो गया है।'** यहाँ यह श्रेय वैशाली के कुण्डग्राम को प्राप्त हो गया है' के स्थान पर यह श्रेय चंद लोगों ने उसे दे दिया है, यह लिखना ज्यादा उचित होता।

कुण्डलपुर को जन्मभूमि मानने की अपनी पुरानी धारणा को बट्टे खाते में डालने के पीछे क्या कारण थे तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी को पूरे समाज को यह नहीं बताना चाहिए था? खैर, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। कमेटी को अपनी इस नई खोज का यथाशीघ्र पुनर्मूल्याकंन करते हुए **'जब जागे,तभी सवेरा'** की कहावत को चरितार्थ करना चाहिए?

इतिहास को बदलने की चेष्टा एक बड़ी भूल है। **यह निर्विवाद है कि महावीर का जन्म वैशाली में नहीं हुआ था।** उनकी माता प्रियकारिणी अवश्य विशाला नगरी वैशाली के महाराज चेटक के यहां जन्मी थीं। इस तरह वैशाली महावीर की ननिहाल थी। उन्हें वैशाली का राजकुमार कहना या लिखना असंगत ही नहीं, अक्षम्य भी है। महाराजा चेटक के दस पुत्र थे। योग्य पुत्रों के रहते हुए धेवते (पुत्री के पुत्र) को राजकुमार कहने की प्रथा तो कहीं भी देखने में नहीं आती। महावीर जैसा प्रतापी पुत्र **'उत्तमा आत्मनाख्याताः'** की श्रेणी में गणनीय रहा है, उन्हें **'मातुलात् ख्याताः'** की अधम श्रेणी में रखने की भूल का हमें तुरंत परिष्कार करना चाहिए।

सभी पुराणों में लिखा है कि कुण्डलपुर एक स्वतंत्र और प्रभावशाली गणराज्य था। उसके वैभव का प्रचुर वर्णन भी जैनशास्त्रों में पाया जाता है। उसके अधिपति महाराजा सिद्धार्थ भी एक शक्तिशाली, प्रतापी और स्वतंत्र राजा थे। कुण्डलपुर को वैशाली के एक सन्निवेश के रूप में स्वीकार करने से तो उसके स्वतंत्र राज्य होने पर ही प्रश्नचिन्ह लग जायेगा तथा लोगों को लगेगा कि महाराजा सिद्धार्थ अवश्य ही कोई साधारण राजा थे और उनका अपना कोई आभामंडल भी नहीं था। वैशाली के राजा के कारण ही उनका मान सम्मान था। हमें तो स्वप्न में भी ऐसा सोचना इष्ट नहीं है। पौराणिक वर्णन भी हमें इसकी अनुमति नहीं देते।

श्वेतांबर ग्रंथ **'सूत्रकृतांग'** आदि में महावीर को वैशालिक कहा गया है। इसका यह अर्थ निकालना ठीक नहीं होगा कि वह वैशाली के निवासी थे। श्वेतांबर अंग–साहित्य के सुप्रसिद्ध टीकाकार आचार्य शीलांक ने महावीर को वैशालिक कहे जाने के पीछे जो तर्क दिये हैं, वे विचारणीय हैं। वह लिखते हैं–

विशाला जननी यस्य, विशालं कुलमेव वा। विशालं वचनं चास्य, तेन वैशालिको जिनः।।

अर्थात्-1. जिनकी मां विशाला नगरी की थी 2. जिनका कुल विशाल था तथा 3. जिनके वचन भी विशाल थे, वह कहलाते थे वैशालिक जिन।

वाह रे बुद्धि-प्रवण दिगम्बरों! तुमने तो उन्हें वैशाली का निवासी ही बना दिया। वैशाली का राजकुमार कहकर उनके मामाओं के अधिकार पर भी पानी फेर दिया। क्या महावीर जैसे उदात्त पुरुष से भी ऐसी अनधिकृत चेष्टा की उम्मीद या कल्पना की जा सकती है? नहीं, कभी नहीं। वह वैशाली के नहीं थे, इसे स्वीकार करना ही इस ऐतिहासिक भूल का प्रायश्चित होगा।

महावीर की जन्मभूमि के संदर्भ में यदि बौद्ध ग्रंथों या श्वेताम्बर साहित्य के आधार पर निर्णय लिया जायेगा तो फिर अनेक कई उलझनें उत्पन्न होंगी। अनेक आगमविरुद्ध प्रसंगों को मानने की विवशता भी हमारे सामने उपस्थित हो सकती है। उनके अनुसार माता त्रिशला महाराजा चेटक की बहन थी, जबकि हमारे अनुसार वह उनकी पुत्री थीं। हमारी मान्यता है कि महावीर अपने पिता सिद्धार्थ के अकेले पुत्र थे, जबकि उनके अनुसार उनका एक भाई नंदीवर्धन भी था। श्वेतांबर यशोदा से उनका विवाह होना मानते हैं और कहते हैं कि उनकी एक पुत्री थी,किन्तु हम इसे सिरे से नकारते हैं। श्वेताम्बर ग्रंथों में लिखा है कि बसाढ़ के निकट दो कुण्डग्राम थे-एक ब्राह्मण कुण्डग्राम और दूसरा क्षत्रिय कुण्डग्राम। उनके अनुसार भगवान महावीर का जीव स्वर्ग से प्रथम ब्राह्मण कुण्डग्राम के ऋषभदत्त ब्राह्मण की पत्नी देवानंदा की कोख में आया और बाद में बयासी रात्रियों के बाद एक देव द्वारा उन्हें क्षत्रिय कुण्ड के महाराजा सिद्धार्थ की पत्नी त्रिशला की कोख में स्थापित किया गया। क्या गर्भापहरण की इस बेतुकी बात का भी हम समर्थन करेंगे? हमारे युगपुरुष महापुरुष के वास्तविक पिता कौन थे, इस प्रश्न का क्या उत्तर हमारे पास होगा? कोई निर्णय करने से पहले इन सब बातों पर भी विचार करना चाहिए था।

महावीर की जन्मभूमि का निर्णय दिगंबर जैन शास्त्रों के अनुसार ही हो सकता है और होना भी चाहिए। सभी दिगम्बर शास्त्र और पुराण उनकी जन्मभूमि कुण्डपुर या कुण्डलपुर को ही मानते हैं। कहीं कोई विवाद नहीं है। विवाद तो नए अनुसंधानकर्ता ने अपनी-अपनी बौद्धिक अटकलों से उत्पन्न कर दिया है। जहां तक दो कुण्डग्रामों की बात है, भगवती सूत्र का यह उल्लेख महत्वपूर्ण है-**''तीसेणं णालिंदा वाहिरियाए अदूरसामंते एत्थणं कोल्लाए णामं सण्णिवेसे होत्था। सण्णिवेस बज्जओ। तत्थणं कोल्लाए सण्णिवेसे बहुलेणाम माहणे परिवई।'**

इस कथन से स्पष्ट है कि वैशाली और नालंदा दोनों ही स्थानों के समीप कोल्लाग सन्निवेश और दो-दो कुण्डग्राम थे। इस उल्लेख के आधार पर कुण्डलपुर (नालंदा) को जन्मभूमि मानने में कोई अड़चन शेष ही नहीं रहती।

वैशाली को महावीर की जन्मभूमि तो माना ही नहीं जा सकता। यह धारणा सर्वथा अस्वीकार्य एवं निर्मूल है। श्री पी.सी. रायचौधरी ने अपनी एक पुस्तक "Jainism in Bihar " में लिखा है 'दिगम्बर सम्प्रदाय वालों ने नालंदा से दो मील दूर कुण्डलपुर नामक स्थान को महावीर की जन्मभूमि माना है। श्री राधाकृष्ण चौधरी और श्री नरेशचंद मिश्र भी वैशाली को जन्मभूमि मानने को तैयार नहीं है। ये विद्वान्

इस संदर्भ में पुनर्मूल्याकंन किये जाने पर जोर देते हैं।

सर्वश्री हर्मन जैकोबी, हार्नले और बिसेंट स्मिथ जैसे पाश्चात्य विचारकों ने प्राचीन वैशाली के कोटिग्राम से कुण्डग्राम के विकास की बात कही है,जो भाषा विज्ञान की दृष्टि से ठीक नहीं है। प्रो.रघुवरी प्रसाद सिंह ने लिखा है-**कोटि शब्द से कुण्डग्राम का विकास किसी भी प्रकार संभव नहीं है।'**

के.के. एम. कॉलेज, जमुई के प्रोफेसर डॉ. श्यामसुंदर प्रसाद ने अपनी शोधपरक पुस्तिका **''महावीर का जन्मस्थान''** में लिखा है कि **महात्मा बुद्ध ने कोटिग्राम में निवास करते समय दस सूत्रों का उपदेश दिया था, ऐसा उल्लेख संयुक्त निकाय में आता है। इससे स्पष्ट है कि यदि महावीर के समकालीन बुद्ध के समय में इस स्थान का नाम कोटिग्राम ही था, तो महावीर के लिए यह कुण्डग्राम नहीं हो सकता।'**

एक तथ्य यह भी है कि लगभग आधी सदी तक वैशाली को महावीर की जन्मभूमि के रूपमें प्रचारित और प्रसारित किये जाने के बाद भी जैनों का उसके साथ जुड़ाव नहीं हो सका है वहाँ हर वर्ष महावीर जयंती का आयोजन भी सरकार की वैशाखी के सहारे ही होता आ रहा है।जैन समाज स्वतंत्र रूप से वहां कोई आयोजन नहीं करता। इसके विपरीत बिहार के तीर्थों की यात्रा करते समय सभी जैन बंधु कुण्डलपुर अवश्य जाते ही हैं। भगवान महावीर एवं उनके साथ जुड़ी विभूतियों से संबंधित अनेक तीर्थ राजगृही, पावापुरी, गुणावा, नवादा आदि कुण्डलपुर के निकट ही हैं। वैशाली के आसपास ऐसे धार्मिक महत्व के स्थानों एवं वातावरण का नितान्त अभाव है, जो लोगों की श्रद्धा को अपनी ओर आकर्षित कर सके। यदि महावीर 30वर्ष तक वैशाली में रहे होते तो वहां अनेक नए पुण्यक्षेत्र विकसित होने चाहिए थे। इसीलिए वैशाली आज तक उपेक्षित रही और कुण्डलपुर की तुलना में भविष्य में भी उपेक्षित रहेगी।

पूज्य गणिनी प्रमुखश्री ज्ञानमती माताजी ने देर से ही सही, कुण्डलपुर के विकास की प्रेरणा देकर एक सामयिक महत्व का कदम उठाया है। पहले तो हम भी चौंके थे कि यह नया विवाद क्यों खड़ा किया जा रहा है, किन्तु जब हमने उनके और प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के विचार पढ़े तथा इस संदर्भ में उनके साथ विचार-विमर्श हुआ तो हमें लगा कि उनका यह मिशन उपेक्षणीय नहीं है। जैनागम के कुण्डलपुर के पक्ष में यदि प्रमाण देखना हो तो पाठकों को दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा प्रकाशित **''महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर''**शीर्षक पुस्तक मंगाकर पढ़नी चाहिए। वासुकुण्ड, कुण्डग्राम, बसाढ़ जैसे शब्दों की जन्मभूमि के साथ संगति बिठाने के द्राविणी प्राणायाम का परिचय उन्हें स्वयं ही मिल जायेगा। पुनरावृत्ति से बचने के लिए हम उन्हें यहां दोहराना उचित नहीं समझते।

आगम और युक्ति दोनो से ही यह तो सिद्ध होता है कि वैशाली एक इतिहास प्रसिद्ध महानगर रहा है, किन्तु महावीर की जन्मभूमि होने का एक भी प्रमाण हमें अपने आर्षग्रंथों में नहीं मिलता। वैशाली में कुछ बनाना ही हो तो कोई शानदार स्मारक बनाएं, किन्तु उसे महावीर-जन्मभूमि के रूप में प्रचारित न करें। **'जब जीव सोवे तब समझै सुपन सत्य, वही झूठ लागैं जब जागे नींद खोई कैं'**-पं. प्रवर बनारसीदास की इन पंक्तियों के अनुसार वैशाली के संदर्भ में कुछ लोगों द्वारा देखे गये स्वप्न की असलियत अब हमारे सामने आ चुकी है। अब पुनः कोई चूक हमसे नहीं होनी चाहिए।

प्रसिद्ध नाटक ''गैलीलियो'' की इन पंक्तियों के साथ हम अपनी बात समाप्त करते हैं-

''जो जब तक सच्चाई नहीं जानता,तब तक केवल अज्ञानी कहलाता है, किन्तु जानने के बाद भी जो सत्य को स्वीकार नहीं करता, वह अपराधी है।''

भगवान महावीर का जीवन और जन्मभूमि कुण्डलपुर

-पं. शिवचरणलाल जैन
अध्यक्ष-तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ
सीताराम मार्केट, मैनपुरी-205001 (उ.प्र.)

येनेदमप्रतिहतं सकलार्थतत्त्वं, उद्योतितं विमलकेवललोचनेन् ।
भक्त्या तमद्भुतगुणं प्रणमामि वीर, माराऩ्नरामर गणार्चितपादपीठम् ।।

विश्ववन्द्य भगवान महावीर के जन्म को 2600 वर्ष का अन्तराल व्यतीत हो चुका है। उनका वर्तमान तीर्थंकर पदेन जीवन तो लोककल्याणकर पंच मंगलों से विशिष्ट अद्भुत लोकोत्तर गुणों से परिपूर्ण है ही, उनका पूर्व पर्यायों में हानि बुद्धि रूप आंदोलित होता हुआ वृत्त अतिशय चमत्कारी है। क्या अमृत विष हो सकता है तथा इसके विपरीत विष अमृत के रूप में परिणत हो सकता है? इसका स्पष्ट प्रतिबिम्बन भगवान महावीर के विहंगम भवभ्रमण के दर्पण में होता है। लगभग कोड़ाकोड़ि सागरोपम काल के थपेड़ों में, प्रचंड अग्नि में तप्तायमान होते हुए कभी ठोस रूप में, कभी तरल रूप में, कभी विकृत रूप में, कभी क्षुभित रूप, कभी अशुद्ध रूप में, कभी स्थिर रूप में चामीकर स्वर्ण के समान भगवान महावीर की आत्मा पीड़ित रूप मे ंएवं पतन और उत्थान के रूप में दृश्यमान होती है। आद्य तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के दिव्य धर्ममय सामीप्य को प्राप्त करके भी कषायों के वशीभूत हो स्वयं तो अपने पराभव और अपरिमित दुःखों का पात्र बनती रही, साथ ही समस्त लोक को हिंसा, पाखण्ड एवं दुराग्रह का गरलपान कराने में लिप्त रही, किन्तु खौलता हुआ जल अंत में शीतल स्वभाव को प्राप्त होता ही है। उसी प्रकार वह विशिष्ट आत्मा भी कर्म संयोगी भावों, दुःख संतप्त भावों से रहित हो क्षमादि शीतल शुद्ध आत्म स्वभाव को प्राप्त कर शाश्वत मोक्षसुख का भाजन बना। नर से नारायण बनने की यह दिव्य कथा जन-जन के लिए प्रेरणाप्रद है। पूर्व में जिसने हिंसा का, पाप का, विभीषिकाओं का दुनिया को पाठ पढ़ाया था, उसी ने पश्चात् अपनी भूलों को स्वीकार कर आत्मशोधन रूप शस्त्र से, विश्वको अहिंसा तथा सहअस्तित्व हेतु अमोघ अस्त्र अनेकांत-स्याद्वाद रूप मृत्युंजयी औषधि प्रदान कर लोककल्याण किया। उनका दिव्य शासन अद्यावधि विद्यमान होकर विश्व को सुख शांति का पावन संदेश दे रहा है।

पूर्व पर्यायावलोकनः-यहाँ उनकी चित्र विचित्र रूप पर्यायों को उल्लेखित किया जाता है-

1. पुरुरवा भील 2. सौधर्म स्वर्ग में देव 3. मारीच या मरीचि (भगवान ऋषभदेव का पौत्र या भरत चक्रवर्ती का पुत्र) 4. ब्रह्मलोक का देव 5. ब्राह्मण पुत्र जटिल 6. सौधर्म स्वर्ग में देव 7. पुष्यमित्र ब्राह्मण 8. सौधर्म स्वर्ग में देव 9.अग्निसह ब्राह्मण 10. सनत्कुमार स्वर्ग में देव 11. अग्निमित्र ब्राह्मण 12. माहेन्द्र स्वर्ग में देव 13. भारद्वाज ब्राह्मण 14. माहेन्द्र स्वर्ग में देव, तत्पश्चात् तीव्र मान एवं मिथ्या उपदेशों के कारण असंख्यात बार **तिर्यंच गति में दुःख भोग** 15. स्थविर ब्राह्मण 16. माहेन्द्र स्वर्ग मे ंदेव 17. राजकुमार विश्वनन्दि (इस भव में दिगंबरी दीक्षा ली) 18. महाशुक्र स्वर्ग में देव 19. त्रिपृष्ठ नारायण, 20. सप्तम नरक (उत्कृष्ट आयु-33 सागर) 21. सिंह 22. प्रथम नरक 23. सिंह **(अजितंजय व अमितंजय अथवा जय व अमितगुण मुनि के उपदेश लाभ)** 24. सौधर्म स्वर्ग में सिंहकेतु देव

25. कनकोज्ज्वल राजा **(मुनिदीक्षा)** 26. लान्तव स्वर्ग में देव 27. राजा हरिषेण 28. महाशुक्र स्वर्ग में प्रीतिंकर देव 29. प्रियमित्र चक्रवर्ती (विदेह) 30. सहस्रार स्वर्ग में देव सूर्यप्रभ 31.वासुपूज्य भगवान के तीर्थकाल में राजा नन्दन **(मुनि दीक्षा, तीर्थंकर प्रकृति का बंध एवं प्रायोपगमन समाधि)** 32. अच्युत स्वर्ग में देव 33. **कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ व रानी प्रियकारिणी (त्रिशला) के पुत्र तीर्थंकर महावीर।**

भगवान महावीर के भूत एवं वर्तमान भवों के चित्रण का फलितार्थ-

1. पापी से पापी जीव भी पाप निवृत्ति कर निष्पाप एवं शुद्ध हो सकता है।

2. भगवान महावीर के जीवन ने ही हिंसा यज्ञ, पाखंड का प्रस्तार किया। अंत में अपनी भूल स्वीकार कर प्रकृत अपेक्षित पाप को मिटाने का भी अथक प्रयास किया। परन्तु उसे पूर्ण रूप से नहीं मिटाया जा सका। अतः सदैव पाप कार्य एवं उसके प्रचार एवं अनुमोदन से बचना चाहिए।

3. पाप प्रवृत्ति को प्रचारित करना सरल है, परंतु पाप निवृत्ति अति कठिन है। जल का अधोगमन सहज है, उपरि प्रवाह दुष्कर होता है।

4. पापी जीव से घृणा करके उसे सुधारा नहीं जा सकता, करुणापूर्वक उपदेश सेही सुधार संभव है।

5. स्वोपार्जित पुण्य कर्म ही स्वयं जीव को दुख अथवा सुख प्रदान करता है।

6. कर्म ही भाग्य बनता है, उसका नाश कर परमात्म पद प्राप्त होता है।

7. मरीचि ने अपने पितामह भगवान ऋषभदेव के अहिंसा एवं संयम के मार्ग की अवहेलना कर दुःख प्राप्त किया तथा अहिंसा एवं त्याग के मूर्तरूप मुनियों की श्रद्धा करके ही दुःख निवृत्ति और सुख प्राप्ति की।

8. अहिंसा, अनेकांत एवं अपरिग्रह ही आत्मशांति एवं विश्वशांति का उपाय हैं।

9. सिंह पर्याय में महावीर ने पशुता का त्याग किया एवं समाधिपूर्वक शरीर का त्याग किया और कल्याण की ओर अग्रसर हुआ। हम तो मनुष्य हैं, अवश्य ही बुराई पर नियंत्रण कर सकते हैं। शाकाहार एवं पर्यावरण सुरक्षा अवश्य ही करणीय है।

10. पुरुरवा भील की अवस्था में उसकी पत्नी काली ने उसे मुनि हत्या जैसे जघन्य पापकृत्य से रोका था। इससे प्रकट है कि नारी जाति मनुष्य के लिए प्रेरणास्रोत बन सकती है।

11. मानकषाय के उद्वेग के कारण हिंसा का प्रवर्तक महावीर का जीव था और अन्ततोगत्वा यथार्थता को स्वीकार करने पर चतुर्थ काल के अंत में अंतिम तीर्थंकर के रूप में अहिंसा एवं अनेकांत का प्रवर्तक भी भगवान महावीर का जीव ही हुआ।

12.वर्धमान पूर्व मनुष्य पर्यायों में अधिकतर ब्राह्मण कुल में ही उत्पन्न हुए थे। उन्हीं अवस्थाओं में उन पर पाखंड, धर्म के नाम पर हिंसा आदि कुत्सित परिणामों का प्रत्यावर्तन होता रहा। इससे ज्ञात होता है कि शिक्षा का दुरुपयोग मनुष्य को कितना अधोपतित बना देता है। जो शिक्षा सदुपयोग के रूप में अमृत है, वही दुरुपयोग की परिणति में विष बन जाती है। कहा भी है–

साक्षरा विपरीताश्चेत् राक्षसा एव केवलम् । सरसो विपरीतोऽपि सरसत्वं मुञ्चति।।

अपेक्षणीय विशिष्ट बिन्दु-बिहार प्रान्त मे ऋजुकूला नदी के तट पर जृम्भिक ग्राम के निकट वैशाख शुक्ला दशमी को भगवान महावीर को कठोर तपश्चर्या एवं उत्कृष्ट ध्यान के बल से कैवल्य की प्राप्ति हुई। गणधर रूप निमित्त के अभाव के कारण 66 दिन तक दिव्यध्वनि नहीं खिरी। पुनः गौतम के दीक्षित होने एवं गणधरत्व के प्राप्त होने से दिव्यध्वनि का आविर्भाव हुआ। यह दिव्यध्वनि निरंतर 6-7 दिन तक खिरती

रही जबकि अन्य अवस्थाओं में 24 घंटों में चार बार खिरती है।

भगवान महावीर के उपदेश का सबसे महत्वपूर्ण पहलू सर्वोदय तीर्थ के रूप में पावन अवदान है। इसमें प्राणीमात्र के लिए सुख शांति का मार्ग निहित है,इसी में विश्वशांति,सह अस्तित्व का मूलमंत्र समाहित है। अनेकान्त एवं स्याद्वाद इसका आधार है। भारतीय साहित्य के अवलोकन करने से विदित है कि सर्वोदय का सर्वप्रथम उद्घोष भगवान महावीर के पावन संदेश में ही संप्राप्त है।

आ. समन्तभद्र की निम्न पंक्तियां दृष्टव्य हैं-

सर्वान्तवत्तदगुणमुख्यकल्पं, सर्वान्तशून्यं च मिथोऽनपेक्षं
सर्वापदामन्तकरं निरन्तं, सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।।(युक्तयनुशासन)

वस्तु अनंत धर्मात्मक है। अनेकांत वस्तु के सभी (परस्पर विरोधी भी) पार्श्वों पर दृष्टिपात करता है, सभी को प्रकाशित करता है, उनकी सत्ता को स्वीकार करता है।विरोधी स्वभावों को गौण और मुख्य रूप से स्याद्वाद शैली से प्रतिपादित करता है। जो दृष्टि सर्वधर्मात्मक न होकर किसी एक ही पहलू को मान्य करती है, अन्य विरोधी पहलू की अनपेक्ष है, वह मिथ्या है। हे भगवान महावीर! यह अनेकांत रूप सर्वोदय तीर्थ केवल आपका ही है, इसी से समस्त आपत्तियों का नाश होता है, यही शाश्वत है।

अहिंसा, विश्वशांति का आधार भी अनेकांत रूप सर्वोदय तीर्थ ही है।

भ्रांति परिवेश- अज्ञान, धर्मपक्षपात आदि कारणों से जैन धर्म एवं भगवान महावीर विषयक अनेकों भ्रांतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। यह चिंता का विषय है। **पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ आदि के द्वारा अन्य साहित्य एवं पाठ्यक्रम में प्रकाशित भ्रांतियों के निवारण का सार्थक प्रयास किया गया है, किया जा रहा है।** भगवान महावीर आदि के अस्तित्व को ही मिथ्या कल्पना बतलाने का जो कुचक्र चलाया गया था उसका निरसन किया जा चुका है। सुधार किया जा चुका है। जो जनता के समक्ष अगले पाठ्यक्रमों में प्रकट होगा। भगवान महावीर के अस्तित्व के सबल प्रमाण साहित्य, पुरावशेष, मूर्तियाँ, आचार्य परम्परा, जनश्रुति तथा सत्यान्वेषी इतिहासकारों के स्पष्ट मत के रूप में विद्यमान है, जो दर्पणवत् सत्य को उजागर करते हैं। आवश्यकता है कि यथायथं, श्वेतांबर एवं बौद्ध मिथ्या मान्यताओं जैसे गर्भ का स्थानान्तरण, विवाह एवं संतान का जन्म, मांसाहार आदि का निराकरण।

पाठ्यक्रमों में जो अल्पज्ञ इतिहासकारों द्वारा भगवान महावीर से ही जैनधर्म का प्रवर्तन कथित करने रूप भ्रांति का स्थायी रूप से निवारण आवश्यक है। वैदिक, सनातन संस्कृति मेंभी भगवान ऋषभदेव,नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ तीर्थंकरों का उल्लेख इस हेतु पर्याप्त साक्ष्य हैं। 4 फरवरी सन् 2000 को लाल किले के मैदान में पूज्य गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में आयोजित आद्य तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव निर्वाण लाडू समारोह के अवसर पर प्रधानमंत्री **श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्पष्ट स्वीकारोक्ति रूप घोषणा की कि भगवान महावीर से पूर्व 23 तीर्थंकरों की परम्परा प्रमाणसिद्ध है।**

जन्मभूमि कुण्डलपुर-वर्तमान में दिगम्बर जैन समाज में भगवान महावीर के जन्म एवं निर्वाणस्थल विषयक भ्रान्ति एवं विवाद दृष्टिगोचर हो रहा है। पर्याप्त साक्ष्यों से युक्त निर्वाणभूमि पावापुर के स्थान पर उत्तरप्रदेश में अन्य पावापुर की कल्पना का दुःसाहस अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के समान है। अपने ही इतिहास व आयतनों को अनपेक्षित परिवर्तित कर समाज जीवित एवं स्वस्थ नहीं रह सकता। इसी

प्रकार भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर के विषय में भी अनावश्यक विवाद खड़ा हो गया है। वैशाली, जो कि भगवान महावीर के नाना चेटक की राजधानी थी, को वर्द्धमान का जन्मस्थान घोषित करना एक अपराध ही माना जाना चाहिए।

वर्धमान को वैशाली का कुँवर साहब (कुमार) कहने में आपत्ति नहीं है क्योंकि ननिहाल से भी व्यक्ति का परिचय हो सकता है परंतु जन्मस्थान मानना तो बिल्कुल असत्य है।

किसी प्रकरण को प्रमाणित करने हेतु तीन प्रमाण अपेक्षित होते हैं-1. प्रत्यक्ष 2. आगम 3. अनुमान।

प्रत्यक्ष दृष्टि से-नालंदा जिलान्तर्गत कुण्डलपुर में जन्म स्मारक के रूप में महावीर जिनालय प्राचीन काल से अवस्थित है। शताब्दियों से ही श्रावकगण जन्मकल्याणक तीर्थ के रूप में इसकी वंदना करते आये हैं। अधिकांश हम सभी इसके प्रत्यक्षदर्शी हैं, वन्दना कर चुके हैं। यह प्रसिद्ध तीर्थ है। एक भी व्यक्ति दृष्टिगोचर नहीं होता, जो जन्मकल्याणक स्थल के रूप में वैशाली की वंदना कर कृतार्थ हुआ हो।

अनुमान विषयक-वैशाली में भगवान महावीर विषयक प्राप्त कतिपय पुरातात्विक सामग्री प्रबल प्रमाण नहीं हो सकती, कारण ऐसे उपादान तो बिहार व उत्तरप्रदेश व देश के अन्य भागों में भी यत्र तत्र प्राप्त हो जाते हैं। इसमें अन्यथानुपपत्ति रूप हेतुता नहीं पाई जाती। इस लक्षण में अतिव्याप्ति दोष है। अव्याप्ति, अतिव्याप्ति एवं असंभव इन तीन दोषों से रहित लक्षण होता है। वैशाली जन्मस्थल के लक्षणों में तीनों ही दोष दृष्टिगोचर होते हैं। अतः हेतुसिद्ध प्रकृत, प्रसिद्ध कुण्डलपुर ही भगवान महावीर की जन्मभूमि है।

आगम के परिप्रेक्ष्य में-न्याय की परिपाटी में यह सर्वमान्य है कि यदि प्रत्यक्ष और अनुमान से मतैक्य न हो तो आगम ही अंतिम प्रमाण है। अतः यहाँ कतिपय प्राचीन आगम के प्रमाण प्रस्तुत किये जाते हैं, कतिपय नवीन मनीषियों के विचार और मान्यताएं भी-

1. सिद्धत्थराय-प्रियकारिणीहिं णयरम्मि कुंडले वीरो। उत्तरफग्गुणिरिक्खे चेत्तसिद तेरसीए उप्पण्णो।।

(तिलोयपण्णत्ती, द्वितीय खंड, गाथा 556)

वीर जिनेन्द्र कुण्डलपुर में पिता राजा सिद्धार्थ और माता प्रियकारिणी से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न हुए। **(नाथवंश गाथा 557 में उल्लिखित है।)**

2. अथाऽस्मिन् भारतेवर्षे विदेहेषु महर्द्धिषु। आसीत्कुण्डलपुरं नाम्ना पुरं सुरपुरोत्तमम्।।

(पुराणसार संग्रह, द्वितीय भाग, चतुर्थ सर्ग-श्लोक1, भारतीय ज्ञानपीठ, अनु. पं. फूलचंद सिद्धान्तशास्त्री)

3. आसाढ़ जोण्ह पक्खछट्ठीए कुंडलपुर णगराहिव णाहवंस-सिद्धत्थणरिंदस्स तिसलादेवीए गब्भमागंतूण तत्थ अट्ठदिवसाहिय णवमासे अच्छिय चइत्त-सुक्कपक्ख तेरसीए रत्तीए उत्तरफग्गुणीणक्खत्ते गब्भादो णिक्खंतो वड्ढमाण जिणिंदो। (जयधवला 1-58)

आषाढ़ महीना के शुक्ल पक्ष की षष्ठी के दिन कुण्डलपुर नगर के स्वामी नाथवंशी सिद्धार्थ नरेश की त्रिशला देवी के गर्भ में आकर और वहां नव माह आठ दिन रहकर चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन रात्रि में उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के रहते हुए भगवान महावीर गर्भ से बाहर आए। साथ ही निम्न उद्धृत गाथा जयधवला के साथ धवला में भी पृष्ठ 535 पर अंकित है-

4. कुंडलपुरवरिसस्स रायसिद्धत्थक्खत्तियस्स णाहकुले। तिसलाए देवीए देवीसद सेवमाणा ए।।

(जयधवला में उद्धृत गाथा 23)

5. हरिवंशपुराण सर्ग 2। श्लोक 5 से 25 प्राचीनतम गाथाएं।

6. सिद्धार्थनृपतितनयो भारतवास्ये विदेहकुण्डपुरे। देव्यां प्रियकारिण्यां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।

निर्वाणभक्ति (होम्बुज श्रमण सिद्धान्त पाठावलि) दशभक्ति में वीरभक्ति-सोलापुर से प्रकाशित

7. आवश्यक निर्युक्ति मलयगिरि टीका गाथा-52

8. लगभग 600 ई. पूर्व बिहार प्रान्त के कुण्डलपुर नगर के राजा सिद्धार्थ के घर में उनका जन्म हुआ। उनकी माता त्रिशला वैशाली नरेश राजा चेटक की पुत्री थीं।

जैनधर्म-पं. कैलाशचंद्र शास्त्री पृ.-50

9. राज्ञः कुण्डपुरेशस्य वसुधाराय तत्पृथु। सप्तकोटीमणीः सार्द्धाः सिद्धार्थस्य दिनप्रतिः।।

महापुराण सर्ग 74 (जैनेन्द्र सिद्धांतकोष तीर्थंकर परिचय)

10. उत्तरपुराण पर्व 74-1252

11. अस्मिन भुवा माल इयद्विशाले समादधच्छ्रीतिलकत्वमाले।
समङ्कितं वक्ति मदीयभाषा समेहितं कुण्डपुरं समासात् ।।21।।

आ. ज्ञानसागर जी वीरोदय सर्ग-2

12. इह जंबुदीवि भरहंतावलि, रमणीय विसय सोहा विसालं।
कुंडउरि राउ सिद्धत्थ सहिउ, जो सिरिहस मग्गण वेस रहिउ।।

वीर जिणिंद चरिउ पृ.11-12-13 (ज्ञानपीठ)

उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध है कि बिहार प्रान्तस्थ नालंदा जिले के अंतर्गत अवस्थित कुण्डलपुर ही भगवान महावीर की जन्मभूमि है। उसका प्रचार और विकास साधुवृन्दों एवं विद्वानों के द्वारा भ्रांति निवारणार्थ एकात्मता हेतु अपेक्षित है।

कुण्डलपुर की पूज्यता स्वतः सिद्ध है

जैन वाङ्मय में भगवान महावीर का जन्मस्थान कुण्डलपुर के नाम से उल्लेखित हुआ है। आ. यतिवृषभ कृत तिलोयपण्णत्ती, आ. पूज्यपाद कृत वर्द्धमान चरित, आ. दामनंदि कृत पुराणसार संग्रह, विवुधश्रीधर कृत वड्ढमाणु चरिउ, महाकवि पद्मकृत महावीर रास आदि अनेक प्राचीन आगम ग्रंथों द्वारा पश्चात्वर्ती जैन साहित्य में प्रायः कुण्डलपुर का भगवान महावीर की जन्मभूमि के बारे में उल्लेख है।

वास्तव में तीर्थ की मिट्टी में पूजनीयता की तरंगे और गुणधर्म होते हैं इसलिए तीर्थ का विकास जोर जबरदस्ती से कभी नहीं होता। वहाँ तो क्षेत्र का अतिशय स्वयं अपनी पूजनीयता बना लेता है। कुण्डलपुर (नालंदा) के विकास और तीर्थोद्धार की बागडोर आर्यिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने ले ली है-इतिहास साक्षी है उन्होंने जिन-जिन कामों को हाथ लगाया है वे अभी तक पूरे हुए हैं और उन्होंने क्षेत्रों को गौरव प्रदान किया है। उन्होंने तीर्थ विकास हेतु जो आह्वान किया है उसका चारों ओर से स्वागत हो रहा है, यह तीर्थ निश्चितरूपेण एक दिन अपने विराट स्वरूप को प्राप्त करेगा ऐसा मुझे विश्वास है।

-डॉ. अभयप्रकाश जैन-ग्वालियर

दया के देवता का अवतरण

(महाश्रमण महावीर से उद्धृत)

भगवान की माता अवश्य विशालापुरी की पुत्री थीं, किन्तु दिगम्बर आगमानुसार भगवान का जन्म स्थान कुण्डलपुर नगर था। यह सुभाषित गंभीर तथा अर्थपूर्ण है-

उत्तमा आत्मना ख्याताः पितुः ख्याताश्च मध्यमाः।
अधमा मातुलात्ख्याताः श्वशुराच्चाधमाधमाः।।

उत्तम पुरुष अपने गुणों के कारण प्रसिद्ध होते हैं। मध्यम पुरुष वे हैं जो अपने पिता के कारण प्रसिद्धि पाते हैं, अधम श्रेणी के व्यक्ति अपने मामा के कारण विख्यात होते हैं। अपने श्वसुर के कारण जो प्रतिष्ठा पाते हैं वे महाअधम श्रेणी के व्यक्ति हैं।

तीर्थंकर श्रेष्ठों में भी श्रेष्ठ पुरुष होते हैं। उनका जन्मस्थान ही पूज्य नहीं होता, वह काल भी मंगल हो जाता है, जब उनके पंचकल्याणक हुए हों। ऐसी स्थिति में भगवान महावीर की कुण्डलपुरवासी होने से प्रसिद्धि नहीं थी, प्रत्युत् उनके कारण उस स्थान को गौरव मिला। कहा भी है- **यत्रापि कुत्रापि भवंति हंसा, हंसाः मही-मंडलमंडनानि। हानिस्तु तेषां हि सरोवराणां येषां मरालैः सह विप्रयोगः।।** अर्थात् मानसरोवर के कारण हंस को गौरव नहीं मिलता है, हंस के कारण मानसरोवर सन्मान का पात्र बनता है, हंस जहाँ भी रहता है वही स्थल महत्त्वपूर्ण बनता है।

वंश-परम्परा—भगवान महावीर के पिता महाराजा सिद्धार्थ राजा थे तथा भगवान राजपुत्र थे। भगवान का मातृपक्ष भी राजवंश था। इस प्रकार जाति तथा कुल की दृष्टि से वे महान थे। भगवान के पितामह का नाम था सर्वार्थ तथा सर्वार्थ महाराज की महारानी का नाम श्रीमती था।

-स्व. पं. सुमेरचंद जैन दिवाकर

"सदियों से यह जन्मभूमि हमारी श्रद्धा का केन्द्र है"

हम अपने श्रद्धा केन्द्र तीर्थों को जहां हमारी श्रद्धा सदियों से नतमस्तक होती आयी है उसे सहज स्वीकारें। उन प्रयासों का विरोध करें और नकारें जो तीर्थों के प्राचीन अस्तित्व को ही शंकाओं के घेरे में लाने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे खोजकर्ता नहीं जानते कि वह अपने उत्साह के कारण श्रद्धा में शंका का विष घोलकर अपनी ही मान्यताओं का कितना अहित कर रहे हैं। तीर्थों के अस्तित्व से छेड़छाड़ के इन प्रयासों का हमें संगठित होकर विरोध करना चाहिए तभी हमारे तीर्थ सुरक्षित और अक्षुण्ण रह सकेंगे। पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के आगम प्रमाणों के बाद हमें अन्य कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। 26 सदियों के बाद कम से कम महावीर के उपासकों को ही महावीर के जन्म तथा निर्वाण आदि कल्याणक स्थलों की समग्र जानकारी आगम ग्रंथों के आधार पर करना चाहिए। यह मात्र कुछ लोगों के मान सम्मान का नहीं महावीर की पूज्यता, अर्हंतता, सर्वज्ञता का प्रश्न है। दिगम्बर जैन समाज आगम आलोक में अपने भ्रम दूर करेगा ऐसा हमें विश्वास है।

-उमेश जैन, फिरोजाबाद

बिहार प्रान्त की जिस कुण्डलपुर नगरी को आज से 2600 वर्ष पूर्व इन्द्रों एवं देवताओं ने सजाया था, जहाँ सात खन का स्वर्णमयी नंद्यावर्त महल था, जहाँ नाथवंशी राजा सिद्धार्थ एवं रानी त्रिशला से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की पवित्र तिथि में चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर ने अवतार लेकर विश्व में अहिंसा का शंखनाद किया, जहाँ बालक वीरप्रभु को पालने में झूलते देख दो चारणऋद्धिधारी मुनियों की शंका दूर हुई, जहाँ बाल्यावस्था में वर्धमान को बगीचे में खेलते देख संगम देव स्वर्ग से परीक्षार्थ आया और पराजित होकर 'महावीर' नाम से स्तुति की, जहाँ से महावीर ने भरे यौवन में जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण करने का संकल्प लिया और जहाँ एक भवावतारी लौकान्तिक देवों ने आकर उनकी स्तुति की ऐसी पवित्र भूमि के कण-कण भगवान महावीर के त्याग-वैराग्य का संदेश दे रहे हैं।

उस पवित्र **कुण्डलपुर नगरी** एवं तीर्थ विकास की सम्प्रेरिका

परमपूज्य गणिनीप्रमुख

श्री ज्ञानमती माताजी

के पावन चरणों में

शत-शत वन्दन

-:विनयावनतः-

कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन	जिनेन्द्र प्रसाद जैन, ठेकेदार	कैलाशचंद जैन
(अध्यक्ष)	(कार्याध्यक्ष)	(महामंत्री)

श्री दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404

मुक्तक

उन्नयन श्रमण संस्कृति का करने वाली माता नमूँ तुम्हें।
हे तीर्थोद्धारक! युगप्रवर्तिका! त्रिकाल वन्दन करूँ तुम्हें।।
यह श्रमण संस्कृति युग-युग तक उपकार तेरा नहिं भूलेगी।
संस्कृती हेतु सर्वस्व निछावर करने की शिक्षा देगी।।

9

तीर्थंकर जन्मभूमियाँ संस्कृति की उद्गमस्थल हैं!

-ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

देशभक्ति के गीत की दो पंक्तियों से विषय को प्रारंभ करता हूँ–

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

अर्थात् भारत की धरती पर जन्मे समस्त मानवजाति के हृदयों को झंकृत करने वाली कविताएं समय-समय पर इसीलिए रची गई हैं कि यदि किसी कारणवश स्वदेश के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह न करके मानव दिग्भ्रमित हो रहा हो तो उसमें देशप्रेम एवं उसकी रक्षा का भाव जागृत हो सके। ठीक इसी प्रकार से प्राणीमात्र का हित करने वाले शाश्वत एवं प्राकृतिक जैनधर्म के प्रति भी समस्त जैनधर्मावलम्बियों को हमेशा सचेत रहने की प्रेरणा धर्माचार्यों ने प्रदान करते हुए सम्यग्दर्शन के प्रभावना अंग में कहा है–

अज्ञानतिमिरव्याप्तिमपाकृत्य यथायथम् ।
जिनशासन माहात्म्यप्रकाशः स्यात्प्रभावना।।

अर्थात् जैनशासन की महिमा का प्रकाश फैलाना–प्रचार-प्रसार करना प्रभावना अंग है। उस जैनशासन में वीतरागी देव-शास्त्र-गुरू की भक्ति के साथ-साथ तीर्थंकर भगवान जैसे महान्देवों के जन्म एवं पंचकल्याणकों से पावन तीर्थभूमियों का विकास एवं उनका प्रचार करना भी प्रभावना अंग का ही परिचायक है।

जन्मभूमि तीर्थ संस्कृति के उद्गम स्थल हैं–

यूँ तो भारतभूमि पर सैकड़ों तीर्थ हैं जिनके दर्शन करके लोग मानसिक शांति प्राप्त करते हैं किन्तु जिस धरती पर धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने वाले तीर्थंकर भगवान जन्म लेते हैं उनकी पूज्यता तो लेखनीगम्य हो ही सकती है। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी कई बार प्रवचनों में कहा करती हैं–

''तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियाँ वास्तव में भारतीय संस्कृति का उद्गमस्थल हैं, क्योंकि वहाँ 15 महीने तक देवता असंख्य रत्नों की वृष्टि करते हैं, इन्द्र भी उस नगरी की बड़ी भक्तिपूर्वक प्रदक्षिणा करता है, महामुनिराज भी वहाँ जिनेन्द्र बालक को देखने के लिए आते हैं और अपने मन की प्रत्येक शंका का समाधान सहज पा जाया करते हैं। जहाँ से गृहस्थ धर्म एवं राजनीति के संचालन के साथ-साथ मोक्षमार्ग भी साकार होता है उस भूमि से अधिक पवित्र भला और दूसरा स्थान कौन हो सकता है? अर्थात् प्राथमिक रूप से हम सबके लिए तीर्थंकर जन्मभूमियाँ पूज्य हैं। जन्म के पश्चात् ही तपस्या और ज्ञान के क्रमानुसार सिद्धपद की प्राप्ति होती है अतः उनके निर्वाणस्थल सिद्धक्षेत्र के रूप में पावन-पूज्य हो जाते हैं।''

इन सिद्धक्षेत्रों पर जाकर वंदना करने एवं निर्वाणलाडू चढ़ाने की परम्परा आज भी चली आ रही है, उनमें सम्मेदशिखर एवं पावापुरी में विशेषरूप से यात्रियों का तारतम्य जुड़ा हुआ है।

क्या कभी जन्मभूमि पर एक दीप भी जलाने का मन बनाया है?

प्रिय बन्धुओं! वर्तमान में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियाँ हैं हो सकता है कि इनमें से अनेक के दर्शन भी आपने किये हों किन्तु क्या उनके बारे में कभी आपने ऐसा कुछ सोचा है कि ये तीर्थ सांस्कृतिक धरोहर के रूप में विश्व के समक्ष आएं। वास्तव में वह क्षण बड़ा रोमाँचक और दर्दनाक था जब पूज्य

ज्ञानमती माताजी ने अपनी अन्तरात्मा की आवाज भक्तों तक पहुँचाने के लक्ष्य से एक सभा में कहा था-

''आज का युग चमत्कार का युग बन गया है, लोग भौतिक मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए अतिशयक्षेत्रों की ओर भाग रहे हैं। उन अतिशयक्षेत्रों में चांदनपुर के महावीर, तिजारा के चन्द्रप्रभ, पदमपुरा के पदमप्रभु भगवान के समीप प्रतिदिन हजारों-हजार दीपक भक्तों द्वारा जलाये जाते हैं, सोने-चाँदी के छत्र चढ़ाये जाते हैं किन्तु क्या कभी भक्तों ने उनके सामने खड़े होकर चिन्तन किया है कि श्री महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर में, चन्द्रप्रभ की जन्मभूमि चन्द्रपुरी में या पदमप्रभु की जन्मभूमि कौशाम्बी में कभी एक दीपक भी जलता है या नहीं? वहाँ प्रकाश है या अंधकार? वहाँ सुरक्षा व्यवस्था भी है या नहीं? वहाँ प्रभु की वेदी भी ठीक से बनी है या नहीं? एवं उन जन्मभूमियों के प्रति हमारा कुछ दायित्व भी है या नहीं? यदि ऐसे प्रश्नों के प्रति कुछ सोचने को मन मजबूर होता है तब तो अवश्य अभी मानवता के अंकुर शेष हैं और उनको प्रस्फुटित करते ही फूल और फल आते देर नहीं लगेगी। अतः मेरी आपसे यही प्रेरणा है कि पहले भगवन्तों की उपेक्षित जन्मभूमियों को सच्चे तीर्थ के रूप में साकार करो। अन्य स्थानों पर मंदिर या नये तीर्थ बनाने की अपेक्षा तीर्थ को ही तीर्थ बनाने में सहस्रगुणा पुण्य अधिक है।''

पूज्य श्री की उपर्युक्त प्रेरणा में यही अन्तर्वेदना निहित है कि समाज अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक हो तथा ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' के अनुसार अपनी जन्मभूमि से भी अधिक महत्त्व तीर्थंकर जन्मभूमियों को प्रदान करें तो वह दिन दूर नहीं रहेगा जब जैनधर्म पुनः अपनी गौरव गरिमा को प्राप्त होकर दिग्दिगन्त व्यापी बनेगा।

इन जन्मभूमि तीर्थों के बारे में जानकर किसी भी नगर की श्रद्धालु दिगम्बर जैन समाज अथवा कोई दानी परिवार एक-एक तीर्थ के उद्धार एवं विकास का संकल्प यदि ले ले तो अतिशयोक्ति की बात नहीं है। जिस प्रकार से अपने पैतृक मकान, दुकान एवं व्यापार का योग्य पुत्र सदैव संरक्षण, संवर्धन करना ही कर्तव्य समझता है उसी प्रकार तीर्थंकर भगवन्तों के अभयारण्य शासन में रहकर सभी भक्तों का भी कर्तव्य है कि उनके जीर्ण-शीर्ण तीर्थस्थलों का जीर्णोद्धार कर उनका यथायोग्य विकास करें तथा विकास करने वालों के प्रति सदैव वात्सल्यभाव रखकर धर्मवृद्धि की अनुमोदना करें ताकि पुण्य का बंध हो।

जन्मभूमि तीर्थों के विकास की श्रृंखला में वर्तमान सहस्राब्दि की ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में भगवान महावीर की जन्मभूमि का विकास कार्य तेजी से चल रहा है।जहाँ 8 से 10 अक्टूबर 2003 तक ''कुण्डलपुर महोत्सव'' आयोजित हो रहा है। जन्मभूमि समिति एवं बिहार सरकार पर्यटन विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस महोत्सव में देशभर से भक्तगण पधारकर विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के साथ 10 अक्टूबर 'शरद पूर्णिमा' को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी केत्याग एवं जन्म दिवस पर भी अपनी विनयांजलि अर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं।

eqDrd

R;kxriL;k ch ewjr] rqe Kku /;ku ch izfrek gksA
dfy;qx ch lqcbek j riLch] ukjh ch xq.k xfjek gksAA
czkãh ek; ds infpUg sa ij] pyd j yoVk jgh a pUnu A
xf.kuh ekrk Kkuerh th] Lohdkjks es jk dUnuAA

&vkf;Zdk pUnuk erh

वैशाली की राजकुमारी एवं कुण्डलपुर की राजवधू

महारानी त्रिशला का परिचय

-ब्र. कु.बीना जैन (संघस्थ)

आचार्य मानतुंग ने भक्तामर स्तोत्र में तीर्थंकर भगवान की माता की स्तुति करते हुए कहा है-

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान् , नान्यासुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वादिशो दधति भानि सहस्र रश्मिम्, प्राच्येव दिग्जनयतिस्फुर दंशुजालम् ।।

अर्थात् सैकड़ों स्त्रियां सैकड़ों पुत्रों को पैदा करती हैं परन्तु आप जैसे पुत्र को दूसरी मां पैदा नहीं कर सकती है क्योंकि नक्षत्रों को सब दिशाएं धारण करती हैं परन्तु किरणों के समूह वाले सूर्य को पूर्व दिशा ही प्रकट करती है।

जैनधर्म के चौबीसवें सूर्य, अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर को कुण्डलपुर की पवित्र धरती पर जन्म देने वाली माता त्रिशला भी वह जगज्जननी एवं त्रिलोकपूजनीय माता हैं जो कि वैशाली के राजा चेटक की ज्येष्ठ पुत्री थीं। दिगम्बर जैनशास्त्रानुसार ''वैशाली नगरी'' सिन्धुदेश में थी जहां राजा केक के पुत्र ''चेटक'' राज्य करते थे। ''उत्तरपुराण'' नामक आर्षग्रंथ में श्री गुणभद्राचार्य ने सिंधुदेश के अंतर्गत वैशाली नगरी, महाराजा चेटक एवं उनके पुत्र-पुत्रियों का वर्णन करते हुए कहा है-

सिन्ध्वाख्यविषये.....ततः संयममग्रहीत् ।।3-14।।

सिन्धु नामक देश की वैशाली नगरी में चेटक नाम के अतिशयप्रसिद्ध, विनीत और जिनेन्द्रदेव के अतिशय भक्त राजा थे उनकी रानी का नाम सुभद्रा था। उन दोनों के दश पुत्र हुए जो कि धनदत्त, धनप्रभ, उपेन्द्र, सुदत्त, सिंहभद्र, सुकुम्भोज, अकम्पन, पतंगक, प्रभंजन और प्रभास नाम से प्रसिद्ध थे तथा उत्तम क्षमा आदि दश धर्मों के समान जान पड़ते थे। इन पुत्रों के सिवाय सात ऋद्धियों के समान सात पुत्रियां भी थीं जिनमें सबसे बड़ी प्रियकारिणी थी, उससे छोटी मृगावती, उससे छोटी सुप्रभा, उससे छोटी प्रभावती, उससे छोटी चेलिनी, उससे छोटी ज्येष्ठा और सबसे छोटी चंदना थी। विदेहदेश के कुण्डलपुर में नाथवंश के शिरोमणि एवं तीनों सिद्धियों से सम्पन्न राजा सिद्धार्थ राज्य करते थे। पुण्य के प्रभाव से प्रियकारिणी (त्रिशला) उन्हीं की स्त्री हुई थी। वत्सदेश की कौशाम्बी नगरी में चन्द्रवंशी राजाशतानीक रहते थे, मृगावती नाम की दूसरी पुत्री उनकी स्त्री हुई थी। दर्शाणदेश के हेमकच्छ नामक नगर केस्वामी राजा दशरथ थे जोकि सूर्यवंशरूपी आकाश के चन्द्रमा के समान जान पड़ते थे। सूर्य की निर्मल प्रभाके समान सुप्रभा नाम की तीसरी पुत्री उनकी रानी हुई थी। कच्छदेश की रोरुका नाम की नगरी में उदयन नाम का एक बड़ा राजा था प्रभावती नाम की चौथी पुत्री उसी की हृदयवल्लभा हुई थी। अच्छी तरहसे शीलव्रत धारण करने से इस का दूसरा नाम शीलवती भी प्रसिद्ध हो गया था। गान्धारदेश के महीपुर नगर में राजा सत्यक रहताथा उसने राजा चेटक से उसकी ज्येष्ठा नाम की पुत्री की याचना की परन्तु राजा ने नहीं दी इससे उसदुर्बुद्धि मूर्ख ने कुपित होकर रणांगण में युद्ध किया परन्तु युद्ध में वह हार गया जिससे मानभंग होने से लज्जित होने के कारण उसने शीघ्र ही दमवर नामक मुनिराज के समीप जाकर दीक्षा धारण कर ली।

इन महाराज चेटक की पाँचवी पुत्री चेलना मगध देश के राजगृही नगरी के राजा श्रेणिक की रानी हुई हैं तथा ज्येष्ठा और चन्दना कुमारी रही हैं। ये राजा चेटक सोमवंशी थे जैसा कि उत्तरपुराण में कहा है-

सुरलोकादभूः सोम-वंशेत्वं चेटको नृपः।

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि राजा सिद्धार्थ नाथवंशी थे और वैशाली के राजा चेटक सोमवंशी थे अतः इन दोनों राजाओं के देश अलग-अलग हैं, राजधानी अलग-अलग हैं और वंश, गोत्र आदि भी अलग-अलग हैं।

दिगम्बर जैनागम में जहाँ भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर बताई गई वहीं उनकी जननी प्रियकारिणी त्रिशला की जन्मभूमि वैशाली बताई गई है। वीरजिणिन्दचरिउ ग्रंथ की पांचवी संधि में पृष्ठ 60में श्री पुष्पदंत महाकवि कहते हैं कि राजा श्रेणिक ने भगवान महावीर के समवसरण में गौतम गणधर से जब आर्यिका चंदना के चरित्र को पूछा तब गौतम स्वामी ने कहा-

सिन्धु-विसइ वइसाली पुरवरि। घर-सिरि-ओहामिय-सुर-वर-घरि।
चेडउ णाम णरेसरु णिवसइ। देवि अखुद्द सुहद्द महासइ।।

अर्थात् सिन्धुविषय वैशाली नामक नगर है जहाँ के घर अपनी शोभा से देवों के विमानों की शोभा को भी जीतते हैं। उस नगर में चेटक नामक नरेश्वर निवास करते हैं। उनकी महारानी सुभद्रा से उनके धनदत्त, धनभद्र, उपेन्द्र, शिवदत्त, हरिदत्त, कम्बोज, कम्पन, प्रयंग, प्रभंजन और प्रभास नामक दस पुत्र उत्पन्न हुए।

उनकी अत्यन्त रूपवती सात पुत्रियाँ भी हुई, जिनके नाम हैं-प्रियकारिणी,मृगावती, सुप्रभादेवी, प्रभादेवी, चेलिनी, ज्येष्ठा, चन्दना। इनमें से प्रियकारिणी (त्रिशला) का विवाह श्रेष्ठ नाथवंशी कुण्डलपुर नरेश सिद्धार्थ के साथ कर दिया गया।

इसी प्रकार से हरिषेणाचार्यकृत वृहत्कथाकोष में भी राजा चेटक की सातों पुत्रियों का वर्णन करते हुए सबसे बड़ी कन्या प्रियकारिणी (त्रिशला) को बताया है। साथ ही यह भी कहा है कि ये सातों ही पुत्रियां स्वर्गलोक से चलकर आई थीं, उनका चरित्र विद्वानों के चित्त को हरण करेगा।

हरिवंशपुराण में प्रियकारिणी महारानी त्रिशला के विषय में आचार्य जिनसेन के शब्द मार्मिक तथा यथार्थ में गौरवपूर्ण है–

कस्तां योजयितुं शक्तास्त्रिशलां गुणवर्णनैः। या स्वपुण्यैर्महावीरप्रसवाय नियोजिता।।8।।

ऐसी सामर्थ्य किसमें हैं, जो महारानी प्रियकारिणी-त्रिशला के गुण वर्णन की योजना कर सके, क्योंकि अपने पुण्य के कारण ही वह भगवान महावीर की जननी बनी थीं।

उन होनहार जननी की स्वर्ग से आई देवांगनाएं किस प्रकार सेवा करती हैं और उनके गुणों का कथन करते हुए स्तुति करती हैं इसका बहुत ही सुन्दर चित्रण आचार्यश्री ने किया है। वह कहते हैं कि देवियों द्वारा की गयी स्तुति कोई अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं थी, अपितु यह वास्तविकता से पूर्ण कथन था। प्रभात में जैसे प्राची दिशा प्रत्येक के प्रेम को प्राप्त करती है और सभी इसी ओर अपनी दृष्टि पुनः-पुनः डाला करते हैं, इसके समान ही स्थिति माता के विषय में भी थी जिन्होंने चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर को जन्म देकर सम्पूर्ण लोक को सनाथ कर दिया था।

अनेक दिगम्बर जैन आर्षग्रंथों में पूर्वाचार्यों ने माता त्रिशला की स्तुति करते हुए उनके गुणों का वर्णन किया है।

ऐसी त्रिलोकपूज्यनीय, जगत्जननी, वंदनीय माता त्रिशला जिनके जन्म से वैशाली नगरी पावन हुई हो उनका स्मरण सबके लिए मंगलकारी होवे।

नंद्यावर्त महल की पावनता

–ब्र. कु.इन्दु जैन (संघस्थ)

जैनधर्म के चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर ने आज से 2600 वर्ष पूर्व बिहार प्रान्तस्थ कुण्डलपुर नगरी में महाराजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला देवी की पवित्र कुक्षि से जिस सात खण्ड वाले नंद्यावर्त महल में जन्म लिया था उसके बारे में उत्तरपुराण ग्रंथ में आया है कि-

नंद्यावर्तगृहे रत्नदीपिकाभिः प्रकाशिते। रत्नपर्यंकके हंसतिलकादिविभूषते।।254।। पृ. 460।।

अर्थात् सात खण्ड वाले राजमहल के भीतर रत्नमय दीपकों से प्रकाशित नंद्यावर्त महल नामक राजभवन में हंस-तूलिका आदि से सुशोभित रत्ननिर्मित पलंग पर रानी त्रिशला सो रही थीं अर्थात् तीर्थंकर भगवान महावीर की माता का तो शयन करने वाला पलंग ही स्वर्ण और रत्ननिर्मित था। रातदिन स्वर्ग की देवियाँ उनकी सेवा करती थीं,साक्षात् इन्द्र और देवगण भगवान के समक्ष किंकर बनकर खड़े रहते थे, जिस नगरी में लगातार 15 महिने तक प्रतिदिन साढ़े सात करोड़ रत्नों की वृष्टि स्वयं कुबेर करता था, वह कुण्डलपुर नगरी अत्यन्त समृद्ध थी जहाँ वीर प्रभु का जन्म हुआ था।

वास्तव में तीर्थंकर महापुरुष श्रेष्ठों में भी श्रेष्ठ महापुरुष होते हैं उनका जन्मस्थान ही पूज्य नहीं होता, वह तिथि, वह समय, वह महल, वह काल भी मंगल एवं पावन हो जाता है जब और जहाँ उनके पंचकल्याणक हुए हों क्योंकि मानसरोवर के कारण हंस को गौरव नहीं मिलता है, हंस के कारण मानसरोवर सन्मान का पात्र बनता है, हंस जहाँ रहता है वही स्थल महत्वपूर्ण होता है।

उसी पवित्र कुण्डलपुर में भगवान महावीर के पिता महाराजा सिद्धार्थ राज्य करते थे और भगवान महावीर राजपुत्र थे। भगवान का मातृपक्ष भी राजवंश था। इस प्रकार जाति तथा कुल की दृष्टि से वे महान थे। भगवान के पितामह (बाबा) का नाम था सर्वार्थ तथा सर्वार्थ महाराज की महारानी का नाम श्रीमती था। हरिवंशपुराण में लिखा है–

सर्वार्थ-श्रीमती-जन्मा तस्मिन्-सर्वार्थदर्शनः। सिद्धार्थोऽभवदर्काभो भूपः सिद्धार्थ-पौरुषः।।13-2।।

अर्थात् कुण्डलपुर के स्वामी राजा सर्वार्थ एवं रानी श्रीमती से उत्पन्न समस्त पदार्थों का दर्शन करने वाला, सूर्य के समान तेजस्वी तथा समस्त पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाला राजा सिद्धार्थ था। सिद्धार्थ राजा आदर्श शासक थे। जिनसेन आचार्य कहते हैं–

यत्र पाति धरित्रीय-मभूदेकत्र-दोषिणी। धर्मार्थिन्योपि संयुक्त-परलोकभयाः प्रजा।।14-2।।

अर्थात् जिस समय सिद्धार्थ नरेश ने पृथ्वी की रक्षा की थी, उस समय प्रजा में कोई दोष नहीं था, हाँ! एक दोष अवश्य था कि प्रजा परलोक से डरती थी अर्थात् वह आगामी जीवन सुधार के विषय में पूर्ण सावधान थी। महाकवि के ये शब्द यथार्थ और महत्वपूर्ण हैं–

कस्तस्य तान् गुणानुद्याज्ञरस्तुलयितुं क्षमः। वर्धमान-गुरुत्वं यः प्रापितः स नराधिपः।।15-2।।

अर्थ–ऐसी सामर्थ्य किस पुरुष में है जो राजा सिद्धार्थ के उन्नत गुणों की तुलना कर सकें, क्योंकि अपने गुणों की महिमा से राजा सिद्धार्थ त्रिलोकीनाथ वर्धमान महावीर के पिता बन गए थे।

महानुभावों! बिहारप्रांत में जिस कुण्डलपुर नगरी को आज से 2600 वर्ष पूर्व इन्द्रएवं देवताओं ने सजाया था, जहाँ सात मंजिल का सुन्दर स्वर्णमयी नंद्यावर्त महल देव कारीगरों ने बनायाथा। जहाँ नाथवंशी राजा सर्वार्थ और रानीश्रीमती के पुत्र राजा सिद्धार्थ अपनी रानी त्रिशला के साथ रहाकरते थे। जिस नंद्यावर्त महल में रानी त्रिशला मणियों के पलंग पर शयन करती थीं। जहाँ उन्होंने सोलह सपनेदेखे और अपने पति राजा सिद्धार्थ से उनके फल में तीर्थंकरपुत्र की माता बनने की जानकारी प्राप्त कीथी। जहाँ 2600वर्षों पूर्व लगातार

15 महीने तक धनकुबेर ने प्रतिदिन साढ़े सात करोड़ रत्न बरसाए थे। जहां चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को महावीर का जन्म होते ही राजा सिद्धार्थ ने किमिच्छक दान बाँटा था और इन्द्रों ने बड़े वैभव के साथ पहले सुमेरु पर्वत पर पश्चात् कुण्डलपुर में आकर जन्मोत्सव मनाया था। जहां बालक वीरप्रभू को पालने में झूलते देखने मात्र से दो महामुनियों की सूक्ष्म शंका दूर हुई जिससे उन्होंने बालक वीर प्रभू को "सन्मति" नाम से अलंकृत किया था। जहां बाल्यावस्था में वर्धमान को बगीचे में खेलते देखकर संगम देव ने उनके बल की परीक्षा हेतु सर्प का रूप बनाया किन्तु पराजित हो प्रभु की स्तुति कर "महावीर" यह सार्थक नाम रखा था। जहां महावीर ने देवताओं द्वारा लाए दिव्य भोजनादि सामग्री को ग्रहण कर तेजस्वी सूर्य की भांति युवावस्था को प्राप्त किया था। जहाँ माता त्रिशला के सांसारिक अरमानों को ठुकराकर महावीर ने भरे यौवन में तलवार की धार के समान जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण करने का संकल्प लिया था। जहां एक भवावतारी लौकान्तिक देवों ने भी पधारकर महावीर के वैराग्यभाव की भूरि-भूरि प्रशंसा एवं अनुमोदना की थी तथा जिसकुण्डलपुर नगरी की पवित्र भूमि के कण-कण भगवान महावीर के त्याग-वैराग्य का संदेश दे रहे हैं वह नंद्यावर्त महल और वह नगरी आज काल के थपेड़ों से 2600 वर्षों के बाद वैभवहीन भले ही हो गयी किन्तु यहाँ की ऐतिहासिकता एवं पवित्रता की प्रसिद्धि के कारण पूरे देश की दिगम्बर जैन जनता अपने प्रभु की जन्मभूमि की वंदनाहेतु आज भी श्रद्धापूर्वक आती है और वर्तमान में जैन समाज के सौभाग्य से उस तीर्थ का विकास कार्य पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से चल रहा है। शीघ्र ही शासनपति प्रभु महावीर की यह जन्मभूमि अपने 2600 वर्ष पूर्व के इतिहास का साकार रूप लेकर उन महामना के सिद्धान्तों की अनुगूंज से अहिंसा एवं सदाचार का संदेश विश्व को प्रदान करेगी।

चारों अनुयोगों से समन्वित
सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका के सदस्य
बनकर जिनागम का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त करें।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से सन् 1974 से "दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान" द्वारा लगातार 30 वर्षों से निकाली जाने वाली आधुनिक साज सज्जा से समन्वित मासिक पत्रिका 'सम्यग्ज्ञान' के स्थायी सदस्य बनकर घर बैठे चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त कर स्वाध्याय के साथ-साथ परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं प्रज्ञाश्रमणी आर्यिकाश्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित लेखों के माध्यम से जिनागम में वर्णित नाना विषयों का आगमोक्त ज्ञान प्राप्त करें तथा जैनधर्म की अनेकान्तमयी वाणी के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य सहयोग देकर सातिशय पुण्य का बंध करें।

–:सदस्यता शुल्कः –

वार्षिक सदस्यता शुल्क	100/-रु.
त्रैवार्षिक सदस्यता शुल्क	250/-रु.
पंचवर्षीय सदस्यता शुल्क	400/-रु.
संरक्षक शुल्क (10 वर्ष के लिए)	1000/-रु.
परम संरक्षक शुल्क (20 वर्ष के लिए)	2500/-रु.

संपर्क सूत्र–"सम्यग्ज्ञान" दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान
पो.-जम्बूद्वीप हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404, फोन नं.-(01233) 280184

कुण्डलपुर में 21वीं सदी का प्रथम ऐतिहासिक पंचकल्याणक एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पन्न हुआ फरवरी 2003 में

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में एक बार पुनः जनमानस को भगवान महावीर के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान एवं निर्वाणकल्याणकों का दिग्दर्शन इस प्रकार हुआ मानो 2600 वर्ष पूर्व का काल पुनः धरती पर लौट आया हो। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी (ससंघ) के मंगल सानिध्य में 7 से 12 फरवरी 2003 तक आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक कार्यक्रम की निर्विघ्न सफलता ने भगवान महावीर 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष को सदैव के लिए ऐतिहासिक बना दिया। कार्यक्रम के प्रथम दिन से अंतिम दिन तक देशभर के श्रद्धालुओं की अपार भीड़ भगवान महावीर की जन्मभूमि के प्रति सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज की आंतरिक श्रद्धा को साकार कर रही थी।

7 फरवरी को पूज्य माताजी के अनन्य भक्त श्री बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद एवं परिवार द्वारा किये गये झण्डरोहण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीश्रवण कुमार जी, विधायक (कुण्डलपुर-नालंदा क्षेत्र) का सम्मान समिति द्वारा किया गया। विधायक जी ने इस शुभ अवसर पर समिति को एवं समस्त जैन समाज को कुण्डलपुर विकास के लिए बधाई दी तथा सरकार के माध्यम से आवश्यक सहयोग हेतु भी आश्वासन दिया, साथ ही पूज्य माताजी का मंगल आशीर्वाद उन्होंने प्राप्त किया। इस अवसर पर पूज्य माताजी ने अपने ऐतिहासिक प्रवचन में कहा कि साधु श्रेष्ठीवर्ग, विद्वत्वर्ग अथवा समाज इत्यादि किसी से भी नहीं बंधा है वरन् वह तो मात्र आगम से बंधा है। जिनवाणी माताके अनुसार अपनी मान्यताओं का निर्धारण उसका प्रथम कर्तव्य है और जीवन में सदैव इसी नियम का अनुसरण करके मैंने अपने समस्त लक्ष्य पूर्ण किये हैं। मध्यान्ह काल में गर्भकल्याणक की आतंरिक क्रियाओं को प्रतिष्ठाचार्य श्री नरेश कुमार जैन (जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर) द्वारा सौधर्म इन्द्र-श्री दीपक जैन (वाराणसी), शची इन्द्राणी-श्रीमती सुभाषिनी जैन, राजा सिद्धार्थ-श्री महावीर प्रसाद जैन, संघपति (दिल्ली), माता त्रिशला-श्रीमती कुसुमलता जैन से सम्पन्न कराई गयीं। साथ ही प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी एवं गणिनी माताजी का 'माता त्रिशला की महिमा एवं भारतीय नारी का कर्तव्य' विषय पर मार्मिक उद्बोधन सम्पन्न हुआ। रात्रि में मंगल आरती एवं शास्त्र प्रवचन के पश्चात् सौधर्म इन्द्र की सुधर्मा सभा, नंद्यावर्त महल में माता त्रिशला द्वारा सोलह स्वप्न देखना एवं गर्भकल्याणक महोत्सव इत्यादि का सुन्दर मंचन प्रतिष्ठाचार्य युवारत्न पं. अकलंक जैन (लखनऊ) के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। धनकुबेर बने-श्री कमल कुमार जैन (आरा) एवं उनकी इन्द्राणी-श्रीमती अनुपमा जैन द्वारा की गई सच्चे रत्नों की वर्षा ने भगवान के गर्भ में आने के दृश्य को विशेष रूप से सजीव कर दिया। इससे पूर्व सायंकाल 7.50 बजे नंद्यावर्त महल परिसर के निर्माणाधीन मुख्य भगवान महावीर मंदिर में सवा 11 फुट उत्तुंग भगवान महावीर की श्वेतपाषाण की खड्गासन अत्यन्त मनोहारी प्रतिमा लगभग 25 फुट की ऊँचाई पर बनी वेदी पर पूज्य माताजी सहित उपस्थित श्रद्धालुओं के मंत्र जाप्य के मध्य निर्विघ्नतापूर्वक विराजमान कर दी गईं।

8 फरवरी को भगवान महावीर का जन्मकल्याणक सौधर्म इन्द्र द्वारा सुमेरु पर्वत की पांडुक शिला पर 108 कलशों से जन्माभिषेकपूर्वक सम्पन्न हुआ। रात्रि में भगवान का पालना झुलना एवं बालक्रीड़ा इत्यादि कार्यक्रम अत्यन्त सुन्दर रूप में सम्पन्न हुआ। वर्द्धमान बने-संयम जैन (हस्तिनापुर) का अभिनय विशेष रूप से सराहनीय रहा।

9 फरवरी को तपकल्याणक के पावन दिवस पर प्रातःकालीन सभा में "कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन" का प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन (फिरोजाबाद) के कुशल संचालन में ऐतिहासिक आयोजन सम्पन्न हुआ। पं.शिवचरण लाल जैन (मैनपुरी), डा. अनुपम जैन (इंदौर), डा.रामदेव सिंह (नालंदा), श्री अजय जैन-आरा

(महामंत्री-बिहार तीर्थक्षेत्र कमेटी) इत्यादि विद्वानों के सारगर्भित उद्बोधनों में इस बात को एक मत से घोषित किया गया कि पूज्य गणिनी माताजी द्वारा जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास संस्कृति सुरक्षा के लिए नींव के पत्थर के रूप में सिद्ध होगा। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री माणिकचंद जी पाटनी, इंदौर महामंत्री-दि. जैन महासमिति) ने भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर के विकास के क्रम को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर श्री रमेश कासलीवाल (इंदौर) को 'श्रीमती रूपाबाई जैन विद्वत् महासंघ पुरस्कार-2002' एवं पं. लालचंद जैन 'राकेश' को 'स्व.चंदारानी स्मृति विद्वत् महासंघ पुरस्कार-2002'से सम्मानित किया गया। इससे पूर्व नंद्यावर्त परिसर में श्री ज्ञानचंद जैन (आरा) द्वारा 'नवग्रह शांति मंदिर'का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। मध्यान्ह में भगवान की राज्यसभा एवं पूज्य गणिनी माताजी द्वारा भगवान की दीक्षा विधि सम्पन्न हुई। इस सभा में भारत सरकार के माननीय रक्षामंत्री श्री जार्ज फर्नांडीज का आगमन हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कमलचंद जैन खारी बावली, दिल्ली ने की। पूज्य क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज द्वारा मंगलाचरण के पश्चात् दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित एवं डा. अनुपम जैन द्वारा सम्पादित "महावीर जैन शब्दकोश" का विमोचन करने के साथ-साथ माननीय मंत्री जी ने कहा कि भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर के नवविकास एवं इस विशाल कार्यक्रम के आयोजन का सारा श्रेय पूज्य ज्ञानमती माताजी को ही है एवं उनकी शक्ति ही सम्पूर्ण बिहार प्रान्त को भी इन्सानियत के पथ पर आरूढ़ करने में सक्षम हो सकी है। यह कुण्डलपुर-नालंदा माननीय मंत्री जी का संसदीय क्षेत्र है, अतः इसके विकास हेतु माननीय मंत्री जी ने आश्वासन प्रदान किया। रात्रि में श्री संजय जैन (दिल्ली) जैन म्यूजिकल ग्रुप द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

10 फरवरी को प्रातःकाल तीर्थंकर महामुनि महावीर प्रभु की आहार चर्या राजा कूल के महल में प्रथम पारणा के रूप में सम्पन्न हुई। मध्यान्ह में आयोजित "तीर्थंकर जन्मभूमि विकास अधिवेशन" में चन्द्रपुरी, श्रावस्ती, शौरीपुर, रत्नपुरी, अयोध्या, राजगृही आदि जन्मभूमियों के विषय में आगन्तुक पदाधिकारियों द्वारा अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इसी सभा में रेल मंत्री-भारत सरकार श्री नितीश कुमार जी का आगमन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली ने की। भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर-विचार मंजूषा' के विमोचन के साथ-साथ अवध डायरेक्ट्री 2003 (कैलाशचंद जैन सर्राफ, लखनऊ द्वारा संकलित) का लोकार्पण करने के पश्चात् माननीय मंत्री जी ने घोषणा की कि रेलवे के मानचित्र पर कुण्डलपुर शीघ्र ही अपना स्थान बना लेगा। उन्होंने कहा कि इस अपार भीड़ और सुन्दर कार्यक्रम को देखकर मुझे विश्वास हो गया है कि कुण्डलपुर ही जन-जन में मान्य भगवान महावीर की जन्मभूमि है। रात्रि में झुमरीतलैया जैन समाज द्वारा 'भक्ति के रंग-कुण्डलपुर के संग' का सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

11 फरवरी को केवलज्ञान कल्याणक को मनाने से पूर्व प्रातःकाल तीर्थंकर महामुनि महावीर को कौशाम्बी नगरी में सती चंदना द्वारा ऐतिहासिक आहार क्रिया महावीर स्वामी एवं सती चंदना की आहारमुद्रा वाली प्रतिमाओं की स्थाई स्थापना के साथ सम्पन्न हुई। श्री विजय जैन, दरियागंज (दिल्ली) ने इन प्रतिमाओं के निर्माण का सौभाग्य प्राप्त किया है। कु. स्तुति जैन (सुपुत्री-सौधर्मइन्द्र श्री दीपक जैन, वाराणसी) ने सती चंदना के रूप में भगवान को खीर का आहार प्रदान किया। इससे पूर्व श्री विजय कुमार जैन (कानपुर) द्वारा लिखित "भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार-भारत भ्रमण" पुस्तक का लोकार्पण प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन द्वारा सम्पन्न किया। मध्यान्ह में समवसरण रचना की गई एवं "तीर्थंकर जन्मभूमि विकास महाधिवेशन" का द्वितीय सत्र सम्पन्न हुआ। सेठ श्री रिषभदास जैन (अध्यक्ष-वाराणसी जैन समाज) द्वारा भगवान पार्श्वनाथ जन्मभूमि-भेलूपुर एवं भगवान श्रेयांसनाथ जन्मभूमि-सारनाथ पर विशेष वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर बिहार के राज्यपाल डा. विनोदचंद्र पाण्डेय का आगमन हुआ।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सेठ श्री रिषभदास जैन, वाराणसी ने की। इस अवसर पर आगरा दिगम्बर जैन परिषद, आगरा के पदाधिकारियों की उपस्थिति में डा. अनुपम जैन को महामहिम राज्यपाल द्वारा प्रथम

''भगवान ऋषभदेव पुरस्कार'' (सन् 2002) से सम्मानित करने के साथ पूज्य गणिनी माताजी द्वारा लिखित ''महावीर देशना ग्रंथ'' का विमोचन सम्पन्न हुआ। भगवान ऋषभदेव एवं भगवान महावीर मूर्ति निर्माणकर्ता श्री सूरज नारायण नाठा (जयपुर) के विशेष सम्मान के पश्चात् रात्रि में श्री राजेन्द्र जैन (कलकत्ता) ने सुन्दर भक्ति संगीत संध्या प्रस्तुत की।

12 फरवरी, निर्वाणकल्याणक के पावन दिन प्रातःकाल भगवान को निर्वाण प्राप्ति, निर्वाणलाडू समर्पण एवं पूर्णाहुति हवन सम्पन्न हुए। साथ ही लगभग 100 प्रतिष्ठित जिनप्रतिमाओं (त्रिकाल चौबीसी की 72 प्रतिमा सहित) को नवनिर्मित वेदी में विराजमान कर दिया गया। तत्पश्चात् मध्यान्ह में सम्पन्न हुआ भगवान महावीर 7 हाथ ऊँची (11 फुट) खड्गासन प्रतिमा का 1008 महाकुंभों से महामस्तकाभिषेक। जल, नारियल रस, इक्षु रस, अनार रस, संतरा रस, मौसमी रम, दूध, दधि, सर्वौषधि, चंदन, पुष्प, सुगंधित जल इत्यादि से भगवान के अभिषेक की छटा देखते ही बनती थी। प्रथम कलश का सौभाग्य प्राप्त किया मूर्ति के सौजन्यकर्ता-श्री महावीर प्रसाद जैन, संघपति (दिल्ली) ने एवं शांतिधारा की विजय जैन, दरियागंज (दिल्ली) ने। साथ ही निर्माणाधीन भगवान ऋषभदेव मंदिर की वेदी पर विराजमान लगभग 14 फुट उंचा लालवर्णी पद्मासन भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा का जल एवं दूध से महामस्तकाभिषेक सौजन्यकर्ता-श्री रिषभदास दीपक कुमार जैन (वाराणसी) एवं परिवार द्वारा सम्पन्न किया गया। इससे पूर्व कुण्डलपुर के प्राचीन भगवान महावीर मंदिर में ''भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ'' में सौजन्यकर्ता-श्री कमलचंद जैन (दिल्ली) एवं परिवार द्वारा भगवान महावीर की आठ जिनप्रतिमाएं विराजमान की गईं। रात्रि में आयोजित सभा में समिति द्वारा सभी कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। इस प्रकार जन्मभूमि कुण्डलपुर की प्रतिष्ठा को चारचाँद लगा देने वाला 21वीं सदी का यह ऐतिहासिक पंचकल्याणक इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ के रूप में सदैव के लिए स्थापित हो गया।

कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति के अध्यक्ष-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन द्वारा समस्त कार्यक्रम की सभी व्यवस्थाओं का कुशल संयोजन किया गया। श्री कमलचंद कैलाशचंद जैन, श्री कैलाशचंद जैन (कोषाध्यक्ष), श्री अनिल जैन (महामंत्री), श्री प्रेमचंद जैन खारीबावली (सभी दिल्ली), श्री राकेश जैन (मेरठ), श्री अजय जैन (महामंत्री-आरा), श्री रामगोपाल जैन (उपाध्यक्ष-पटना), श्री सरोज कुमार जैन (महामंत्री-अयोध्या), श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ (लखनऊ), श्री शांतिलाल सेठी (पटना), श्री सनलाल गंगवाल (पटना), श्री विजय कुमार (पटना), डा.पन्नालाल पापड़ीवाल, श्री राजाभाऊ पाटनी, श्री जम्मनलाल कासलीवाल एडवोट (सभी महाराष्ट्र) इत्यादि महानुभावों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन (फिरोजाबाद), डा. अनुपम जैन (इंदौर) एवं श्री विजेन्द्रकुमार जैन शाहदरा (दिल्ली) ने कुशल मंच संचालन करके संपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न कराये। प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश कुमार जैन, पं. अकलंक जैन (लखनऊ), पं. सुधर्मचंद जैन, पं. प्रवीणचंद जैन (हस्तिनापुर) आदिविद्वानों ने आगमसम्मत विधिपूर्वक समस्त धार्मिक क्रियाएं सम्पन्न की। पटना जैन समाज ने आवास व्यवस्था संभालकर समिति को सहयोग प्रदान किया, युवा परिषद-आरा ने जुलूस व्यवस्था का संयोजन करके सहयोग प्रदान कियागया तथा भरतसेना-टिकैतनगर एवं जयजिनेन्द्र सेवा समिति-लखनऊ ने महामस्तकाभिषेक में सहयोग प्रदान किया। सभी कार्यकर्ताओं एवं समस्त विद्वानों, दातारों का सम्मान 12 तारीख की समापन सभा में किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में भोजन की सुन्दर व्यवस्था महाराष्ट्र भक्तमंडल की ओर से कीगयी तथा 13 फरवरी को समस्त ग्रामवासियों के लिए भी आयोजित सामूहिक भोज में लगभग दस हजार लोगों ने भोजन किया।यहां पर एक यह भी विशेष बात रही कि प्रतिदिन ग्रामवासी जैनेतर समाज के हजारोंस्त्री-पुरुषों ने भी पंचकल्याणक आयोजन में सम्मिलित होकर पुण्यवर्धन के साथ-साथ माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। आसपास के ग्रामवासी कुण्डलपुर विकास से बहुत ही प्रसन्न हैं।

-ब्र. कु. स्वाति जैन (संघस्थ)

राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम ने प्राप्त किया आशीर्वाद माताजी का

भारत वर्ष के प्रथम नागरिक-राष्ट्रपति डा.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने 30 मई 2003 को भगवान महावीर निर्वाणभूमि-पावापुरी (नालंदा-बिहार) में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से विशेष मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। यह अवसर था-महामहिम राष्ट्रपति जी की त्रिदिवसीय बिहार यात्रा का। 30 मई को मध्यान्ह 1 बजे पावापुरी के प्रसिद्ध 'जलमंदिर' अर्थात् भगवान महावीर की निर्वाणस्थली का दर्शन कर गाँव मंदिर के प्रवचन हाल में आयोजित धर्मसभा में पधारे महामहिम जी ने सर्वप्रथम अत्यन्त विनम्र भाव से पूज्य माताजी के चरणों में नारियल चढ़ाकर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस अवसर अपने उद्‌बोधन में राष्ट्रपति जी की शाकाहार रूप अहिंसात्मक प्रवृत्ति की हार्दिक प्रशंसा करते हुए कहा कि यह महान गौरव एवं आत्मतुष्टि का विषय है कि अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के सिद्धांतों को आत्मसात करते हुए भारतवर्ष के प्रथम नागरिक अर्थात् राष्ट्रपति के रूप में आप पूर्णतया शाकाहारी जीवन का परिपालन करने वाले हैं, जीवदया की इस भावना हेतु आपके लिए मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है तथा यही मंगल कामना है कि भगवान महावीर के सर्वोदयी शासन की छत्रछाया सदैव आप पर बनी रहे एवं मातृभूमि की निश्छल भाव से सेवा करते हुए आपका यश दिग्दिगन्त व्यापी बने।

महामहिम राष्ट्रपति जी ने पूज्य माताजी के आशीर्वचन से अत्यन्त प्रभावित होकर पूज्य माताजी को विशेषरूप से इंगित करते हुए अपने अंग्रेजी उद्‌बोधन में कहा कि आज जब मैंने जलमंदिर के दर्शन किये तो यह सोचकर कि इसी रज पर कभी स्वयं भगवान महावीर चले होंगे मैं अत्यन्त रोमांचित हो गया जिस प्रकार जैसे-जैसे सरोवर में पानी बढ़ता जाता है वैसे-वैसे उसमें खिले कमल और ऊपर उठते जाते हैं उसी प्रकार हमें भी अपने विचारों को ऊर्ध्वगामी बनाना है, हम शांति को अपनी सांस के साथ अन्दर ले जाएं और समस्त हिंसा, अन्याय एवं बुराइयों के विचारों को बाहर आने वाली सांस के साथ निकाल दें। आप जैसे संत अपनी साधना से समस्त जनता को खुशी प्रदान करें यही मेरी मंगल भावना है। अहिंसा परमाणुबम से भी शक्तिशाली अस्त्र है।

इस संक्षिप्त उद्‌बोधन के पश्चात् राष्ट्रपति जी ने पुनः माताजी का आशीर्वाद प्राप्त कर प्रसन्नता का अनुभव किया। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने उन्हें भगवान महावीर के चित्र का प्रतीक चिन्ह प्रदान किया तथा कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति की ओर से अध्यक्ष ब्र.रवीन्द्र कुमार जी ने डॉ. कलाम को पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य एवं पूज्य माताजी का चित्र भेंट किया।

-ब्र. कु. आस्था जैन (संघस्थ)

जैनियों की ऐतिहासिक धरोहर भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा)

-कुण्डलपुर का ऐतिहासिक स्वरूप-

-डा. ब्रजेश कुमार 'वर्मा' (नालंदा)

जैनियों का संबंध 'कुण्डलपुर' से अतिप्राचीन काल से ही रहा था और रहेगा। यह 'कुण्डलपुर' नगरी ही जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकरों में से भगवान महावीर की पावन जन्मभूमिहै। वर्तमान में कई आधुनिक इतिहासकारों तथा पुरातत्वविदों ने इस स्थल को दिग्भ्रमित बनाये रखा कि भगवान महावीर की जन्मस्थली कुण्डलपुर नहीं है वैशाली है किन्तु जैन साहित्य ग्रंथों, पुराणों तथा विदेशी यात्रियों के द्वारा तैयार किये गये विवरणों के आधार पर तथा पुरातात्विक अवशेषों के प्रमाण के आधार पर जैन समाज के वरिष्ठ विद्वानों को पूर्ण विश्वास है कि हमारे जैन तीर्थंकरों में भगवान महावीर की पावन जन्मभूमि 'कुण्डलपुर' ही है।

इस कुण्डलपुर में अति भव्य नंद्यावर्त महल बना हुआ था जहाँ भगवान महावीर का जन्म हुआ था। काल के थपेड़ों ने इस पवित्र भूमि के अस्तित्व को मिटाने का नाना प्रयास करना चाहा किन्तु जैन संतों एवं प्रत्येक जिन धर्मानुयायियों के द्वारा आस्था एवं विश्वास 'कुण्डलपुर' में हमेशा बनाये रहने के कारण आज भी वह जन्मभूमि श्रद्धा का केन्द्र बनी हुई है। वर्तमान समय में 'कुण्डलपुर' में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा द्वारा भव्य नंद्यावर्त महल एवं विशाल जिनमंदिरों का पुनः निर्माण कार्य जारी है। पुरातत्वविदों के अनुसार भी यह ज्ञात होता है कि 'कुण्डलपुर' के दिगम्बर जैन मंदिरों के पश्चिम टीलों में जैन तीर्थंकर भगवान महावीर का प्राचीन एवं पावन भव्य महल जमीन के गर्भ में जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पड़ा हुआ है।

अनेक प्रमाणों के अनुसार यह ज्ञात होता है कि वास्तव में भगवान महावीर की जन्मभूमि 'कुण्डलपुर' ही थी। इसके और बहुत सारे प्रमाण नालंदा पुरातात्विक संग्रहालय से प्राप्त जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों से जाने जा सकते हैं कि नालंदा पूर्व में जैनियों का ही केन्द्रबिन्दु था किन्तु अन्य धर्म के सम्प्रदायों ने आगे चलकर 'राजनीतिक संरक्षण' के कारण इस धर्म के भाव-भंगिम रूप को परिवर्तित कर दिया।

वर्तमान समय में जो नालंदा विश्वविद्यालय बना हुआ है वह कुछ खोजकर्ताओं के अनुसार जैन तीर्थंकर भगवान् महावीर के प्राचीन राजमहल के पुरातात्विक अवशेष के रूप में जाना जा रहा है। जैन धर्म अनादिनिधन है और भगवान महावीर से पूर्व 23 तीर्थंकर इसमें हो चुके हैं, महात्मा बुद्ध भगवान महावीर के समकालीन थे उस समय तक जैनधर्म का एक व्यापक रूप था उस जिनधर्म के अनुयायी मगध प्रांत के राजा उदयन, अजातशत्रु, बिम्बसार और चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार आदि अनेक राजागण थे। जिनके द्वारा मगध प्रांत व अनेक प्रांतों में जैन गुफाओं, मठों तथा जैन संस्कृति को प्रत्यारोपित करने का विवरण साहित्य ग्रंथों में मिलता है। दिगम्बर जैनियों की परम्पराओं के अनुसार 'कुण्डलपुर' ही जैनियों के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर की पावन जन्मभूमि के रूप में आस्था का स्थल है। अतएव यहां कई दशकों पूर्व से ही जैन लोग 'भगवान महावीर की जन्मभूमि' के रूप में दर्शन के लिए आया करते हैं।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट है कि भगवान महावीर की पावन जन्मभूमि कुण्डलपुर ही है।

जैनधर्म का ऐतिहासिक स्वरूप–

जैनधर्म अनादिनिधन है इसका कोई निर्माता नहीं है, यह युगों-युगों से प्राणिमात्र के लिए हितकारी है। जैनधर्म के तीर्थंकरों में ऋषभदेव प्रथम, पार्श्वनाथ 23वें तथा भगवान महावीर 24वें तीर्थंकर हैं। इन्होंने जैनधर्म को विशेष रूप से पुष्पित एवं पल्लवित किया। भगवान महावीर के समय हिंसा का अत्यधिक

बोलबाला होने से जैनमत की बिखरी पड़ी प्राचीन परम्परा, उसके अहिंसक स्वरूप एवं सांस्कृतिक इतिहास को एक माला के रूप में गूँथकर उन्होंने सजाया और संवारा। इनका जन्म विदेह देश (बिहार प्रदेश) की राजधानी कुण्डलपुर में ई.पू. 599 में आज से 2600वर्ष पूर्व माता त्रिशला देवी (प्रियकारिणी) के पवित्र गर्भ से भव्य नंद्यावर्त महल में हुआ था। नाथवंशीय राजा सिद्धार्थ इनके पिता थे। वर्तमान में कुण्डलपुर (नालंदा) जिला (बिहार प्रदेश) में स्थित है। जैनधर्म के अनुयायी कुण्डलपुर नालंदा को 2600 वर्षों से जन्मकल्याणक से पवित्र भूमि के रूप में पूजते आ रहे हैं। लेकिन इधर कुछ दशकों से कुछ आधुनिक इतिहासकारों तथा जैनधर्म के श्वेताम्बर सम्प्रदाय के कुछ अनुयायियों ने अपने शोधों एवं खुदाई में प्राप्त मात्र कुछ अवशेषों के माध्यम से वैशाली में एक कुण्डग्राम बनाकर उसे भगवान महावीर की जन्मभूमि बतलाया है। इस क्रम में दिगम्बर सम्प्रदाय के कुछ-कुछ अनुयायी भी दिग्भ्रमित होकर वैशालीस्थित कुण्डग्राम को भगवान महावीर की जन्मभूमि बतलाने लगे हैं और कतिपय शोधकर्ताओं एवं आधुनिक इतिहासकारों के शोधों के आधार पर ही बिहार सरकार शासन ने भी 1956 में वैशाली को भगवान् महावीर की जन्मभूमि स्वीकार कर पाठ्य-पुस्तकों में भी प्रकाशित कर दिया जिससे जनसाधारण भी इस दिशा में दिग्भ्रमित हो गए किन्तु यह जैनधर्म ग्रंथों के आधार पर नितान्त गलत व निराधार है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर की वास्तविकता को स्पष्ट किया जाये जिससे मानव जाति व जैन अनुयायी महावीर की जन्मभूमि के बारे में विस्तृत रूप से सत्य का दर्शन कर सकें तथा जैनधर्म से संबंधित भविष्य में होने वाले शोधों में वास्तविक सत्यों को उद्घाटित कर सकें यदि ऐसा नहीं किया गया तो भगवान महावीर जन्मभूमि के संबंध में मानव-जाति व जैन अनुयायियों के सामने एक विकट समस्या उत्पन्न हो जायेगी। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि जब तक महावीर जन्मभूमि को स्पष्ट नहीं किया जायेगा तब तक संसार का कल्याण होना बहुत ही मुश्किल है। जब हम जैनधर्म के प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन करते हैं तो महावीर की जन्मभूमि का पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध होता है। जैनधर्म के सार-तत्व को ग्रहण कर हम महावीर की जन्मभूमि को विवादग्रस्त होने से बचा सकते हैं। उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में जैनियों की ऐतिहासिक धरोहर भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर की प्रासंगिकता एवं महत्व परिलक्षित होता है।

''भगवान महावीर जैन शब्दकोष'':

आधुनिक समाज हेतु अमूल्य उपहार

राष्ट्रगौरव पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के कुशल मार्गदर्शन में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. द्वारा ''भगवान महावीर जैन शब्दकोष'' का प्रकाशन किया गया है।

इस शब्दकोष में लगभग 18000 जैन पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी व हिन्दी अर्थ दिये गये हैं, जो अंग्रेजी में अनुवादित जैनधर्म के ग्रंथों का स्वाध्याय करने वालों एवं जैनागम के ग्रंथों को अंग्रेजी में अनुवादित करने वाले शोधार्थियों के लिए विशेष लाभप्रद सिद्ध होंगे। अतः जैन आगम से संबंधित अधिकाधिक शब्दों का परिपूर्ण एवं निष्पक्ष ज्ञान प्राप्त करने हेतु अवश्य ही 'भगवान महावीर जैन शब्दकोष' का प्रयोग करें। शब्दकोष प्राप्त करने के लिए निम्न पते पर संपर्क करें–

प्राप्ति स्थानः- दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404, फोन नं.-(01233) 280184, 280236

29 मार्च 1911 को श्री हर्मन जैकोबी द्वारा श्वेताम्बर जैनमुनि श्री विजयधर्म जी महाराज को महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर-नालंदा विषयक यह पत्र सम्पूर्ण जैन समाज के लिए वास्तव में एक ऐतिहासिक दस्तावेज है-

Dear Sir,

I had much pleasure in the receiving your letter dated Feb. 27 Which contained good news from you and kind Wishes for me. I also beg to achnowledge receipt of material, which contains useful information of Nalanda and Kundalpur being birthplace of Lord Mahavira. It becomes very useful to me, in many ways. You have urged me to rewrite my article on "Jainism" in the Encyclopedia of religion & ethics. Regarding Kundalpur near Nalanada, there are some references in Tiloipanntti, I agree with them.

I hope, however to induce Prof. W. Sohribring who is without doubt our best Jain Scholar, historian, well groomed in Siddhanta to undertaka a similar work. I am sure that he will do important work for Jain world.

Mr. K.P. Modi sent me some photographs of Kundalpur.

Hoping your well.

I remain yours sincerely
(HERMANN JACOBI)

धरती के स्वर्ग-जम्बूद्वीप रचना का दर्शन करें

पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)में निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय रचना 'जम्बूद्वीप' का दर्शन अवश्य करें। उ.प्र. पर्यटन ने इस रचना को हस्तिनापुर की विशिष्ट पहचान बताते हुए इसे 'अतुलनीय मानव निर्मित स्वर्ग' की संज्ञा प्रदानकी है।

त्रिमूर्ति मंदिर, कमल मंदिर, ध्यान मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, कैलाशपर्वत मंदिर इत्यादि रचनाओं से समन्वित जम्बूद्वीप परिसर में पधारने वाले यात्रियों के आवास एवं भोजन इत्यादि की समुचित व्यवस्था उपलब्ध है। हरे-भरे पार्कों के बीच प्राकृतिक सौन्दर्य का रसास्वादन करते हुए आत्म सौन्दर्य का पान करने हेतु अवश्य पधारें।

-पता-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर(मेरठ)उ.प्र.250404
फोन-(01233) 280184, 280236

बीसवीं शताब्दी में नारियों का सम्मान बढ़ाने वाली
कुमारिकाओं को त्याग का सर्वोत्कृष्ट पद दिखलाने वाली
नारियों की मसीहा
बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी, अवध की अनमोल मणि
जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी
परमपूज्य युगप्रवर्तिका, चारित्र चन्द्रिका, गणिनीप्रमुख

श्री ज्ञानमती माताजी के

पावन चरणद्वय में
उनकी पावन प्रेरणा से गठित ''अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन''
शत-शत नमन करते हुए भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में आयोजित

''कुण्डलपुर महोत्सव''

हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए हर्ष का अनुभव करती है।

सच तो इस नारी की शक्ति, नर ने पहचान न पाई है।
मंदिर में मीरा है तो वह रण में भी लक्ष्मीबाई है।।
हैं ज्ञानक्षेत्र में ज्ञानमती, नारी की कला निराली है।
सच पूछो नारी के कारण, यह धरती गौरवशाली है।।

श्रीमती निर्मला जैन-दिल्ली
(अध्यक्ष)

श्रीमती सुमन जैन-इंदौर
(महामंत्री)

कुण्डलपुर महोत्सव की प्रासंगिकता

-ब्र. कु. स्वाति जैन (संघस्थ)

यूँ तो भगवान महावीर की जन्मभूमि पर नित्य ही बधाई बजे तो कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि भगवान महावीर को जन्म लिए कोई लाखों-करोड़ों वर्ष नहीं बीत गए अपितु मात्र 2600 वर्ष ही व्यतीत हुए हैं जब साक्षात् स्वर्ग से सौधर्म इन्द्र अपने विशाल परिकर सहित आकर प्रभु का जन्मकल्याणक उत्सव मनाकर अपना जीवन धन्य मानता था, जब शचि इन्द्राणी गुप्त रूप से आकर माता की सेवा कर आह्लादित होती थी, यही वह पवित्र भूमि है, जहाँ 2600 वर्षों पूर्व धनकुबेर ने करोड़ों रत्नों की वृष्टि की थी, जहां स्वर्ण एवं रत्नों से निर्मित नंद्यावर्त महल था, जहाँ रत्नों से निर्मित दिव्य पलंग पर माता त्रिशला ने सोलह स्वप्न देखे थे और चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की शुभ तिथि में अहिंसा के अवतार भगवान महावीर को जन्म देकर इस भूमण्डल को सनाथ किया था, मात्र 2600 वर्षों के अन्तराल में ही यह भूमि इतनी उपेक्षित हो जाएगी यह बात शायद किसी को नहीं पता थी। जिन शासनपति भगवान महावीर के शासनकाल में हम अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं उनकी जन्मभूमि काल के थपेड़ों से उपेक्षित भले ही हुई हो लेकिन जन-जन की श्रद्धा-आस्था का केन्द्रबिन्दु वह आज भी है और आगे भी जन-जन की श्रद्धा का केन्द्र बनी रहेगी।

वर्तमान में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव के सुअवसर पर इस तीर्थ को पुनः 2600 वर्ष पूर्व का ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान कर उसे विश्व के मानसपटल पर अंकित कर समस्त जैन समाज पर जो अनन्य उपकार किया है, जैन समाज युगों-युगों तक उनका चिरऋणी रहेगा। आज उनकी प्रेरणा से इस तीर्थ ने मात्र अपना खोया हुआ स्वरूप ही नहीं पाया अपितु एक बार पुनः इस भूमि से उठी अहिंसा की अनुगूँज सम्पूर्ण विश्व में विश्वमैत्री, प्रेम एवं भाईचारे का संदेश प्रदान करेगी।

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में ''कुण्डलपुर महोत्सव'' की प्रासंगिकता इसलिए बढ़ी कि जिनशासन की प्रभाविका एवं तीर्थ विकास की प्रेरणास्रोत परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का तीर्थ पर मंगल चातुर्मास हुआ है। पूज्य माताजी के चातुर्मास से असाध्य कार्य भी साध्य हो जाते हैं और असंभव भी संभव हो जाता है ऐसा एक नहीं अनेकों बार देखने में आया है और यहाँ भी तीर्थ विकास जैसा ऐसा ही असाध्य और असंभव कार्य देखते ही देखते हो गया जिसकी किसी ने परिकल्पना भी नहीं की होगी। वास्तव में अगर 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव का सुअवसर न आता तो शायद इसके उद्धार का अवसर भी न आता। भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव पर जब सारा देश राष्ट्रीय स्तर पर विविध कार्यक्रमों के माध्यम से उनका जन्मोत्सव मना रहा था तब पूज्य माताजी के मन में उठी अन्तर्प्रेरणा से माताजी के कदम इस ओर बढ़े और उनके मंगल पदार्पण ने इस नगरी की गरिमा में चार चांद लगा दिये फिर तो कुण्डलपुर के निर्माणाधीन काल में ही कितने-कितने उत्सव एवं महोत्सव सम्पन्न होने लगे और उसी श्रृंखला में यह **''कुण्डलपुर महोत्सव''** ''भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति'' एवं ''बिहार सरकार पर्यटन विभाग'' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हो रहा है जिसके द्वारा भारत की जैन-

जैनेतर समाज भगवान महावीर के सर्वोदयी सिद्धान्तों को जानकर उन्हें अपने जीवन में ग्रहण करने का सद्प्रयास करेगी एवं सर्वतोमुखी उन्नति करेगी।

आज जब दुनियों में अस्त्र-शस्त्रों की होड़ लगी है, सबल देश निर्बल देशों पर हमला कर उन्हें पराजित करने में लगे हैं, आतंकवाद का चारों ओर बोलबाला है, मानव ही मानव का हंता बन रहा है, लोग आत्मघाती बमों का उपयोग कर दूसरों को मारने के लिए खुद भी मरने से नहीं डरते हैं, ऐसे विषम समय में भगवान महावीर के सिद्धान्त ही विश्वशांति की स्थापना कर सकते हैं और उन अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और अनेकांत के सिद्धान्त, ''जियो और जीने दो'' के नारे की अनूगूँज जब भगवान महावीर की जन्मभूमि से उठे तो सोने में सुगंधि वाली कहावत ही चरितार्थ हो जाएगी।

वह भारत देश जहां कभी दूध और घी की नदियां बहती थीं, जहाँ ''ऋषि बनो या कृषि करो''का सिद्धान्त प्रतिपादित था, सर्वत्र सुख, शांति एवं खुशहाली थी आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से वहाँ अण्डे को शाकाहारी कहा जा रहा है, जगह-जगह पोल्ट्रीफार्म, सुअर पालन, मत्स्यपालन कर उन्हें खेती की संज्ञा देकर जनता को मांसाहार की ओर प्रेरित किया जा रहा है, जगह-जगह बूचड़खाने-कत्लखाने खुल रहे हैं और बेजुबान मूक पशु लाखों की संख्या में मौत के घाट उतारे जा रहे हैं इससे हमारी आने वाली पीढ़ी क्या यही सिद्धान्त नहीं ग्रहण करेगी कि भगवान राम एवं महावीर की धरती पर मांसाहार की खेती होती थी, क्या वह जान पाएगी कि इसी वसुन्धरा पर दूध और घी की नदियां बहती थी, क्या वह समझ पाएगी कि इसी माटी में हरे-भरे लहलहाते धान्यादि के खेत थे, फले-फूले वृक्ष थे जिनका न केवल फल-फूल ही अपितु सम्पूर्ण अंश हमारे लिए उपयोगी होता है।

बन्धुओं! यदि हमें ऐसा नहीं करना है, हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को भी अपनी भारतीय संस्कृति, उसके आचार-विचार एवं भारतीय सभ्यता से परिचित करवाना है तो हमें अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के बताए हुए सिद्धान्तों पर चलना होगा, मात्र चलना ही नहीं होगा उन्हें आत्मसात करना होगा और निज जीवन में उन्हें उतारने के बाद जन-जन के अन्तस् में भी उन्हें उतारना होगा। ऐसे में सरकार व समाज दोनों का दायित्व बनता है कि वह समाज, राज्य, राष्ट्र एवं विश्वशांति के लिए अहिंसा का व्यापक प्रचार-प्रसार करें और समस्त भारतवासियों के लिए भी भगवान महावीर द्वारा बताई गई अहिंसा का पाठ पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। राज्य व केन्द्र सरकारों को कृषि विभाग के अंतर्गत केवल अहिंसक खेती को ही स्थान देना चाहिए जो प्राचीन काल से अन्न, मेवा, फल, उत्पादन रूप रही है। अगर हम यह संकल्प कर लें कि हम अपने देश से हिंसा का ताण्डवनृत्य पूर्णरूपेण समाप्त कर देंगे और शासनपति भगवान महावीर के बताए अहिंसा आदि सिद्धान्तों पर चलकर सर्वत्र अहिंसक वातावरण का निर्माण करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश महावीर जन्मभूमि की भांति ही अपने प्राचीन स्वरूप को प्राप्त कर अपनी सांस्कृतिक विरासत, भारतीय संस्कृति व सभ्यता द्वारा पुनः वैभवयुक्त हो जाएगा।

आइये, इस ''कुण्डलपुर महोत्सव'' के शुभ अवसर पर हम भगवान महावीर की जन्मभूमि पर भगवान महावीर एवं तीर्थ विकास प्रणेत्री पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में संकल्प करें कि हम जन-जन को भगवान महावीर की जन्मभूमि, उनके जीवन दर्शन एवं उनके सर्वोदयी-अहिंसामयी, कल्याणकारी सिद्धान्तों से परिचित करवाकर ''अहिंसक भारत'' का निर्माण करने में अपना अमूल्य योगदान देंगे।

महोत्सव की सम्प्रेरिका

परम पूज्य राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैनशासन के वर्तमान व्योम पर छिटके नक्षत्रों में दैदीप्यमान सूर्य की भाँति अपनी प्रकाश-रश्मियों को प्रकीर्णित कर रही पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उठी लेखनी की अपूर्णता यद्यपि अवश्यंभावी है, तथापि आत्मकल्याण की भावना से पूज्य माताजी के श्रीचरणों में उनके त्यागमयी जीवन के पचास स्वर्णिम वर्षों की पूर्णता पर विनम्र विनयांजलि रूप मेरा यह विनीत प्रयास है।

1. जन्म, वैराग्य और दीक्षा –

22 अक्टूबर सन् 1934, शरदपूर्णिमा के दिन टिकैतनगर ग्राम (जि. बाराबंकी, उ.प्र.) के श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी के दांपत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में ''मैना'' का जन्म परिवार में नवीन खुशियाँ लेकर आया था। माँ को दहेज में प्राप्त 'पद्मनंदिपंचविंशतिका' ग्रन्थ के नियमित स्वाध्याय एवं पूर्वजन्म से प्राप्त दृढ़ वैराग्य संस्कारों के बल पर मात्र 18 वर्ष की अल्प आयु में ही शरद पूर्णिमा के दिन मैना ने आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से सन् 1952 में आजन्म ब्रह्मचर्यव्रतरूप सप्तम प्रतिमा एवं गृह त्याग के नियमों को धारण कर लिया। जैनेश्वरी दीक्षा की कामना को अपनी हर साँस में संजोये ब्र. मैना सन् 1953 में आचार्य श्री देशभूषण जी से ही चैत्र कृष्णा एकम् को श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र में 'क्षुल्लिका वीरमती' के रूप में दीक्षित हो गईं। सन् 1955 में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की समाधि के समय कुंथलगिरी पर एक माह तक प्राप्त उनके सान्निध्य एवं आज्ञा द्वारा 'क्षुल्लिका वीरमती' जी ने आचार्य श्री के प्रथम पट्टाचार्य शिष्य-वीरसागर जी महाराज से सन् 1956 में 'वैशाख कृष्णा दूज' को माधोराजपुरा (राज.) में आर्यिका दीक्षा धारण करके ''आर्यिका ज्ञानमती'' नाम प्राप्त किया।

2. अध्ययन और अध्यापन –

ज्ञानप्राप्ति की पिपासा माता ज्ञानमती जी के रोम-रोम में प्रारंभ से ही कूट-कूट कर भरी थी। दीक्षा लेते ही स्वाध्याय-मनन-चिंतन की धारा में ही उन्होंने स्वयं को निबद्ध कर लिया। ज्ञान-प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ स्रोत बना-संघस्थ मुनियों, आर्यिकाओं एवं संघस्थ शिष्य-शिष्याओं को जैनागम का तलस्पर्शी अध्यापन। 'कातंत्र रूपमाला' रुपी बीज से पूज्य माताजी की ज्ञानसाधना रूप वृक्ष प्रस्फुटित हुआ, जिस पर जो पत्ते, फूल-फल इत्यादि लगे, उन्होंने समस्त संसार को सुवासित कर दिया। गोम्मटसार, परीक्षामुख-न्यायदीपिका, प्रमेयकमलमार्तण्ड, अष्टसहस्री, तत्त्वार्थराजवार्तिक, सर्वार्थसिद्धि, अनगारधर्मामृत, मूलाचार, त्रिलोकसार आदि अनेक ग्रंथों को अपनी शिष्याओं और संघस्थ साधुओं को पढ़ा-पढ़ाकर आपने अल्प समय में ही विस्तृत ज्ञानार्जन कर लिया। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी इत्यादि भाषाओं पर आपका पूर्ण अधिकार हो गया।

3. लेखनी का प्रारंभीकरण संस्कृत भाषा से –

भगवान महावीर के पश्चात् 2500 वर्ष के जिस इतिहास में जैन साध्वियों के द्वाराशास्त्र लेखन की कोई मिसाल दृष्टिगोचर नहीं होती थी, वह इतिहास जागृत हो उठा जब क्षुल्लिका वीरमती जी ने सन् 1954 में सहस्रनाम के 1008 मंत्रों से अपनी लेखनी का प्रारंभ किया। यही मंत्र सरस्वती माता का वरदहस्त बनकर पूज्य माताजी की लेखनी को ऊँचाइयों की सीमा तक ले गये। सन् 1969-70 में न्याय के सर्वोच्च ग्रंथ 'अष्टसहस्री' के हिन्दी अनुवाद ने उनकी अद्वितीय विद्वत्ता को संसार के सामने उजागर कर दिया। कितने ही ग्रंथों की संस्कृत टीका, कितनी ही टीकाओं के हिंदी अनुवाद, संस्कृत एवं हिन्दी में अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना मिलकर आज 250की संख्या को पार कर चुके हैं। पूज्य माताजी द्वारा लिखित समयसार, नियमसार इत्यादि की हिन्दी-संस्कृत टीकाएँ, जैनभारती, ज्ञानामृत, कातंत्र व्याकरण, त्रिलोक भास्कर, प्रवचन निर्देशिका इत्यादि स्वाध्याय ग्रंथ, प्रतिज्ञा, संस्कार, भक्ति, आदिब्रह्मा, आटे का मुर्गा, जीवनदान इत्यादि जैन उपन्यास, द्रव्यसंग्रह-रत्नकरण्डश्रावकाचार इत्यादि के हिन्दी पद्यानुवाद व अर्थ, बाल विकास-बालभारती, नारी आलोक आदि का अध्ययन किसी को भी वर्तमान में उपलब्ध जैन वाङ्मय की विविध विधाओं का विस्तृत ज्ञान कराने में सक्षम है।

अध्यात्म, व्याकरण, न्याय, सिद्धांत, बाल साहित्य, उपन्यास चारों अनुयोगों रूप विविध विधाओं के अतिरिक्त पूज्य माताजी की लेखनी से विपुल भक्ति साहित्य उद्भूत हुआ है। इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीन लोक, सिद्धचक्र, विश्वशांति महावीर विधान इत्यादि भक्ति विधानों ने देश के कोने-कोने में जिनेन्द्र भक्ति की जो धारा प्रवाहित की है, वह अतुलनीय है।

धन्य है ऐसी महान प्रतिभावान् सरस्वती माता!

4. सिद्धांत चक्रेश्वरी –

वर्तमान में पू. माताजी जैनशासन के सर्वप्रथम सिद्धांत ग्रंथ 'षट्खण्डागम' के सूत्रों की संस्कृत टीका 'सिद्धांत चिंतामणि' के लेखन में संलग्न हैं। 10 पुस्तकों की टीका वह लिख चुकी हैं, जिसमें से प्रथम पुस्तक हिन्दी टीका सहित प्रकाशित भी हो चुकी है। 11वीं पुस्तक की टीका का लेखन जारी है। आज से लगभग 1000 वर्ष पूर्व आचार्य श्री नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती ने जिस प्रकार छह खण्ड रूप द्वादशांग रूप जिनवाणी को परिपूर्ण आत्मसात करके सार रूप में द्रव्य संग्रह, गोम्मटसार, लब्धिसार इत्यादि ग्रंथ अपनी लेखनी से प्रसवित किये थे, उसी प्रकार इस बीसवीं सदी की माता ज्ञानमती जी ने समस्त उपलब्ध जैनागम का गहन अध्ययन-मनन-चिंतन करके इस सिद्धांतचिंतामणि रूप संस्कृत टीका लेखन के महत्तम कार्य से 'सिद्धांत चक्रेश्वरी' के पद को साकार कर दिया है। 1000 वर्ष पूर्व आचार्य श्री वीरसेन स्वामी द्वारा लिखित 'धवलाटीका' के पश्चात् इस महान ग्रंथ की सरल टीका लेखन का कार्य प्रथम बार हो रहा है।

5. शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर –

जैन सिद्धातों का मर्म विद्वत वर्ग समझ सके, इस भावना से कितने ही शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन पूज्य माताजी की प्रेरणास्वरूप किया गया। सन् 1969 में जयपुर चातुर्मास के मध्य 'जैन ज्योतिर्लोक' पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य माताजी द्वारा 'जैन भूगोल एवं खगोल' का विशेष ज्ञान विद्वतवर्ग को कराया गया। अक्टूबर सन् 1978 में हस्तिनापुर में पं. मक्खनलाल जी शास्त्री, पं. मोतीचंद जी कोठारी, डा. लाल बहादुर शास्त्री सहित जैन समाज के उच्चकोटि के लगभग 100 विद्वानों का विद्वत प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया

गया, जिसमें पूज्य माताजी ने विद्वत्समुदाय को यथेष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया। समय-समय पर आज तक यह श्रृंखला चल रही है।

6. राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार –

सन् 1985 में 'जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में सम्पन्न हुआ। पुनः अनेक संगोष्ठियां सम्पन्न होती रहीं और सन् 1998 में 'भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन' के भव्य आयोजन द्वारा देशभर के विश्वविद्यालयों से पधारे कुलपतियों को भगवान ऋषभदेव को भारतीय संस्कृति एवं जैनधर्म के वर्तमानयुगीन प्रणेता पुरुष के रूप में जानने का अवसर प्राप्त हुआ। 11 जून 2000 को 'जैनधर्म की प्राचीनता' विषय पर आयोजित इतिहासकारों के सम्मेलन द्वारा पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म संबंधी भ्रांतियों के सुधार के लिए विशेष दिशा-निर्देश 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद' (NCERT) तक पहुंचाये गये। इनके अतिरिक्त अनेक अन्य सेमिनार भी समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं, जिनके प्रतिफल में देश के समक्ष समय-समय पर साहित्यिक कृतियाँ प्रस्तुत हो चुकी हैं।

7. विश्वविद्यालय भी गौरवान्वित हुआ –

मात्र कक्षा-तीन तक के लौकिक अध्ययन को प्राप्त विदुषी माता जी ने अध्ययन, अध्यापन, साहित्य निर्माण की जिन ऊँचाइयों को स्पर्श किया, उस अगाध विद्वता के सम्मान हेतु अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद द्वारा 5 फरवरी 1995 को डी.लिट्. की मानद् उपाधि से पूज्य माताजी को सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया गया।

8. इतिहास भी परिवर्तन के लिए बाध्य हुआ –

सन् 1992 से पूज्य माताजी की दृष्टि आधुनिक शिक्षाजगत में पढ़ायी जाने वाली पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म संबंधी भ्रान्त विषय वस्तु पर गयी तो 'भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक हैं' इत्यादि भ्रांतियों को वहाँ देखकर उनका हृदय अत्यंत उद्वेलित हो उठा। फलस्वरूप प्रधानमंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री, निदेशक-NCERT इत्यादि से उनकी प्रत्यक्ष वार्ता द्वारा शिक्षाजगत तक यह संदेश पहुंचा और दस वर्षों के अथक प्रयास द्वारा पाठ्य पुस्तकों में संशोधन का क्रम प्रारंभ हो सका और वर्तमान में NCERT जैनधर्म संबंधी सही तथ्यों से युक्त राष्ट्रीय पाठ्य पुस्तक तैयार करने में संलग्न है, यह बड़े ही गौरव की बात है। यथासंभव संशोधन होते ही संपूर्ण जैनसमाज की ओर से केन्द्र सरकार का स्वागत होना चाहिए।

9. तीर्थ विकास की भावना–

तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों एवं विशेष रूप से जन्मभूमियों केविकास की ओर पूज्य माताजी की विशेष आंतरिक रुचि सदा से रही है। पूज्य माताजी का कहना हैं कि हमारीसंस्कृति का परिचय प्रदान करने वाली ये कल्याणक भूमियाँ हमारी महान संस्कृति की धरोहर हैं, अतः इनका संरक्षण-संवर्धन-विकास अत्यंत आवश्यक है।

सर्वप्रथम भगवान शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि 'हस्तिनापुर' में पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय रचना 'जम्बूद्वीप' आज विश्व के मानस पटल पर अंकित हो गयी है, उ.प्र. सरकार के पर्यटन विभाग ने जम्बूद्वीप से हस्तिनापुर की पहचान बताते हुए उसेएक अतुलनीय 'मानव निर्मित

स्वर्ग' (A Man Made Heaven of Unparallel Superlatives And Natural Wonders) की संज्ञा प्रदान की है। सन् 1993 से 95 तक शाश्वत जन्मभूमि 'अयोध्या' में 'समवसरण मंदिर' और 'त्रिकाल चौबीसी मंदिर' का निर्माण करवाकर उसका विश्वव्यापी प्रचार, अकलूज (महाराष्ट्र) में नवदेवता मंदिर निर्माण की प्रेरणा, सनावद (म.प्र.) में णमोकार धाम, प्रीत विहार-दिल्ली में कमल मंदिर, मांगीतुंगी (महाराष्ट्र) में सहस्रकूट कमल मंदिर, अहिच्छत्र में ग्यारह शिखर वाला तीस चौबीसी मंदिर और भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली' का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की ही प्रेरणा के सुफल हैं। कितने ही अन्य स्थानों पर भी अनेकानेक निर्माण पूज्य माताजी के निर्देशन द्वारा सम्पन्न हुए और हो रहे हैं। वर्तमान में भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) के विकास हेतु भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ, त्रिकाल चौबीसी मंदिर, नंद्यावर्त महल सहित भगवान महावीर की विशाल खड्गासन प्रतिमा की स्थापना आदि अनेक निर्माण आपकी प्रेरणा से इस क्षेत्र पर किये जा रहे हैं तथा 7 से 12 फरवरी 2003 तक भव्य 'पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुम्भमस्तकाभिषेक' कार्यक्रम वहां सम्पन्न हुआ।

10. विश्व में अनोखी 108 फुट मूर्ति निर्माण की प्रेरणा –

विश्व के अप्रतिम आश्चर्य के रूप में 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा के निर्माण का कार्य मांगीतुंगी (महा.) के पर्वत पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रारंभ हो चुका है। युगों-युगों तक जिनशासन की महिमा को विकसित करने वाली यह प्रतिमा जैन संस्कृति के विशाल व्यक्तित्व का परिचय भी जनमानस को प्रदान करेगी।

11. शिरडी(महाराष्ट्र) में ज्ञानतीर्थ –

शिरडी (महाराष्ट्र) को जैन संस्कृति केन्द्र के रूप में स्थापित करने हेतु महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं द्वारा वहाँ पर 'ज्ञानतीर्थ' के निर्माण की योजना मूर्त रूप ले रही है, जिसमें 'नवग्रह शांति मंदिर' का विशेष निर्माण पूज्य माताजी के निर्देशानुसार सम्पन्न किया जायेगा।

12. धर्मप्रभावना के विविध आयाम –

जम्बूद्वीप रचना के निर्माण का प्रमुख लक्ष्य लेकर 'दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान' नामक संस्था का राजधानी दिल्ली में पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में गठन किया गय। इसी संस्थान ने विविध धर्मप्रभावना के कार्यों का निष्पादन किया है। संस्थान स्थित 'वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला' द्वारा लाखों की संख्या में ग्रंथ प्रकाशन, चारों अनुयोगों के ज्ञान से समन्वित 'सम्यग्ज्ञान' मासिक पत्रिका का प्रकाशन, णमोकार महामंत्र बैंक इत्यादि कितनी ही कार्ययोजनाएँ जिनशासन की कीर्ति को निरंतर प्रसारित कर रही हैं।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1982 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा राजधानी दिल्ली में उद्घाटित 'जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति' ने तीन वर्ष तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में जैनधर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया और अंत में यह ज्योति अखण्ड रूप से तत्कालीन केन्द्रीय रक्षामंत्री-श्री पी.वी. नरसिंहाराव द्वारा जम्बूद्वीप स्थल पर स्थापित कर दी गयी। इसी प्रकार अप्रैल सन् 1998 में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार' का राजधानी दिल्ली से प्रवर्तन किया, जो समस्त प्रांतों में प्रवर्तन के पश्चात् आगामी शरद पूर्णिमा, 21 अक्टूबर 2002 को तपस्थली-प्रयाग तीर्थ पर निर्मित 'केवलज्ञान कल्याणक मंदिर' में स्थापित होकर युगों-युगों तक भगवान ऋषभदेव के वास्तविक समवसरण की याद दिलाता रहेगा।

जैनधर्म की प्राचीनता तथा भगवान ऋषभदेव के नाम एवं सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पूज्य माताजी ने राजधानी दिल्ली में विशाल 'चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान' आयोजित कराया, साथ ही 'भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती वर्ष' तथा 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष (प्रधानमंत्री श्री अटल जी द्वारा उद्घाटित) भी उनकी प्रेरणा द्वारा विविध धर्मप्रभावना के कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुए। आस्था चैनल एवं जैन टी.वी द्वारा पूज्य माताजी के 'तीर्थंकर जीवन दर्शन (सचित्र)' एवं अन्य विषयों पर प्रभावक प्रवचन लम्बे समय तक प्रसारित किये गये एवं किये जा रहे हैं। पूज्य माताजी की प्रेरणा से स्थापित 'अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला संगठन' अपनी सैकड़ों ईकाइयों द्वारा दिगम्बर जैन समाज की नारी शक्ति को सृजनात्मक कार्यों हेतु संगठित किये हुए है।

इसके अतिरिक्त कितने ही अन्य धर्मप्रभावना के कार्य इन 50 वर्षों में पूज्य माताजी ने सम्पन्न किये हैं जिनका यहाँ लेखन तो संभव नहीं है, किन्तु आज पूरा समाज उनके कार्यकलापों से परिचित होकर उन्हें कर्मठता की मूर्ति के रूप में पहचानता है।

13. संघर्ष विजेत्री–

पूज्य माताजी ने प्रारंभ से अपना प्रमुख लक्ष्य बनाया- प्रत्येक कार्य आगमानुकूल ही करना। पुनः उन कार्यों के निष्पादन में जो भी विघ्न आते हैं, उन्हें बहुत ही शांतिपूर्वक झेलकर पूरी तन्मयता के साथ उस कार्य को परिपूर्ण करना उनकी विशेषता रही है। उनका पूरा जीवन आर्ष परम्परा का संरक्षण करते हुए अपने मूलगुणों में बाधा न आने देकर जिनधर्म की अधिकाधिक प्रभावना के साथ व्यतीत हुआ है। किसी भी संस्था, तीर्थ, चंदे आदि की दानराशि को अपनी संघ व्यवस्था में समाहित न करने का उनका नियम है। 50 वर्षों से इस नियम का पालन करते हुए अपने कर्तव्य पथ पर वे अडिग हैं। यही कारण है कि उन्हें लम्बी-लम्बी यात्राएं कराने में अपना कर्तव्यपालन करने वाले संघपति श्रावक भी अपना सौभाग्य समझते हैं।

14. अमृतमय हों वर्ष तुम्हारे –

जिनकी दीर्घकालिक तपस्या के वर्षों की गिनती जानकर अनेक आचार्य, मुनि, आर्यिकाएँ इत्यादि भी इस बात को कहते हुए गौरव का अनुभव करते हैं कि आज जितनी मेरी उम्र भी नहीं है उससे अधिक तो पूज्य माताजी की दीक्षा आयु है, अर्थात् 18 वर्ष की उम्र से त्याग मार्ग पर जिन्होंने कदम रखा, उन्होंने अपनी जन्मतिथि-शरदपूर्णिमा को भी त्याग से सार्थक कर लिया। यही कारण है कि 21 अक्टूबर 2002 की शरदपूर्णिमा 'स्वर्णिम शरद पूर्णिमा' बनकर आई जब आपने अपने त्यागमयी जीवन के 50 वर्ष पूर्ण किये। पुनः सौभाग्य उदित हुआ सदियों से पूज्य भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) का, जहाँ वर्ष 2003 में पूज्य माताजी (ससंघ) के स्वर्णिम (51वाँ) चातुर्मास के अंतर्गत उनका 70वाँ जन्मजयंती दिवस 8 से 10 अक्टूबर तक ''कुण्डलपुर महोत्सव'' के मध्य मनाया जा रहा है। पर्यटन विभाग-बिहार सरकार एवं कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ''कुण्डलपुर महोत्सव'' की इस ऐतिहासिक श्रृंखला का शुभारंभ पूज्य माताजी के विराट व्यक्तित्व का ही प्रतिबिम्ब है।

ऐसी चतुर्मखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के चरणों में भावभीनी विनयांजलि है तथा भगवान जिनेन्द्र से यही प्रार्थना है कि उनके इस पवित्र त्यागमयी जीवन का हमें अमृत महोत्सव भी मनाने का लाभ प्राप्त हो तथा आपके द्वारा इसी प्रकार से नया-नया साहित्य जनता को प्राप्त होता रहे, यही मंगलकामना है।

महोत्सव की मार्गदर्शिका

परमपूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का परिचय

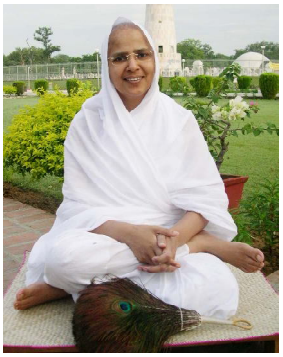

-ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

भारतवर्ष की इस ''रत्नगर्भा'' पृथ्वी ने चेतन व अचेतन अनेक रत्नों का समूह पूरे राष्ट्र को ही नहीं वरन् पूरे विश्व को प्रदान किया है जिसमें अचेतन रत्न सोना, चांदी, हीरा, पन्ना आदिक हैं तथा चेतन रत्नों में हमारे महापुरुष आते हैं जिनके व्यक्तित्व से भारत का मस्तक सदैव विश्व के सम्मुख गर्व से ऊँचा रहा है। उन सन्त एवं साध्वियों की अविरल प्रवाहमान धारा में जहाँ जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्मुख सम्पूर्ण विश्व नतमस्तक है वहीं उनके पथचिन्हों का अनुसरण करने वाली उनकी शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का नाम वर्तमान जगत में जनमानस से अछूता नहीं है।

परमपूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का जन्म पूर्वी उत्तरप्रदेश के बाराबंकी जिले के टिकैतनगर ग्राम में 18 मई 1958 को ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या के शुभ दिवस श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी की पवित्र कुक्षि से बारहवीं सन्तान के रूप में हुआ। हाईस्कूल तक लौकिक शिक्षा प्राप्त करने वाली 'कु. माधुरी' ने सन् 1971 में अजमेर (राज.) में परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के प्रथम दर्शन कर अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से पूज्य माताजी को आकर्षित कर मात्र 13 वर्ष की लघुवय में सुगंधदशमी के शुभ दिन आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया एवं कुटुम्बीजन को अचरज में डाल दिया। पुनः शास्त्री, विद्यावाचस्पति आदि उपाधि परीक्षाओं को उत्तीर्ण करके विरासत में प्राप्त संस्कारों के फलस्वरूप आपने अपनी वैराग्य भावना को वृद्धिंगत करते हुए सन् 1982 दिल्ली में 2 प्रतिमा एवं 1987 में सप्तमप्रतिमा के साथ गृहत्याग का नियम ले लिया और 18 वर्षों तक गुरुसेवा, वैयावृत्ति एवं जिनधर्म की महती प्रभावना करते हुए 13 अगस्त 1989, श्रावण शुक्ला ग्यारस तिथि में ऐतिहासिक भूमि हस्तिनापुर के जंबूद्वीप स्थल पर पूज्य माताजी से आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर 'माधुरी' से ''आर्यिका चंदनामती'' बन नारी जीवन का चरम लक्ष्य प्राप्त कर आप मोक्षपथ की पथिक बन गईं। ''यथा नाम तथा गुण'' की सूक्ति को चरितार्थ करते हुए जहाँ आपने कु. माधुरी के रूप मे जन-जन को अपनी मधुरता का रसास्वादन करवाया वहीं ''आर्यिका चंदनामती'' बनकर अपनी वाणी की चन्दनरूपी सुगंधि से ज्ञानामृत रूप शीतल औषधि सभी को प्रदान किया और वह अजस्र धारा आज भी प्रवाहमान है। आप आशु कवि हैं, क्षण भर में प्रसंगोपात्त, समयोचित, सरस एवं सरल रचना का निर्माण आपका विशेष गुण हैं जिसका उदाहरण आपके द्वारा लिखित अनेकों भजन, पूजन, चालीसा, आरती, विधान आदि रचनाएं हैं। मितभाषिणी पूज्य आर्यिका श्री वह ओजस्वी वक्ता हैं जिनके प्रवचन दिग्भ्रमित प्राणी को योग्य दिशा की पहचान कराकर जीवन में नई स्फूर्ति का संचार करते हैं। साहित्यिक क्षेत्र में जैनधर्म के विपुल एवं कठिन साहित्य को सरल एवं सौष्ठवपूर्ण भाषा शैली में जनमानस के समक्ष प्रस्तुत कर आपने साहित्य की जो सेवा की है उस हेतु यह क्षेत्र आपका चिरऋणी रहेगा। गद्य एवं पद्य में हुई अनेक रचनाओं में समयसार गाथाओं एवं कलश-काव्यों का पद्यानुवाद, ज्ञानज्योति की भारतयात्रा, अवध की अनमोल मणि, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, भगवान ऋषभदेव दशावतार आदि अनेक नाटक, नवग्रह शांति विधान,

भक्तामर विधान, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान आदि विधानों की रचना के साथ-साथ आप वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री द्वारा रचित षट्खण्डागम ग्रंथ की सिद्धान्तचिंतामणि टीका का हिन्दी अनुवाद कर रही हैं। दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा निकाली जाने वाली ''सम्यग्ज्ञान'' मासिक पत्रिका का लेखन व संयोजन भी कई वर्षों से आपके द्वारा हो रहा है। इन्हीं सब गुणों के कारण आपको आपकी गुरु पूज्य गणिनी माताजी ने सन् 1997 में 'चौबीस कल्पद्रुम विधान'' के विराट आयोजन के मध्य ''प्रज्ञाश्रमणी'' की उपाधि से अलंकृत किया है। 32 वर्षों से अनवरत गुरु के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित पूज्य आर्यिका श्री गुरुभक्ति का जीवन्त उदाहरण है। पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से आयोजित वह प्रत्येक कार्य चाहे वह राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन, महोत्सव हो, श्रीविहार रथ या ज्योति रथ का भारत भ्रमण हो या तीर्थ विकास हो, प्रत्येक कार्य में आपका अविस्मरणीय योगदान रहता है।

इस प्रकार नाना गुणों से समन्वित पूज्य श्री चंदनामती माताजी के पावन चरण कमलों में कोटिशः नमन।

स्वाध्याय हेतु ग्रन्थ मंगाएँ

1. महाश्रमण महावीर **2. भगवान महावीर देशना**

3. भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर विचार मंजूषा

1. दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर द्वारा पण्डितप्रवर सुमेरचंद जी दिवाकर द्वारा लिखित ''महाश्रमण महावीर'' ग्रंथ का पुनर्प्रकाशन किया गया है। दिगम्बर जैन मान्यतानुसार भगवान महावीर के जीवन का सर्वांगीण वर्णन इस ग्रंथ की विशेषता है। (मूल्य-100 रुपये मात्र)

2. पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''भगवान महावीर 2600वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष'' के उपलक्ष्य में विरचित भगवान महावीर देशना ग्रंथ में भगवान महावीर की दिव्यध्वनि द्वारा प्रतिपादित मोक्षमार्ग का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। स्वाध्याय के अमूल्य ग्रंथ ''भगवान महावीर देशना'' के द्वारा शासनपति भगवान महावीर की दिव्यध्वनि का रसास्वादन अवश्य करें। (मूल्य-150 रुपये मात्र)

3. भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से संबंधित महत्वपूर्ण लेखों से समन्वित '' भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर विचार मंजूषा'' पुस्तक विशेषरूप से पठनीय है। जन्मभूमियों के तथ्यों को समझने हेतु मंजूषा के समान इस पुस्तिका के माध्यम से जन्मभूमि कुण्डलपुर के विषय में आगमसम्मत जानकारी प्राप्त करें। (मूल्य-50 रुपये मात्र)

उपरोक्त ग्रंथों को मंगाकर स्वाध्याय करके दिगम्बर मान्यतानुसार भगवान महावीर एवं जैनधर्म संबंधी प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करें।

नोट **–उपरोक्त ग्रन्थ 50 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध हैं। वी.पी. द्वारा ग्रंथ भेजने की सुविधा है। पोस्टेज खर्च–अलग**

पता–व्यवस्थापक, वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला

पो.–जंबूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404, फोन नं.-(01233) 280184

महोत्सव के निर्देशक

पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज का परिचय

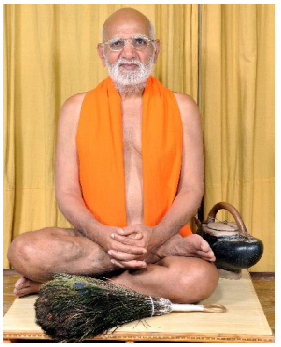

-ब्र. कु. चंद्रिका जैन (संघस्थ)

जिस प्रकार कुशल जौहरी सैकड़ों काँच के टुकड़ों में छिपे असली हीरे की परख एक नजर में कर लेता है उसी प्रकार परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सन् 1967 में एक हीरे के सदृश सुयोग्य शिष्य को परखा जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को गुरु के प्रति समर्पित कर दिया। वे हैं क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर महाराज।

ईसवी सन् 1940 में पश्चिम निमाड़ में सनावद (म.प्र.) के श्रेष्ठी श्री अमोलकचंद जी जैन, सर्राफ की धर्मपत्नी श्रीमती रूपाबाई की कुक्षि से ''मोतीचंद'' के रूप में आश्विन कृ.चतुर्दशी को आपका जन्म हुआ। प्रारंभ से ही धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत ''मोतीचंद'' का हर क्षण धर्म के लिए समर्पित था। अपने नगर में किसी भी गुरु संघ का सानिध्य प्राप्त होने पर इन्होंने उनकी खूब सेवा की और गुरु सेवा में अपना जीवन व्यतीत करने हेतु सन् 1958 में आपने स्वयमेव भगवान के समक्ष आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर लिया। पुनः आपके पुण्ययोग से पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, ससंघ का चातुर्मास सन् 1967 में सनावद नगरी में हो गया और पूज्य माताजी ने लोगों से उनके वैराग्यपूर्ण जीवन के बारे में जानकर उन्हें प्रेरणा प्रदान की अतः पूज्य माताजी की प्रबल प्रेरणा प्राप्त कर आप उनके संघस्थ शिष्य बन गए। चन्द्रगुप्त के समान गुरुआज्ञा पर अपना तन, मन, धन न्योछावर करने वाले ब्र. मोतीचंद जी ने सन् 1968 में पूज्य माताजी के मुखारविद से गोम्मटसार जीवकाण्ड, अष्टसहस्री आदि ग्रंथों का स्वाध्याय कर शास्त्री आदि विषयों की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1965 में माताजी के मस्तिष्क में प्रादुर्भूत हुई ''जम्बूद्वीप रचना'' के माध्यम से जैन भूगोल का दिग्दर्शन कराने हेतु सन् 1982 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा प्रवर्तित ''ज्ञानज्योति की भारत यात्रा'' में आपने उसके महामंत्री पद का निर्वाह करते हुए रथ का कुशलतापूर्वक प्रवर्तन कराया। धार्मिक अध्ययन एवं सतत ज्ञानाराधना करते हुए आपने जम्बूद्वीप रचना के निर्माण के पश्चात् अपनी दीक्षा की भावना प्रकट की और पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार आचार्य श्री विमलसागर महाराज से 8 मार्च सन् 1987 को क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण कर 'क्षुल्लक मोतीसागर' नाम प्राप्त किया और वास्तव में सागर के अमूल्य मोती बन गए। पूज्य माताजी द्वारा किये जाने वाले प्रत्येक कार्य,चाहे वह वृहत् हो या लघु उसकी सफलता हेतु आज भी आप गुरुआज्ञानुसार तत्पर रहते हैं। 2 अगस्त सन् 1987 को पूज्य माताजी ने दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में आपको ''पीठाधीश'' पद प्रदान किया। वर्तमान में अपने नियम,संयम का निरतिचार पालन करते हुए जम्बूद्वीप संस्थान को निर्देशन प्रदान करते हुए आप अनेक जीवों को सदाचार की ओर मोड़ रहे हैं। आपके अनेक गुणों को देखते हुए पूज्य माताजी ने सन् 1997 में 24 कल्पद्रुम विधान'' की पूर्णता पर आपको 'धर्मदिवाकर क्षुल्लकरत्न' की उपाधि से अलंकृत किया। सदैव कृतज्ञता एवं सहिष्णुता को जीवन में अपनाने की शिक्षा देने वाले ऐसे क्षुल्लकश्री के चरणों में शत-शत वंदन।

महोत्सव समिति के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.श्री रवीन्द्र कुमार जैन (भाई जी) कापरिचय

-श्री राकेश कुमार जैन, मेरठ
(मेलामंत्री-दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर)

रत्नों की खान से रत्न निकला करते हैं यह सत्य है। तभी तो माता मोहिनी की पवित्र कुक्षि से एक नहीं कई-कई रत्न निकले और समस्त संसार को अपनी दिव्य आभा से प्रकाशमान कर दिया। उन्हीं रत्नों में से एक रत्न हैं हमारे जाने-माने नवयुवकों के आदर्श भाई श्री रवीन्द्र जी। आप भी माता मोहिनी व पिता श्री छोटेलाल जी की नवमीं संतान हैं। आपका जन्म ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुतपंचमी) सन् 1940 में हुआ है। पिता श्री छोटेलाल जी एवं माता मोहिनी (आर्यिका रत्नमती) ने अपने चार पुत्रों में से एकमात्र इसी पुत्र को लखनऊ यूनिवर्सिटी से बी.ए. तक अध्ययन कराया था। स्नातक होने के बाद भी संसार के मोहचक्र में फंसना इन्होंने स्वीकार नहीं किया।

भोगों को भोगने के बाद उससे विरक्ति होना तो प्रायः देखा जाता है परन्तु जब पूर्ण यौवन और भोगोपभोग के समस्त साधन उपस्थित हों उस समय उन सबका परित्याग कर त्याग के कठिन मार्ग पर स्वयं को समर्पित कर देने वाले विरले ही लोग होते हैं। उसी श्रृंखला की एक कड़ी ब्र.रवीन्द्र जी भी हैं जिन्होंने सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज से आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण किया। उसके बाद से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में संस्थान का सम्पूर्ण दायित्व संभालते हुए पूज्य माताजी के पास सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण कर आप गृहविरत हैं।

जम्बूद्वीप स्थल आपकी विशेष कर्मभूमि है यहीं से अपनी धार्मिक क्रियाओं का पालन करते हुए आप संस्था संचालन, सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का सम्पादन, पूज्य माताजी द्वारा लिखित सैकड़ों ग्रंथों का सम्पादन आदि कर रहे हैं। आप जहाँ श्री दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, श्री अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री 1008 माँगीतुंगी बड़ी मूर्ति निर्माण कमेटी, तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थक्षेत्र कमेटी, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दि. जैन समिति आदि अनेकों तीर्थों के अध्यक्ष हैं वहीं आप अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद के भी अध्यक्षपद का भार संभाल रहे हैं। इतने अधिक कार्यों को करते हुए भी आपकी सबसे बड़ी विशेषता रही है कि कभी भी आपके चेहरे पर शिथिलता या क्रोध के भाव नहीं दिखते। हमेशा हंसता-मुस्कुराता, अपनी मधुरता बिखेरता आपका व्यक्तित्व आइने की तरह स्वच्छ है। तभी तो आपकी ओजस्वी वाणी, स्पष्टवादिता, कर्मठता, सहजता आदि गुणों के द्वारा भाई रवीन्द्र जी से आज सारा देश परिचित हो चुका है। पूज्य माताजी से प्राप्त संस्कारों के अनुसार संघर्ष झेलकर भी सत्य को उजागर करना आपकी पहचान बन गयी है। जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण धर्म, धर्मायतन एवं गुरुओं की सेवा में व्यतीत हुआ हो, समाज सेवा में व्यतीत हुआ हो ऐसे भाई जी के नाम से जाना जाने वाला व्यक्तित्व अखिल भारतवर्षीय शास्त्री परिषद द्वारा सन् 1992 **'कर्मयोगी'** की उपाधि से विभूषित किया गया जो कि नवयुवकों के लिए **'कर्मयोगी'** के रूप में सचमुच अनुकरणीय है।

सन् 1996 में मांगीतुंगी (महा.) में आयोजित पंचकल्याणक के सुअवसर पर आपको वीर सेवा दल की ओर से आपके कार्यकलापों का मूल्याकंन करते हुए **'धर्मसंरक्षणाचार्य'** की उपाधि से विभूषित किया गया। आप विद्वत्ता के साथ-साथ अपूर्व कार्यप्रणाली की क्षमता के धनी हैं। पूज्य माताजी के द्वारा संकल्पित प्रत्येक क्षेत्र में साहित्यिक, निर्माणात्मक, सृजनात्मक कार्यों को मूर्तरूप प्रदान करने वाले भाई श्री रवीन्द्र जी ने सन् 2000 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाणमहामहोत्सव वर्ष के अंतर्गत न्यूयार्क-अमेरिका (यू.एन.ओ.) में आयोजित **विश्वशांति शिखर सम्मेलन** में धर्माचार्य के रूप में सम्मिलित होकर जैनधर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार किया और आज भी जैनधर्म के प्रचार-प्रसार हेतु सतत संलग्न हैं। वास्तव में देखा जाये तो योग्य व्यक्ति की पहचान उसके कर्मठ व्यक्तित्व से होती है। भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में ''स्वामी जी'' के नाम से प्रसिद्ध कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी जैन समाज के क्षितिज पर चमकते अनोखे सितारे हैं। आपके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन के मंगल कामना है।

महोत्सव की आयोजक संस्था का परिचय

-श्री कैलाशचंद जैन, दिल्ली
(कोषाध्यक्ष-भ.म.ज.कुण्डलपुर दि. जैन समिति)

यूँ तो प्रत्येक नगर एवं ग्राम में प्रतिदिन शासनपति भगवान महावीर के नाम की अनुगूंज रहती ही है और कुण्डलपुर के महावीर के अतिशय से विख्यात ''चांदनपुर महावीर जी'' तीर्थ पर भक्तजन दीपक, छत्र, चंदोवा आदि के माध्यम से मनोकामना सिद्धि करते हैं किन्तु किसी का ध्यान महावीर की वास्तविक जन्मभूमि की ओर नहीं गया कि वहाँ एक दीपक भी जलता है या नहीं? अथवा कुण्डलपुर की पवित्र धूलि जगत के लिए कितनी कल्याणकारी है? अतएव भगवान महावीर का नाम पूजा, चालीसा, अरती आदि के द्वारा जिनमंदिरों तक सीमित होने लगा किन्तु आखिर तो कभी न कभी, कोई नकोई महापुरुष जिनशासन की रक्षा हेतु अग्रसर होता ही है। इसी क्रम में भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव का प्रसंग आया और जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा प्राप्त हुई फिर तो मानो कुण्डलपुर के विकास की स्वर्णिम घड़ियाँ ही आ गईं और सन् 2001 से यह विकास लक्ष्य शुरू करके सर्वप्रथम 24 मार्च 2002, को प्राचीन मंदिर परिसर में 36 फुट उत्तुंग कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास कियागया पुनः ''दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. के अंतर्गत ''भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति'' के नाम से एक कमेटी का गठन हुआ जिसके माध्यम से 15 अगस्त 2002, श्रावण शुक्ला सप्तमी को कुण्डलपुर में 2 एकड़ जमीन (उत्तरमुखी) क्रय की गई, जहाँ 29 सितम्बर 2002 को पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ मंगल पदार्पण के अवसर पर ''भगवान महावीर मंदिर'' के शिलान्यासपूर्वक तीर्थ का विकासकार्य प्रारंभ हो गया।

पूर्व घोषित कार्यक्रमानुसार 7 फरवरी से 12 फरवरी 2002 तक कुण्डलपुर के इस नवविकसित तीर्थ ''नंद्यावर्त महल'' परिसर में धरती से 25 फुट की ऊँचाई पर निर्मित किए जा रहे जिनमंदिर में भगवान महावीर की अवगाहना प्रमाण 7 हाथ ऊँची (सवा दस फुट) खड्गासन श्वेत पाषाण में निर्मित अतिशयकारी प्रतिमा का ''पंचकल्याणक एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव'' संघ के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। तब से तीर्थ पर निरन्तर श्रद्धालुभक्तों एवं पर्यटकों के आवागमन का तांता लगा रहता है। वर्तमान में यहाँ पर 8 से 10 अक्टूबर 2003 तक ''कुण्डलपुर महोत्सव'' का भव्य आयोजन महोत्सव समिति एवं ''बिहार सरकार पर्यटन विभाग'' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। जिस संस्था के अंतर्गत इस उपसमिति का गठन किया गया प्रस्तुत है उसका संक्षिप्त परिचय–

जिस प्रकार किसी व्यक्ति की पहचान उसके कार्यकलापों से होती है, उसी प्रकार किसी संस्था की पहचान भी उसकी विकासशील गतिविधियों से होती है। देश में सरकारी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत संस्थाएं तो अनेक निर्मित होती रही हैं किन्तु उनमें से जिन संस्थाओं को सुयोग्य संचालकों का वरदहस्त प्राप्त हुआ उन्होंने कुछ करके समाज और देश का कल्याण किया तथा अन्य संस्थाएं पृथ्वी पर जन्में असंख्य प्राणियों की भाँति अपनी आयु पूर्ण कर अथवा अकाल में ही काल के गाल में समाहित हो गईं।

यहाँ आपको बीसवीं सदी की एक ऐसी दिगम्बर जैन संस्था से परिचित कराया जा रहा है जिसके सर्वतोमुखी कार्यकलापों के साथ-साथ उसकी कार्यप्रणाली का अनुसरण देशभर की सामाजिक संस्थाएं कर रही हैं। इस संस्था को आप यूँ तो संक्षिप्त रूप में ''जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर'' के नाम से जानते-पहचानते हैं किन्तु इस संस्था का पूरा नाम है-

''दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान''-जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

अंग्रेजी में इस संस्था का नाम इस प्रकार है –

"DIGAMBER JAIN INSTITUTE OF COSMOGRAPHIC RESEARCH"

JAMBOODWIP, HASTINAPUR (MEERUT) U.P.

देश-विदेश में 'जम्बूद्वीप' के लघु नाम से प्रसिद्ध उपर्युक्त संस्था दिगम्बर जैन समाज का पावर हाउस (POWER HOUSE) मानी जाती है।

नवम्बर सन् 1972 में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरामणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिल्ली में स्थापित की गई इस संस्था का वर्तमान में प्रधान कार्यालय जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से संचालित किया जाता है।

तीर्थंकर शांतिनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर के विकास से संस्था के कार्यकलापों का शुभारंभ –

संस्थान ने यद्यपि अपने जन्मकाल से ही साहित्य प्रकाशन का कार्य प्रारंभ कर दिया था क्योंकि इसके अंतर्गत स्थापित की गई "वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला" के द्वारा पूज्य गणिनी माताजी द्वारा रचित अष्टसहस्री, नियमसार, समयसार, इन्द्रध्वज विधान, कल्पद्रुम विधान, सर्वतोभद्र आदि लगभग 200 से अधिक ग्रंथों का लाखों की संख्या में प्रकाशन का प्रारम्भीकरण सन् 1972-73 से ही हो गया था। तथपि भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ के चार-चार कल्याणकों से पवित्र तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर में सन् 1974 से जैन भूगोल की शास्त्रीय रचना "जम्बूद्वीप" के निर्माण से इस संस्था की ख्याति देश के कोने-कोने तक फैली और आम जनता की नजरों से उपेक्षित हस्तिनापुर तीर्थ का नाम बच्चे-बच्चे के मुँह पर आया।

जम्बूद्वीप रचना का निर्माण एक अद्भुत कार्य –

हस्तिनापुर तीर्थ के प्राचीन मंदिर से 1 फर्लांग आगे नशिया मार्ग पर लगभग 40 एकड़ भूखण्ड के परिसर में जम्बूद्वीप रचना के साथ अनेक निर्माण तीर्थयात्रियों के लिए आकर्षण के साथ-साथ उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यटन विभाग ने जम्बूद्वीप के परिचय को अपने फोल्डर में प्रदर्शित करते हुए लिखा है-

.....has today blossomed into a man made heaven of unparallel superlatives and natural wonders.

300 फिट डॉयमीटर की गोलाकार परिधि में निर्मित इस जम्बूद्वीप रचना के बीचोंबीच में 93 फिट ऊँचा सुमेरुपर्वत है। जिसकी 136 सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर जाने पर जनता जहाँ आसपास की प्राकृतिक सुषमा देखकर स्वर्ग जैसे सुख का अनुभव करती है, वहीं नीचे अनेक मंदिरों के दर्शन करके परम प्रसन्नता का अनुभव करती है।

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर निम्न वंदनीय एवं दर्शनीय कृतियाँ हैं –

1. जम्बूद्वीप रचना 2. कमल मंदिर 3. त्रिमूर्ति मंदिर 4. ध्यान मंदिर 5. शांतिनाथ मंदिर 6. वासुपूज्य मंदिर 7. ॐ मंदिर 8. सहस्रकूट मंदिर 9. ऋषभदेव मंदिर 10. विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर 11. मध्यलोक अकृत्रिम रचना 12. ऐतिहासिक कैलाशपर्वत 13. ज्ञानमती कला मंदिर 14. जम्बूद्वीप पुस्तकालय 15. जम्बूद्वीप चिकित्सालय 16. गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ 17. वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला 18. णमोकार महामंत्र बैंक 19. कीर्तिस्तंभ 20. जम्बूद्वीप भोजनशाला 21. रत्नत्रय निलय।

इन पवित्र स्थलों के अतिरिक्त संस्थान के द्वारा संचालित किये जा रहे जम्बूद्वीप परिसर में आधुनिक आवासीय व्यवस्थानुसार संस्थान लगभग 200 कमरों (फ्लैट, कोठी आदि सहित) का निर्माण हो चुका है तथा आवश्यकतानुसार आगे भी फ्लैट, कोठियों के निर्माण की योजना है। इसी प्रकार साफ-सुथरे एवं शुद्ध "जम्बूद्वीप भोजनालय" में वहाँ ठहरने वाले यात्रियों के लिए निःशुल्क भोजन व्यवस्था है।

संस्थान के सक्रिय कार्यकर्ताओं द्वारा संचालित गतिविधियों में हस्तिनापुर में चल रहे निर्माणकार्यों के अतिरिक्त अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, राजधानी दिल्ली में चौबीस कल्पद्रुम विधानों का विराट आयोजन, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव, विश्वशांति महावीर विधान के 26 विधानों का महाआयोजन एवं वहाँ से प्रतिमाह छपने वाली सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका आदि अनेक कार्यकलाप उसकी सर्वतोमुखी प्रगति का परिचय कराते हैं।

प्रिय बन्धुओं! यहाँ अतिसंक्षेप में दर्शनीय स्थल जम्बूद्वीप रचना एवं यहाँ की गतिविधियों का परिचय प्रदान किया गया है, यहाँ का वास्तविक परिचय तो साक्षात् दर्शन से ही प्राप्त हो सकता है।

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के नंद्यावर्त महल परिसर में निर्मित हो रहे मंदिरों का संक्षिप्त परिचय

-अनिल कुमार जैन-दिल्ली (कमल मंदिर)
(महामंत्री)

इस युग के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ पर परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से इस तीर्थ का विकास द्रुतगति पर है। कुण्डलपुर के नवविकसित तीर्थ परिसर का नाम भगवान महावीर के जन्मस्थान ''नंद्यावर्त महल'' के नाम से ''नंद्यावर्त महल'' रखा गया है। इस परिसर में निर्मित हो रहे मंदिरों का परिचय इस प्रकार है–

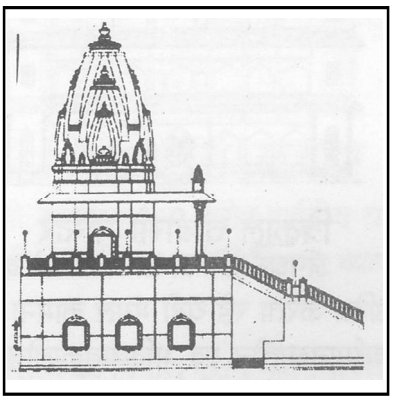

1. भगवान महावीर जिनमंदिर–तीर्थ का प्रमुख आकर्षण भगवान महावीर का मूलनायक मंदिर है। जो नीचे से ऊपर (शिखर) तक 72 फुट ऊँचाई वाला बन रहा है। इसमें जमीन से 25 फुट की ऊँचाई पर बने मंदिर के अंदर भगवान महावीर की चमत्कारिक खड्गासन प्रतिमा विराजमान हैं।

उत्तरमुखी इस मंदिर में जाने के लिए नीचे से ऊपर तक 40 सीढ़ियाँ बनी हैं और सामने सड़क से ही सभी जाति के लोग भगवान महावीर के दर्शन कर मनवांछित फल की प्राप्ति करते हैं।

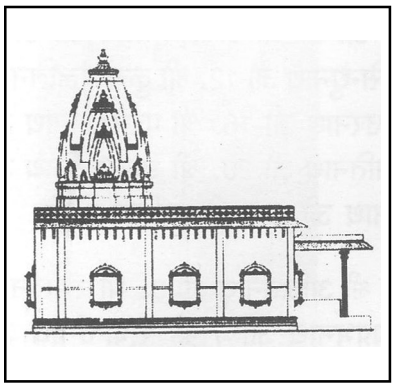

2. भगवान ऋषभदेव जिनमंदिर–महावीर स्वामी के इस जन्मभूमि तीर्थ पर महावीर मंदिर के दाईं ओर प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की सवा ग्यारह फुट पद्मासन प्रतिमा इस मंदिर में विराजमान हैं। इनके दर्शन-वंदन करने वालों को युग-युग तक जैनधर्म की प्राचीनता एवं भगवान महावीर से पूर्ववर्ती तीर्थंकरों के इतिहास का परिचय प्राप्त करने में यह जिनमंदिर निश्चित रूप से सहायक होगा।

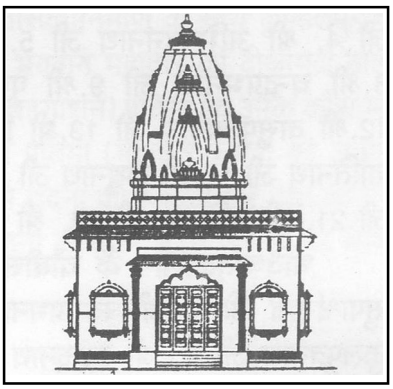

3. श्री नवग्रह शांति जिनमंदिर–भगवान महावीर मंदिर के बाईं ओर जैनधर्म के अनुसार भारत में प्रथम बार निर्मित किये जा रहे इस मंदिर में नवग्रहों की शांति को करने वाले नव तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाएं अलग-अलग कमलों पर विराजमान की जा रही हैं। शनि, मंगल, गुरु आदि ग्रहों के निवारण हेतु नर-नारी इन भगवन्तों की पूजा-अर्चना करेंगे। श्री नवग्रहशांति जिनमंदिर में विराजमान होने वाली जिनप्रतिमाएं

इस प्रकार हैं–1. सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु भगवान 2.सोमग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभु भगवान 3.मंगलग्रहारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्य भगवान 4.बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथ भगवान 5.गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीर भगवान 6.शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतनाथ भगवान 7.शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतनाथ भगवान 8.राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथ भगवान 9.केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथ भगवान

4. त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर– भारत की धरती पर जन्में अनंत तीर्थंकरों में से भूतकाल के चौबीस, वर्तमानकाल के चौबीस एवं भविष्यत् काल के चौबीस इस प्रकार त्रिकाल चौबीसी के 72 भगवन्तों से समन्वित यह त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर तीन मंजिल ऊँचा बन रहा है।

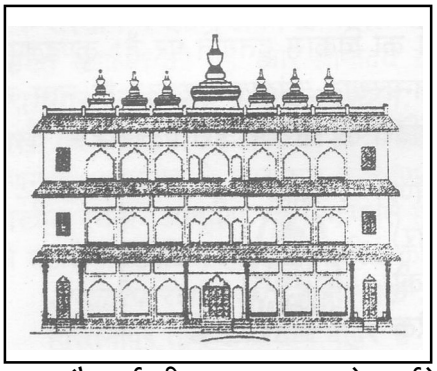

इसकी पहली मंजिल में भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर, दूसरी मंजिल में वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकर एवं सबसे ऊपर तीसरी मंजिल पर भविष्यत्कालीन चौबीसों भगवन्तों की प्रतिमाएं विराजमान होंगी। इन सभी प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हो चुकी है।

जैनधर्म की शाश्वत सत्ता को दर्शाने वाला यह जिनमंदिर महावीर की जन्मभूमि से धर्मसूर्य को सदैव उदित करता रहे यही मंगल कामना है। त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर में विराजमान होने वाली भूतकालीन, वर्तमानकालीन एवं भविष्यत्कालीन जिनप्रतिमाओं के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं-

भूतकाल के चौबीस तीर्थंकर–1. श्री निर्वाणनाथ जी 2. श्री सागरनाथ जी 3. श्रीमहासाधुनाथ जी 4. श्री विमलप्रभनाथ जी 5. श्री श्रीधरनाथ जी 6. श्री सुदत्तनाथ जी 7. श्री अमलप्रभनाथ जी 8.श्री उद्धारनाथ जी 9. श्री अंगिरनाथ जी 10. श्री सन्मतिनाथ जी 11. श्री सिन्धुनाथ जी 12. श्री कुसुमांजलिनाथ जी 13. श्री शिवगणनाथ जी 14. श्री उत्साहनाथ जी 15. श्री ज्ञानेश्वरनाथ जी 16. श्री परमेश्वरनाथ जी 17. श्री विमलेश्वरनाथ जी 18. श्री यशोधरनाथ जी 19. श्री कृष्णमतिनाथ जी 20. श्री ज्ञानमतिनाथ जी 21.श्री शुद्धमतिनाथ जी 22. श्री भद्रनाथ जी 23. श्री अतिक्रान्तनाथ जी 24. श्री शांतिनाथ जी

वर्तमानकालीन के चौबीस तीर्थंकर–1. श्री ऋषभदेव जी 2. श्री अजितनाथ जी 3. श्री संभवनाथ जी 4. श्री अभिनंदननाथ जी 5.श्री सुमतिनाथ जी 6. श्री पद्मप्रभनाथ जी 7.श्री सुपार्श्वनाथ जी 8.श्री चन्द्रप्रभनाथ जी 9.श्री पुष्पदंतनाथ जी 10.श्री शीतलनाथ जी 11.श्री श्रेयांसनाथ जी 12.श्री वासुपूज्यनाथ जी 13.श्री विमलनाथ जी 14.श्री अनन्तनाथ जी 15. श्री धर्मनाथ जीं 16.श्री शांतिनाथ जी 17.श्री कुंथुनाथ जी 18. श्री अरहनाथ जी 19. श्री मल्लिनाथ जी 20.श्री मुनिसुव्रतनाथ जी 21. श्री नमिनाथ जी 22. श्री नेमिनाथ जी 23. श्री पार्श्वनाथ जी 24. श्री महावीरस्वामी जी

भविष्यत्कालीन के चौबीस तीर्थंकर–1. श्री महापद्मनाथ जी 2. श्री सुरदेवनाथ जी 3. श्री सुपार्श्वनाथ जी 4. श्री स्वयंप्रभनाथ जी 5. श्री सर्वात्मभूतनाथ जी 6. श्री देवपुत्रनाथ जी 7. श्री कुलपुत्रनाथ जी 8. श्री उदंकनाथ जी 9. श्री प्रोष्ठिलनाथ जी 10. श्री जयकीर्तिनाथ जी 11. श्री

मुनिसुव्रतनाथ जी 12. श्री अरनाथ जी 13. श्री निष्पापनाथ जी 14. श्री निष्कषायनाथ जी 15. श्री विपुलनाथ जी 16. श्री निर्मलनाथ जी 17. श्री चित्रगुप्तनाथ जी 18. श्री समाधिगुप्तनाथ जी 19. श्री स्वयंभूनाथ जी 20. श्री अनिवर्तकनाथ जी 21. श्री जयनाथ जी 22. श्री विमलनाथ जी 23. श्री देवपालनाथ जी 24. श्री अनंतवीर्यनाथ जी

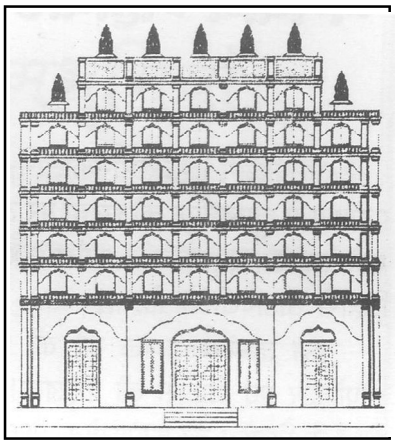

5. नंद्यावर्त महल एवं शांतिनाथ जिनालय– इन्द्रों द्वारा सजाए गए जिस सात मंजिले नंद्यावर्त महल में भगवान महावीर का जन्म हुआ था, उस नंद्यावर्त महल का निर्माण भी तीर्थ परिसर में हो रहा है। सात मंजिल के स्वरूप को दर्शाने वाले इस महल में भगवान महावीर का पालना एवं उनके जीवन से संबंधित प्राचीन कलाकृतियों का दिग्दर्शन कराया जाएगा।

महल के सबसे ऊपर वाली मंजिल में एक जिनालय रहेगा जिसमें भगवान शांतिनाथ, चन्द्रप्रभ एवं पार्श्वनाथ की भव्य प्रतिमाएं विराजमान होने वाली हैं। इसी महल के नाम पर इस नवविकसित तीर्थस्थल का नाम है-नंद्यावर्त महल। भगवान महावीर की जन्मस्थली कुण्डलपुर का विशेष दर्शनीय यह नंद्यावर्त महल युग-युग तक जन-जन का कल्याण करता हुआ महावीर स्वामी का यश दिग्दिगन्त व्यापी फैलाएगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

6. भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ–36 फुट ऊँचे इस कीर्तिस्तंभ का निर्माण पुराने मंदिर परिसर में कराया गया है। इसमें ऊपर दो मंजिलों के चैत्यालयों में भगवान महावीर की 8 प्रतिमाएं विराजमान हैं तथा नीचे की मंजिल में महावीर स्वामी का जीवनचरित्र उत्कीर्ण है। जिनधर्म की कीर्तिपताका को फहराने वाला यह कीर्तिस्तंभ सदैव कुण्डलपुर की यशवृद्धि करता रहेगा। इस प्राचीन मंदिर परिसर में भगवान महावीर की साढ़े चार फुट पद्मासन प्रतिमा विराजमान हैं तथा भगवान के गर्भकल्याणक के प्रतीक में एक चरण छतरी निर्मित है।

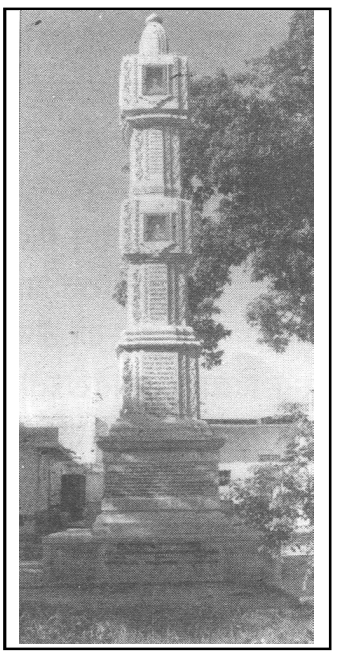

उपर्युक्त धार्मिक एवं ऐतिहासिक निर्माण के साथ कुण्डलपुर के इस नवविकसित तीर्थस्थल पर भगवान महावीर की दीक्षामुद्रा वाली (पिच्छी-कमण्डलु सहित 7 फुट खड्गासन) प्रतिमा एवं उनके कौशाम्बी में हुए ऐतिहासिक आहार वाली प्रतिमा (महावीर स्वामी की आहार लेते हुए एवं आहार देते हुए सती चंदना की) स्थापित हैं तथा अतिथि भवन (दो मंजिली धर्मशाला), पानी की टंकी, तीर्थ परिसर का मुख्य द्वार आदि निर्माणाधीन हैं।

महावीर जन्मभूमि से प्रवर्तित
भगवान महावीर ज्योति रथ की संक्षिप्त रूपरेखा

–विजय कुमार जैन (कानपुर)
संयोजक

जैनशासन के वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकरों में से प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की तीर्थंकर परम्परा में कुण्डलपुर की धरती पर जन्में अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव का उद्घाटन 6 अप्रैल 2001 चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को राजधानी दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने किया।

इस जन्मकल्याणक वर्ष की प्रमुख विशेषता रही-महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) के जीर्णोद्धार एवं विकास की प्रमुखता। जैनसमाज की सर्वोच्च साध्वी, जम्बूद्वीप रचना की सम्प्रेरिका, अनेक तीर्थों के विकास की प्रेरणास्रोत, 250 ग्रंथों की लेखिका पूज्य गणिनीप्रमुखश्री ज्ञानमती माताजी ने कुण्डलपुर विकास की प्रेरणा प्रदान करने के साथ न केवल इस वर्ष को कुण्डलपुर विकास के रूपमें चिरस्थायी बना दिया अपितु संघ सहित राजधानी दिल्ली से कुण्डलपुर नगरीमें पधारकर अपना सानिध्य प्रदान करने के साथ-साथ अनेक दिशानिर्देश प्रदान किये हैं जिससे सम्पूर्ण जैनसमाज में हर्ष की लहर व्याप्त है।

तीर्थ विकास के साथ-साथ पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से जिनमंदिरों में विराजमान होने वाली जिनप्रतिमाओं की जहां भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई वहीं अनेक वर्षों के बाद **महावीर जयंती** प्रथम बार भगवान महावीर की जन्मभूमि पर विशाल पैमाने पर मनाई गयी। इस महावीर जयंती के शुभ अवसर पर (15 अप्रैल 2003को) पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से महोत्सव समिति के पदाधिकारियों द्वारा सम्पूर्ण भारत में भ्रमण हेतु ''महावीरज्योति रथ'' का प्रवर्तन कुण्डलपुर तीर्थ से किया गया। विशेष उपहार के रूप में महावीर जयंती के शुभ अवसर पर प्राप्त इस ''महावीर ज्योति रथ' में धातु से निर्मित नंद्यावर्त महल का स्वर्णिम मॉडल स्थापित किया गया है जो कि कुण्डलपुर-नंद्यावर्त महल परिसर में निर्माणाधीन ''नंद्यावर्त महल'' की प्रतिकृति है। जिसके प्रथम खण्ड में भगवान महावीर का पालना एवं सातवें खण्ड में भगवान शांतिनाथ जिनालय है जिसमें श्रीजी की प्रतिष्ठित प्रतिमा विराजमान है। यह रथ देश के विविध प्रांतों में धर्मप्रभावना पूर्वक भ्रमण करता हुआ जन-जन को जैनागम के वास्तविक ज्ञान से आलोकित कर रहा है। जहाँ-जहाँ यह ज्योति अपनी दिव्य प्रभा बिखेरती हुई पहुँचती है वहाँ-वहाँ भगवान महावीर के सर्वोदयी सिद्धान्तों से परिचित होने के साथ-साथ जनमानस जन्मभूमि कुण्डलपुर की पवित्रता को भी आत्मसात कर लेता है। इस ज्योतिरथ का प्रमुख उद्देश्य है-जैनधर्म के सर्वोदयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार,संस्कृति की सुरक्षा, भ्रान्त इतिहास को संशोधित कर सत्य तथ्य बताने की भावना, विश्वशांति की कामना, साम्प्रदायिक सौहार्द एवं व्यसनमुक्ति की भावना,भगवान महावीर के विराट व्यक्तित्व से परिचित कराना तथा उनकी उपेक्षित जन्मभूमि को विकसित करना। इन सभी महत्वपूर्ण एवं समसामयिक उद्देश्यों को लेकर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ से निकली यह ''महावीर ज्योति''अपने उद्देश्यों में पूर्ण सफलता प्राप्त कर 2600 वर्षों के लुप्तप्राय इतिहास को पुनर्जीवित करे यही मंगल कामना है।

वर्तमान कालीन चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों की १६ जन्मभूमियाँ

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

1. **अयोध्या** – 5 तीर्थंकर–श्री ऋषभदेव, श्री अजितनाथ, श्री अभिनंदननाथ, श्री सुमतिनाथ, श्री अनंतनाथ भगवान
2. **श्रावस्ती** – श्री संभवनाथ भगवान
3. **कौशाम्बी** – श्री पद्मप्रभु भगवान
4. **वाराणसी** – श्री सुपार्श्वनाथ, श्री पार्श्वनाथ भगवान
5. **चन्द्रपुरी** – श्री चन्द्रप्रभु भगवान
6. **काकन्दी** – श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
7. **भद्रिकापुरी** – श्री शीतलनाथ भगवान
8. **सिंहपुरी** – श्री श्रेयांसनाथ भगवान
9. **चम्पापुरी** – श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
10. **कम्पिलपुरी** – श्री विमलनाथ भगवान
11. **रत्नपुरी** – श्री धर्मनाथ भगवान
12. **हस्तिनापुर** – 3 तीर्थंकर–श्री शांतिनाथ, श्री कुन्थुनाथ, श्री अरनाथ भगवान
13. **मिथिलापुरी** – श्री मल्लिनाथ, श्री नमिनाथ भगवान
14. **राजगृही** – श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
15. **शौरीपुर** – श्री नेमिनाथ भगवान
16. **कुण्डलपुर** – श्री महावीर भगवान